सत्यमेव जयते

# अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय,
भारत सरकार,
नई दिल्ली

अस्सी घाट वाराणसी

पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित भारत पर्व : एक झलकी

वर्ष 2 अंक 6 अक्तूबर–दिसम्बर, 2016

सत्यमेव जयते

# अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

# अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका)


- संरक्षक : **विनोद जुत्शी, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : **राम कर्ण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- संपादन एवं प्रबंधन : **मोहन सिंह, कंसल्टैंट, पर्यटन मंत्रालय**
- अन्य सहयोगी : **राज कुमार, राम बाबू**


**पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।**

**कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :**

संपादक,
**अतुल्य भारत**
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
दाराशुकोह मार्ग, नई दिल्ली – 110011
ई–मेल– **editor-atulyabharat@gmail.com**
दूरभाष 011–23015594, 23793858



**निःशुल्क वितरण के लिए**

**डॉलफिन प्रिन्टोग्राफिक्स**
झण्डेवालां एक्स्टेंशन,
नई दिल्ली से मुद्रित
011–23593541–42

# विषय वस्तु


| क्र.सं. | लेख | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| | प्रधान संपादक की कलम से | | v |
| 1. | नवरतनगढ़ | कप्तान प्राण रंजन प्रसाद | 1 |
| 2. | ग्रामीण पर्यटन | कृष्ण गोपाल दुबे | 7 |
| 3. | जय जवान–जय किसान | भूपाल सिंह | 17 |
| 4. | दिल्ली की रौनक : चांदनी चौक | ओम प्रकाश मीना | 20 |
| 5. | छोले–भठूरे | अनीता सच्चर | 28 |
| 6. | संगीत से कीजिए इलाज | मोहन सिंह | 32 |
| 7. | मुक्तेश्वर | विनीत सोनी | 37 |
| 8. | परमार्थ की भूमि नैमिषारण्य' | डॉ. राजा राम | 41 |
| 9. | पर्यटन क्रांति ..... मंथन जरूरी है। | संदीपन संकृत्यायन | 48 |
| 10. | राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 | | 52 |
| 11. | हिंदी के बढते कदम – आज | मंजिता | 57 |
| 12. | इश्क–ए–दिल्ली | सपना भाटिया | 58 |
| 13. | 350 वॉ प्रकाश पर्व–बिहार पर्यटन | मुर्तजा कमाल | 59 |
| 14. | ई–वॉलेट– मेरा मोबाइल, मेरा बैंक, मेरा बटुआ | अश्वनी कुमार | 61 |
| 15. | याद रखना ... (कविता) | उरूज जैदी | 64 |
| 16. | तकसीम ... (कविता) | राजीव कुमार पाहवा | 65 |
| 17. | तूफान ... (कविता) | पंकज कुमार सिंह | 66 |
| 18. | डॉ. बालामुरली कृष्ण | | 67 |
| 19. | जय ललिता | | 69 |
| 20. | रामराज्य में हंसना मना था | देवदत्त पटनायक | 70 |
| 21. | भाषा का आतंक 1 | प्रस्तुति : बिमल डे | 71 |
| 22. | भाषा का आतंक 2 | प्रस्तुति : हेमंत मिश्रा | 72 |
| 23. | जीवन में सफलता पाने के लिए विशेष बातें | स्वप्निल भरंबे | 73 |
| 24. | सेवा–मूर्ति बेटी : एन्ना वांग | प्रस्तुति : राम बाबू | 74 |
| 25. | सुखद यात्रा के मूलमंत्र | कु. गरिमा | 77 |
| 26. | श्री जगन्नाथ मंदिर | राकेश कुमार | 80 |
| 27. | शुभ कामनाएं | | 84 |
| 28. | पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक सचित्र गतिविधियां | | 85 |

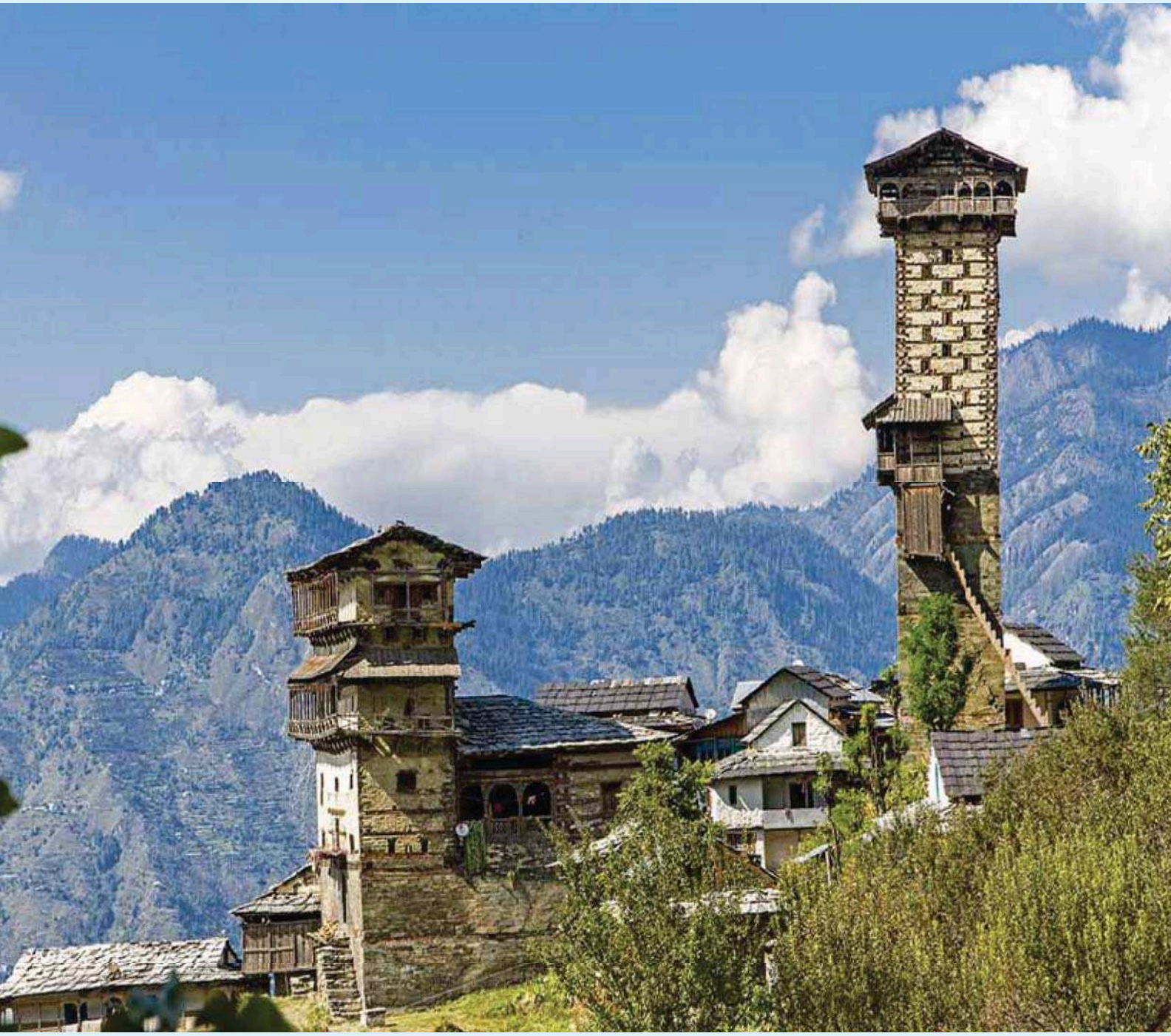

चेनी कोठी बंजर घाटी, हिमाचल प्रदेश

**परामर्शदाता व प्रधान संपादक**
**राम कर्ण, आई.ई.एस**
**आर्थिक सलाहकार**
**पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**

## प्रधान संपादक की कलम से...

पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका ''अतुल्य भारत'' का छठा प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका का निरंतर प्रकाशन करने के लिए माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डा. महेश शर्मा जी की निरंतर प्रेरणा और प्रोत्साहन बहुत ही सराहनीय है।

इस पत्रिका के अंक में सभी मानकों को ध्यान में रखते हुए रोचक सामग्री संकलित की गई है। झारखंड में पुरातत्व अवशेषों को देखने के लिए कप्तान प्राण रंजन प्रसाद का आलेख, ''नवरतनगढ़'', ग्रामीण पर्यटन से देश में रोजगार के अवसरों के साथ–साथ पर्यटकों को शान्तिपूर्ण आरामदायक पर्यटन पर श्री कृष्ण गोपाल दुबे का सूचनाप्रद लेख ''ग्रामीण पर्यटन'', मोहन सिंह का अनूठा और लाभकारी लेख ''संगीत से कीजिए इलाज'' धार्मिक आस्था के पर्यटन पर डॉ. राजा राम का आलेख ''परमार्थ की भूमि–नैमिषारण्य'', संदीपन संकृत्यायन का विचारोत्तेजक लेख ''पर्यटन क्रांति.....मंथन जरूरी है'', नगदी विहीन भुगतान पर अश्वनी कुमार का लेख ''ई–वॉलेट–मेरा मोबाइल, मेरा हक मेरा बटुआ'', कु. मंजिता का आलेख, ''हिंदी के बढ़ते कदम'', ''राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976'', सपना भाटिया के संस्मरण ''इश्क–ए–दिल्ली'', 350वें प्रकाश पर्व पर'' मुर्तजा कमाल की रिपोर्ट के साथ कविताओं तथा अन्य रोचक सामग्री का समावेश किया गया है।

माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा जी भारतीय पर्यटन को नवीन उचाईयों पर ले जाने के लिए निरंतर प्रेरणा एवं मार्गदर्शन कर रहे हैं तथा भारतीय पर्यटन के विकास के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। उनके अथक प्रयासों से कैलेंडर वर्ष 2016 में पिछले वर्ष की तुलना में भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन में कुल 10.7% की वृद्धि हुई। कैलेंडर वर्ष 2016 में विदेशी पर्यटकों का कुल आगमन 8889784 रहा। जबकि वर्ष 2015 में यह 8027133 था। अक्तूबर–दिसम्बर, 2016 की त्रैमासिक अवधि के दौरान कुल विदेशी पर्यटकों का 2682343 आगमन हुआ जो कि वर्ष 2015 की इसी अवधि के दौरान विदेशी पर्यटकों के आगमन में कुल 11.2% प्रतिशत वृद्धि है।

कैलेंडर वर्ष 2016 के दौरान कुल 155650 करोड़ रूपये की विदेशी मुद्रा का अर्जन हुआ जो वर्ष 2015 में प्राप्त 135193 करोड़ रूपए की विदेशी मुद्रा से 15.1% अधिक है। अक्तूबर–दिसम्बर, 2016 की त्रैमासिक अवधि के दौरान कुल 43582 करोड़ रूपए की विदेशी मुद्रा आय प्राप्त हुई जो कि वर्ष 2015 की इसी अवधि के दौरान 37350 करोड़ रूपए की विदेशी मुद्रा के अर्जन से कुल 16.7% की वृद्धि है।

कैलेंडर वर्ष 2016 के दौरान ई–पर्यटक वीजा के अंतर्गत कुल 1079696 विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ जो वर्ष 2015 के दौरान कुल 445300 विदेशी पर्यटकों के आगमन से 142.2% की वृद्धि दर्शाता है।

कैलेंडर वर्ष 2016 के दौरान पर्यटन मंत्रालय में देश और विदेश में पर्यटन के विकास के लिए कई संवर्धनात्मक कार्य, विभिन्न भारतपर्यटन कार्यालयों के माध्यम से पर्यटन के विविध उत्पादों और गंतव्यों के विकास के लिए प्रयास किए गए तथा वैश्विक पर्यटन बाजार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय यात्रा मेलों व प्रदर्शनियों में भाग लिया।

कैलेंडर वर्ष 2016 के दौरान हिंदी प्रचार व प्रसार के लिए कई कदम उठाए गए। 15 अप्रैल 2016 को मुम्बई में हिंदी सलाहकार समिति की बैठक का माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा जी की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। वर्ष के दौरान विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया गया जिनमें मंत्रालय में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने से संबंधित उपायों पर विचार किया गया तथा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में कार्मिकों को आ रही समस्याओं का निराकरण करने के उपाए किए गए। मंत्रालय में दिनांक 1 सितम्बर, 2016 से 15 सितम्बर, 2016 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया तथा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। वर्ष के दौरान मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण किया गया।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए किए गए सहयोग के लिए मंत्रालय के सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों का धन्यवाद करता हूं तथा सभी लेखकों एवं रचनकारों को उत्कृष्ट कृतियां भेज कर इस कार्य को सफल बनाने के लिए बधाई देता हूं। मेरा सबसे अनुरोध है कि आप सभी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपना सहयोग देते रहेंगे।

मैं आशा करता हूं कि पत्रिका का यह अंक आपको पंसद आएगा तथा आप अपने विचारों एवं प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराते रहेंगे।

राम कर्ण

**(राम कर्ण)**

# नागवंशियों का राज्य : नवरतनगढ़

– कप्तान प्राण रंजन प्रसाद

कुछ समय पूर्व नवरत्न गढ़ किले के पास हिन्दी स्कूल का भवन बन रहा था। स्कूल बनाने के लिए नींव काटी जा रही थी। इसी बीच एक जगह खुदाई में एक बड़ा सा छेद हो गया, मजदूरों ने झांक कर देखा तो एक लंबी सुरंग है। जब वह छेद बड़ा हुआ तो उसके नीचे घर दिखाई दिया। एक युवक को उसके अंदर दाखिल कराया गया तो देखा उसमें कमरे बने हुए हैं, तीन तरफ से दरवाजे हैं। कई जगह सांकलें लगी हुई है। इसको देखकर खुदाई रोक दी गयी और पुरातत्व विभाग से संपर्क किया गया है।

पुरातत्व विभाग के अधिकारियों के साथ पर्यटन विभाग की टीम ने भी नवरत्न गढ़ का दौरा किया और यहां के ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी हासिल की। टीम के दौरे के बाद नवरत्न गढ़ को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होने से सिसई वासियों की उम्मीद जगने लगी है। सिसई नवरत्न गढ़ का एक एतिहासिक स्थल है। यह कई एतिहासिक धरोहरों को समेटे हुए है। एतिहासिक धरोहरों को संरक्षित और विकसित करना पर्यटन विभाग का मुख्य उद्देश्य है। नवरत्न गढ़ को संरक्षित स्थल घोषित कर एक दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। पर्यटकों की सुविधा के लिए भवन आदि भी बनाए जाएंगे। राज्य सरकार नवरत्न गढ़ के विकास के लिए डीपीआर तैयार करा रही है। इस किले में वास्तु कला का बेजोड़ समावेश है जो मुगल स्थापत्य से प्रभावित है। इस किले को पर्यटक स्थल का दर्जा मिलने से क्षेत्र यहां का विकास होगा।

किले के खुदाई के बाद इतिहास में एक नया पन्ना जुड़ जायेगा। उसे देखने के लिए लोग कौतूहल वश वहां जा रहे हैं। नवरतनगढ़ के प्राचीन स्थल पर्यटकों के लिए एक बहुत ही उपयुक्त मनोरम जगह है। परंतु अभी तक पर्यटन की अच्छी सुविधाओं का कोई विकास नहीं किया जा सका है।

नवरतनगढ़ प्राचीन स्थल को विश्वस्तरीय पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकास करने हेतु चहुंमुखी सुविधाओं वाली विस्तृत परियोजना रिपोर्ट, गैर सरकारी संगठन ''हेरिटेज झारखण्ड'' के सलाहकार कप्तान प्राण रंजन प्रसाद की देखरेख में तैयार की गई है। इसमें पर्यटकों के मनोरंजन हेतु अनेक गतिविधियों का समावेश है। झारखण्ड सरकार इस पर गंभीरता से विचार कर रही है और शीघ्र ही विकास कार्य प्रारंभ होगा।

झारखंड राज्य के गुमला ज़िले में नागवंशियों का राज्य नवरतनगढ़ या दोईसा गढ़ के नाम से मशहूर प्राचीन स्थल रांची–गुमला रोड पर सिसई इलाके के निकट रांची शहर के पश्चिम में लगभग 73 किमी की दूरी पर स्थित है। यह स्थान गुमला शहर के पूरब में करीब 32 किमी की दूरी पर है। यह प्राचीन स्थल काले पत्थर वाली पहाड़ियों से घिरे हुए एक विशाल क्षेत्र, लगभग 25 से 28 एकड़ में फैला हुआ है, जिसमें एक किला और अन्य कई प्राचीन संरचनाएं हैं।

## ऐतिहासिक धरोहर :

पहले नागवंशी शासक फणी मुकुट राय 64 ईस्वी में पैदा हुए थे। वह सुतिअम्बे के पार्थ राजा माद्र मुन्डा के दत्तक पुत्र थे। यह कहा जाता है जब फणी मुकुट राय एक नवजात शिशु के रूप में एक तालाब के पास पाए गए थे, तब एक चौड़े फ़ण वाला नाग (कोबरा) उनकी रक्षा कर रहा था। शायद यही कारण है कि उन्हें और उनके उत्तराधिकारियों को नागवंशी बुलाया गया। फणी मुकुट राय ने 83 ईस्वी से 162 ईस्वी तक शासन किया।

नागवंशियों ने भारत के छोटानागपुर पठार में करीब दो हजार साल से अधिक समय तक शासन किया। प्रथम शताब्दी से लेकर 1951 ई0 तक, जब जमींदारी प्रथा समाप्त की गई थी। इस वजह से नागवंशियों को दुनिया में सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले शीर्ष राजवंशों बुल्गारिया के दुलो कबीले, जापान के शाही घराने तथा कोरिया के हांगकोंग राजवंश के बराबरी का सम्मान प्राप्त है।

मुगल काल में ''अकबरनामा'' में छोटानागपुर के नागवंशियों के क्षेत्र का झारखंड के जंगल राज्य के रूप में वर्णन किया गया है। हीरे के लिए प्रसिद्ध यह स्थान मुगल काल के दौरान झारखंड क्षेत्र में कोखरा नाम से भी जाना जाता रहा है। अकबर को उसके एक विद्रोही अफगान सरदार जुनैद कर्रानी के छोटानागपुर में आश्रय लेने के बारे में सूचित किया गया था। इसके अलावा, सम्राट को इस क्षेत्र में हीरे पाए जाने की भी जानकारी प्राप्त हुई। नतीजतन, अकबर ने शाहबाज खान को कोखरा पर आक्रमण करने का आदेश दिया, जो उस समय नागवंशी राजाओं का राज्य था तथा छोटानागपुर उनकी राजधानी थी। उस समय राजा मधु सिंह, कोखरा में 42 वें नागवंशी राजा के रूप में सत्तारूढ़ थे। फलस्वरूप कोखरा, अकबर की सेनाओं के मातहत आ गया और मुगलों को देय वार्षिक राजस्व के रूप में छह हजार रुपये की राशि सुनिश्चित की गई। अकबर के शासनकाल में आने के पहले तक छोटानागपुर पर नागवंशियों का स्वतंत्र आधिपत्य था।

जहाँगीर के शासनकाल के समय, नागवंशी राजा दुरजान साल छोटानागपुर में सत्तारूढ़ थे। उन्होंनें सम्राट अकबर द्वारा तय वार्षिक राजस्व का भुगतान करने से इनकार कर दिया। तब जहांगीर ने बिहार के गवर्नर इब्राहिम खान को कोखरा पर हमला करने का आदेश दिया। आक्रमण के पीछे एक और कारण था संख नदी के इलाके में हीरा उपलब्ध होना और हीरों की बहुतायत के कारण छोटानागपुर को हीरा–नागपुर के रूप में और हीरे के पारखी राजा दुरजान साल को हीरा राजा के रूप में जाना जाता था। छोटानागपुर के राजा को वश में करने और मूल्यवान हीरे प्राप्त करने के लिए, जहांगीर ने छोटानागपुर पर आक्रमण करने का फैसला किया। इस आक्रमण का विवरण जहाँगीर के संस्मरणों ''तुज्क–ए–जहाँगीरी'' में उल्लिखित हैं। सम्राट से आदेश मिलने पर सन 1615 ई. में इब्राहिम खान ने कोखरा के खिलाफ मार्च किया। उसने अपने गाइड की मदद से नागवंशी क्षेत्रों में आसानी से प्रवेश किया और नागवंशी राजा को उनके परिवार के सदस्यों के साथ एक गुफा से बंधक बना लिया और सभी हीरे जो दुरजान साल एवं उसके परिवार के पास थे, उनपर कब्जा कर लिया। इसके अलावा चौबीस हाथी भी इब्राहिम खान के कब्जे में आए। इसके बाद वहाँ से कब्जे में प्राप्त हीरे को शाही दरबार में भेज दिया गया। इब्राहिम खान को दुरजान साल ने अपनी हार और गिरफ्तारी के बाद फिरौती में एक करोड़ रुपये मूल्य के रत्नों

और सोने तथा चांदी की पेशकश की, लेकिन इब्राहिम खान ने उन्हें नहीं छोड़ा और उसे एक बंदी के रूप में पटना ले गया। वहाँ से उन्हें शाही अदालत में भेजा गया और बाद में ग्वालियर के किले में कैद कर रखा गया।

राजा दुरजान साल बारह वर्षों तक कारावास में रहे, अंत में, वही हीरे जो उनके दुर्भाग्य के कारण बने थे, वही उनके रिहाई के कारण भी बने। हुआ यूँ कि किसी जगह से, दो बहुत बड़े हीरे सम्राट जहांगीर की अदालत में लाए गए। सम्राट के मन में उनकी वास्तविकता जानने की उत्सुकता जागी।

जब सम्राट का कोई भी मंत्री हीरे की सही जानकारी देने में सक्षम नहीं हुआ तब हीरा राजा को क़ैद से शाही दरबार में लाया गया। जब दोनों उसके सामने लाए गए तो तब उन्होंने बिना किसी झिझक के नकली वाले की ओर इशारा किया। इसकी पुष्टि के लिए उन्होंने दो मेंढ़ों के सींग पर दोनों हीरों को बंधवाया और उन्हें एक दूसरे से लड़ाया गया। लड़ाई के परिणामस्वरूप नकली हीरा टूट गया लेकिन शुद्ध पर कोई खरोंच भी नहीं आई।

सम्राट जहाँगीर, दुरजान साल के इस कार्य से बहुत ही प्रभावित हुए और न केवल उन्हें कैद से मुक्त किया बल्कि उनकी सारी जब्त की हुई संपत्ति और राज्य भी वापस कर दिया। उदार दुरजान साल ने सम्राट जहाँगीर से जेल में अन्य कैद राजाओं की रिहाई की गुजारिश की, उनकी प्रार्थना को सम्राट ने मान लिया। दुरजान साल से खुश होकर जहांगीर ने उन्हें कोखरा राज्य के 'शाह' की उपाधि से सम्मानित किया। दुरजान साल का शासनकाल तेरह साल तक चला। सन 1639 या 1640 ई. में उनकी मृत्यु हुई थी।

प्राचीन विरासत संरचनायें (भग्नावशेष), नवरतनगढ़

नागवंशी राजा दुरजान शाह का नवरत्न गढ़ किला एक बार फिर आकर्षण का केंद्र होगा। यह काम केंद्र व राज्य सरकार के पर्यटन विभाग के प्रयास से होगा।

नवरतगढ़ किला (भग्नावशेष) एवं सूखे तालाब क्षेत्र

**बावन बगीचा तिरपन तालाब** वाले नवरतन गढ़ को आस पास के लोग प्रमुखता से नवरतन गढ़, खुखरा या डोइसा के नाम से ही पुकारते हैं। ''आईने अकबरी'' तथा अन्य ऐतिहासिक ग्रंथो में इस इलाके को कोकराह, कुखरा तथा कुछ प्राचीनग्रंथों में अक्रखंड, कक्रखंड आदि के नाम से भी बतलाया गया है। नवरतन गढ़ से सम्बंधित कथा में यहाँ बावन बगीचे और तिरपन तालाब होने की बात भी कही गयी है। बगीचों में मुख्य रूप से आम और बेर के पेड़ लगे हुए थे। उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार यहाँ का निर्माण मुगलकालीन है तथा लगभग चार से पाँच सौ साल पुराना है। अगर इतना ही हो तब भी घनघोर जंगलों से भरे इस स्थान में इतने बगीचों और तालाबों का बना होना अपने आप में यह साबित करने के लिए काफी है कि हमारे पूर्वज हमसे कहीं ज्यादा आगे की सोचते थे।

## अनूठे वास्तुशिल्पों के अवशेष

सड़क से ही सामने बायीं ओर भाग्न्वाशेष दिख जाता है। यह कोई बहुत बड़ा निर्माण नहीं रहा होगा। लेकिन बहुत पुराने भवन का हिस्सा लगता है। यह भवन नौमंजिलों का था। लेकिन अब सिर्फ पाँच मंजिलें ही हैं। हर मंजिल में नौ बड़े–बड़े कमरे हैं और एक कमरे को सीढ़ियों के लिए प्रयोग में लाया लगता है। हर मंजिल की छत को लकड़ी कि मोटी बल्लियों पर रखा गया है। अनुमान है कि हर चौरस बल्ली कम से कम एक सवा फीट मोटी है। इस भग्नावशेष कि यह विशेषता दिखती है कि इसे आधुनिक भवनों कि शैली में तैयार करने कि कोशिश की गयी होगी। इसका प्लास्टर भी बिलकुल चिकना तथा कोणीय था। बाहर से ही यह नयी शैली का भवन लगता है। दीवारें काफी मोटी हैं जो शायद मौसम के प्रभावों से बचाने के लिए थी। ईंट, चूना आदि के

प्रयोग से बना यह नौ मंजिल भवन रहा होगा जिसमें प्रत्येक मंजिल पर नौ कमरे यानी कुल इक्यासी कमरे होंगे। नौ कि संख्या के कारण ही शायद इसे नौरतनगढ़ कहा गया होगा। कहा जाता है कि राजा के नवरतन यानि नौ मंत्री उसमें रहते थे, इसलिए भी शायद इसका नाम नौरतनगढ़ पड़ा। यह सारा निर्माण राजमहल के हिस्सों के रूप में ही गिना जा सकता था। मुख्य भवन के पास में ही मंदिर है जिस पर कैथी लिपि में एक लिखा गया है इससे अनुमान लगता है कि यह सारा निर्माण लगभग पांच सौ साल पुराना होगा। यहां के शिलालेख में भी राजा दुरजान साल के नाम का उल्लेख मिलता है। मंदिर की एक विशेषता है कि उसके फर्श, दीवारें, खम्भे और छत को साबुत पत्थरों से सिर्फ तराश कर बनाया गया है और उन्हें जोड़ने के लिए किसी तरह प्रकार के सीमेंट का उपयोग नहीं किया गया। इस अवशेष को देखने से लगता है कि यह शिव का मंदिर है।

इस भवन को पूरी तरह अनगढ़ पत्थरों से बनाया गया है। इसी रास्ते में एक बड़े सी चट्टान पर गणेश जी की प्रतिमा गढ़ी हुई मिलती है। चूंकि इस क्षेत्र में गणेश पूजा की परंपरा भी नहीं मिलती है। एक अनुमान है कि राजा दुरजन साल जब मुगलों की कैद से हीरे की पहचान करने के कारण छूटे होंगे और पहली बार उन्होंने रास्ते के राजे रजवाड़ों की शान शौकत वाले भवनों को देखा होगा तो यहाँ भी ऐसा ही निर्माण करने की सोची होगी। उधर से ही कारीगरों को लाया गया होगा। उनमें ही जो मराठी कारीगर होंगे उन्होने अपनी पूजा के लिए प्रतिमा गढ़ ली होगी। अलग अलग वास्तुशिल्पों को देख कर लगता है कि यहाँ नौ प्रकार के शिल्प बनाये गए होंगे इसलिए भर इसे नौरतनगढ़ कहा गया होगा।

काले पत्थर की चट्टान पर गणेश भगवान की नक्काशी, नवरतनगढ़

चूंकि दोसाईगढ़ में अभी ठहरने की कोई अच्छी व्यवस्था नहीं है अतः पर्यटकों को फिलहाल रांची में ही ठहरना पड़ेगा। रांची से सिसाई 65 किलोमीटर है और वहां से नवरतनगढ़ की दूरी आठ किलोमीटर है।

**बस द्वाराः** रांची से सिसाई के लिए साधारण बसें या फिर कार ले सकते हैं। लगभग अढाई–तीन घंटे का सफर तय करना होगा।

**हवाई जहाज द्वाराः** निकटतम हवाई अड्डा रांची है।

बावत बगीचा तिरपड़ तालाब को देख कर सोचना पड़ता है कि यह बात उन दिनों के लिए जितनी आकर्षक और चमत्कारी थी उससे भी कहीं ज्यादा आज की परिस्थितियों में प्रासंगिक हो जाती हैं। क्योंकि आज हम नवरतन गढ़ से कही ज्यादा बड़े बड़े निर्माण कर रहे हैं। प्रदूषण से अधिक परेशान और दुखी हो रहे हैं। देश में हरित क्षेत्र की मात्रा निरंतर घटती जा रही है और आबादी तेजी से बढ़ रही है– लेकिन न तो इतने तालाब बनाए गए हैं जो पानी की समस्या को दूर कर सकें और न ही बगीचे लगाने में प्रशासन की कोई रूचि है।

लेकिन एकदम से पिछडे समझे जानेवाले तथा जंगली इस इलाके के लोगों को आने वाले समय की कितनी जबरदस्त पहचान थी, उन लोगों ने सिर्फ कथनी ही नहीं, करनी में भी आगे जो कुछ कर दिया था अगर हम उससे थोडा भी प्रेरित हो सकें, तो यह युग के लिए ही नहीं, आने वाली पीढी के लिए किसी वरदान से काम नहीं होगा।

मुख्य सुरक्षा अधिकारी (सेवानिवृत)
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
जनपथ, नई दिल्ली

## भूल सुधार

पिछले अंक में भूलवश श्री बच्चन लाल, पर्यटक सूचना अधिकारी, श्रीमती अनिता कपूर, सहायक तथा श्री ओमपाल, लेखाकार, के नाम प्रकाशित हो गए। जो क्रमशः जून, 2017, जून, 2017 तथा दिसम्बर, 2017 में सेवा निवृत्त होंगे।

इस अशुद्धि के लिए खेद व्यक्त किया जाता है।

# ग्रामीण पर्यटन

– कृष्ण गोपाल दुबे

भारत के गांव हमेशा अपनी कला के माध्यम से जाने जाते है और हमारी ग्रामीण विरासत, कार्यपद्धति, कला एवं संस्कृति, लघु उद्योग, खुला वातावरण, प्राकृतिक सानिध्य, धार्मिक परम्पराएँ, सामाजिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ उपलब्ध हैं जो विदेशी तथा घरेलू पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं। पर्यटन का वह रूप जो कि ग्रामीण जीवन की कला, संस्कृति तथा परम्पराओं से सबंधित हो एवं वह आर्थिक व सामाजिक लाभ के साथ–साथ पर्यटक और स्थानीय लोगों के मध्य पर्यटन को बढ़ावा देने के पारस्परिक अनुभवों को संवाद के रूप में स्थापित करें इसी को हम ग्रामीण पर्यटन के नाम से जानते हैं।

ग्रामीण पर्यटन विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं और जीवन शैलियों के लोगों को एक दूसरे के करीब लाकर उनके जीवन में व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करेगा। इससे ग्रामीणों को न केवल रोजगार के अवसर मिलेंगे, बल्कि इससे खुद उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक मूल्यों का भी विकास होगा।

भारत देश ग्राम प्रधान अर्थव्यवस्था वाला देश है। भारत में 74 प्रतिशत जनसंख्या लगभग 7 लाख गांवों में बसती है, जो राष्ट्रीय आय में लगभग एक तिहाई योगदान देती है। भारतीय गाँवों में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं।

भारत में ग्रामीण पर्यटन अपने असली रूप में अपेक्षाकृत नया है। ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण करने पर यहां शहरी चमक–दमक तो नहीं पर शांति और सादगी का अनुपम संगम देखने को मिलता है। पिछले कुछ सालों में पर्यटकों का रुझान ग्रामीण पर्यटन की तरफ बढ़ा है और यही देखते हुए कई सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन केरल, हिमाचल प्रदेश, आँध्रप्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश जैसे राज्यों में इसकी संभावनाओं को तलाश रहे हैं और उसे सक्रिय रूप से क्रियान्वित करने का प्रयास कर रहे है। इस कड़ी में कुछ चुनिंदा गांवों को ग्रामीण पर्यटन की तर्ज पर बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है ताकि ग्रामीण पर्यटन द्वारा विदेशी व देशी पर्यटकों को गांवों की संस्कृति से जोड़ा जा सके।

ग्रामीण पर्यटन के द्वारा अब गांवों में आर्थिक उन्नति होने लगी है तथा अव गावों के भूले–बिसरे स्मारकों की भी खोज–खबर ली जाने लगी है। जो स्मारक तथा धर्मस्थल अभी तक उपेक्षित थे अब उनकी भी देख–रेख की जा रही है। ग्रामीण पर्यटन के द्वारा स्थानीय कलाओं को भी नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं। अनेक गांवों में जहाँ उच्च स्तर की शिल्प कलाएं गुरु–शिष्य परम्पराओं के अंतर्गत चली आ रही थी, जिनका अब तक उचित मूल्यांकन नहीं हो पाता था, ग्रामीण पर्यटन के द्वारा इन कलाओं को भी महत्व प्राप्त होने लगा है।

ग्रामीण पर्यटन का उचित कार्यान्वयन देश के लिए कई अर्थों में एक बेहतर विकल्प साबित हो सकता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय निवासियों के जीवन में बदलाव आयेगा अपितु निम्नलिखित तीन कारकों से उनका सामाजिक ढांचा और भी सुदृढ़ हो सकेगा जैसे कि:–

**(i) आर्थिक प्रभाव–**

ग्रामीण क्षेत्र में रोज़गार के अवसर उत्पन होंगे।

आय के स्तर में वृद्धि होगी।

अन्य वस्तुओं और सेवाओं की मांग में वृद्धि होगी।

सार्वजनिक सेवाओं में सुधार होगा।

सरकार के लिए राजस्व उत्पन्न होगा।

कृषि और अन्य ग्रामीण गतिविधियों का आधुनिकीकरण होगा।

स्थानीय छोटे व्यापारी लाभान्वित होंगे।

ग्रामीण को अपने बच्चों के लिए बेहतर भोजन और शिक्षा प्रदान करने में सक्षम होगा।

**(ii) पर्यावरणीय प्रभाव**

ग्रामीण लोगों के बेहतर जीवन के लिए समुचित साफ–सफाई, सड़क, बिजली, दूरसंचार आदि के साथ स्वस्थ वातावरण विकसित करने की सीख मिलेगी तथा साथ ही प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाए रखने और उसके रखरखाव में मदद मिलेगी।

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का महत्व उनकी समझ में आने लगेगा।

वे आधुनिक उपकरण और तकनीक का उपयोग करना सीखेंगे।

वे प्राकृतिक निवास, जैव–विविधता और ऐतिहासिक स्मारकों को संरक्षित करना सीखेंगे।

**(iii) सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव–**

ग्रामीण लोग अपनी परम्परा और आस्था का विभिन्न आधुनिक संस्कृति से समायोजन कर सकेंगे।

उनके क्षेत्र में शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार होगा।

उनके रहन–सहन में गुणवत्ता आयेगी।

सांस्कृतिक आदान–प्रदान संभव होगा। इससे वे मेलों और त्योहारों के माध्यम से एक दूसरे की संस्कृति से वाकिफ होंगे।

ग्रामीण लोगों के शहरी क्षेत्रों के लिए पलायन में कमी आयेगी।

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उत्पाद और हस्तशिल्प का बढ़ावा होगा और वे ग्राहकों के सीधे संपर्क में आयेंगे।

**यहाँ ग्रामीण भारत को समझने के लिए कुछ अनोखे पर्यटन स्थलों का चयन किया गया है।**

## 1. गुजरात का होद्का गाँव और कच्छ में सामुदायिक पर्यटन

कच्छ जैसे दुष्कर स्थल प्रसिद्ध रण के अलावा नमक के मरुस्थल के लिए मशहूर है। यहाँ की धरती दलदल और रेत से बनी है, जो अपने आप एक अनोखा वातावरण प्रदान करती है। यहां के ऊबड़–खाबड़ रास्ते से होकर पर्यटक वहाँ के कारीगरों की कारीगरी देखने के अलावा गाँव के वातावरण का भी अनुभव कर सकते हैं। दलदल में हज़ारों प्रजाति के पक्षियों को देखा जा सकता है। होद्का गाँव के मिट्टी की झोपड़ियाँ या टेंट में ठहरकर कर शाम–ए–सरहद (सूर्यास्त) का अनुभव बेमिसाल होता है।

होद्का गाँव में मिट्टी की झोपड़िया

## 2. हिमाचल का लाहौल और स्पिति

हिमाचल प्रदेश में स्थित लाहौल और स्पीति घाटी लेह और लद्दाख के समान ही मशहूर है। परन्तु अभी तक इसकी ओर किसी का ध्यान नहीं गया है। कुछ विदेशी पर्यटकों को छोड़कर, घरेलु पर्यटक बहुत कम तादाद में यहां आते हैं। यहाँ के लोग या तो तिब्बती हैं या फिर हिन्दू– आर्य के वंशज हैं, जिनकी जीवन–शैली मुख्यतः कृषि और हस्त–शिल्प पर आधारित है।

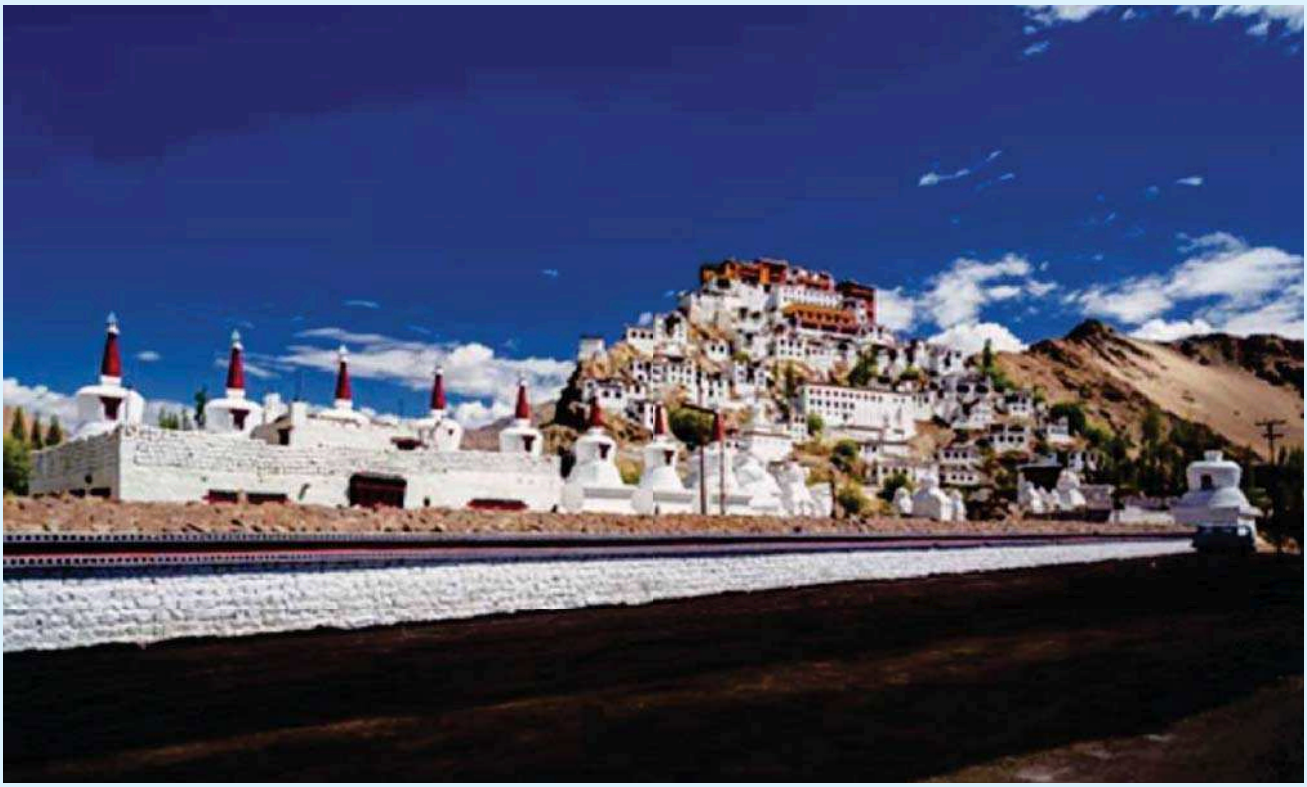

प्राचीन बौध मठों, याक की सवारी, गांवो का भ्रमण, दुर्गम रास्ते, मनमोहक दृश्य, होम–स्टे, और सामुदायिक सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसी कुछ गतिविधियाँ देश विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। लाहौल और स्पिति में भोटियों की विशिष्ट संस्कृति का अनुभव करने का सबसे अच्छा समय उनका सालाना वार्षिक उत्सव ''लोसर महोत्सव'' होता है, जो हर वर्ष अप्रैल में मनाया जाता है।

## 3. महाराष्ट्र के पुरुषवाड़ी, देलना और वरली गाँव

महाराष्ट्र के ये तीन जनजातीय गाँव पर्यटकों को कई अद्वितीय अनुभव से परिचय कराते हैं। यहाँ पर पर्यटक चावल की खेती के साथ साथ अन्य ग्रामीण गतिविधियों में भाग ले सकते हैं, जैसे कि आम के बागीचों की देखभाल, पशुपालन आदि। मुख्य आकर्षण पुरुषवाड़ी गाँव है जहाँ बारिश के मौसम के ठीक पहले रात को आसमान अरबो–खरबों जुगनुओं से जगमगा उठता है। इसे पुरुषवाड़ी जुगनू मेला कहते है। प्रति वर्ष सैकड़ों सैलानी इन जगहों पर आ कर इस रोमांच का अनुभव करते हैं।

पुरुषवाड़ी का जुगनू मेला

## 4. असम का जनजातीय जीवन

उत्तर पूर्वी असम के नागालैंड से लगे क्षेत्र की जनजातियों में तै–फाके लोगों के गाँव में सबसे बड़ा गाँव नम्फाके है, जो मूलतः थाईलैंड के निवासी हैं और वहाँ का ही रहन–सहन अपनाए हुए हैं। इन लोगों का हॉर्न–बिल त्यौहार बहुत ही मशहूर है, जो देशी–विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। इसके अलावा यहाँ 16 जनजातियों द्वारा विकसित ''झूम'' कृषि भी में भागीदारी करना एक अलौकिक अनुभव प्रदान करता है। वहीं माजुली, जो दुनिया का सबसे बड़ा जनसंख्या वाला नदी पर बना टापू है, अपनी हरियाली, प्राकृतिक सौन्दर्य और वैष्णव मठों के लिए पर्यटकों को बहुत लुभाता है। यहां घने पेड़ों के बीच बांस के बने घर, चिड़ियों का कलरव, स्थानीय नृत्य और संगीत पर्यटकों की पहली पसंद बनते जा रहें है।

## 5. म्हारो राजस्थान

राजस्थान के जयपुर में स्थित लक्ष्मण सागर अपने तरीके का एक अलग सा सुखद आनंद अनुभव कराता है। यहाँ पर पर्यटक ग्रामीणों के साथ देहाती बनकर बकरियां चराने, घुड़दौड़, ईंट बनाने, मिर्ची की खेती, रात में तारों का अवलोकन के साथ–साथ पतंग बाज़ी और अन्य ग्रामीण खेलों का अनुभव और आनंद ले सकते हैं। जोधपुर से थोड़ी दूर स्थित ओसियां गाँव के मंदिरों पर उकेरी गयी कला–कृतियों की वज़ह से इस गाँव को ''राजस्थान का खजुराहो'' भी कहा जाता है। यहाँ पर रेत के टीलों पर ऊँट की सवारी और स्थानीय लोगों के मनमोहक नृत्य, जो यहाँ का प्रमुख आकर्षण है, और संगीत की झलक हिन्दी तथा दूसरी कई फिल्मों में देखी जा

सकता है। विश्नोई समुदाय एक प्रामाणिक अनुभव प्रदान करता है। आकर्षक विश्नोई लोग प्रकृति से बहुत प्रेम करते हैं और उसके साथ सद्भाव में रहते हैं, इतना कि वे जंगली जानवरों को भी अपने घर में बसेरा देते हैं। बीकानेर में मृग अभ्यारण्य इनके गॉवों में ही है जहां हिरण इनके घरों में और आसपास रहते हैं। गॉवों के लोग ही इनकी देखभाल करते हैं। यहाँ पर बुनकरों के परिवार के साथ परंपरागत तरीके से ठहरने के साथ साथ स्वादिष्ट ग्रामीण भोजन मिलता है। इसके अलावा विश्नोई गांव में लोक नृत्य, ऊंट सफारी, गांव की यात्रा और जीप सफारी का आनंद उठाया जा सकता है।

## 6. यह मेरा पंजाब

पंजाब की भी अलग दुनिया है। कोई भी पर्यटक पीली सरसों के खेतों में घूम फिर सकता है, ट्रैक्टर पर घूम सकता है, मवेशियों को चराने के लिए ले जा सकता है या उन्हें खाना खिला सकता है, हरे–भरे खेतों में मक्के की रोटी और साग के साथ छांछ का लुत्फ उठा सकता है, लोकनृत्य भांगड़ा का मजा लेने के साथ स्थानीय शिल्प फुलकारी बनाते हुए देखने के अलावा ग्रामीण समुदाय और पंचायत से मिल सकता है।

पर्यटक कुश्ती, गिल्ली–डंडा, पतंगबाजी जैसे स्थानीय खेलों में भाग ले सकते हैं या उन्हें देख सकते हैं। चाहे उत्तेजना से भरपूर भांगड़ा नृत्य हो या फिर किला रायपुर में बैलगाड़ी की दौड़। पंजाब का ग्रामीण परिवेश अत्यंत ही रोमांचक पर्यटन होता है।

## 7. केरल का कन्नूर और कुम्बलंगी एकीकृत पर्यटन गाँव परियोजना

ये अपने छोटे–छोटे हरे–भरे पेड़ों से अच्छादित समुद्र तट, रहस्यपूर्ण मुखौटा पहने ''थेयाम रस्म'' और हथकरघा के लिए पर्यटकों का आकर्षण और जिज्ञासा का केंद्र बनते जा रहे हैं। इसके अलावा कुन्नूर का मदैपुरा गाँव अपने प्राकृतिक धरोहर के लिए मशहूर हैं। यहाँ के नयनाभिराम छोटे पहाड़ों पर करीब 300 किस्म के फूल, 30 किस्म की घास, कई मांसाहारी पौधे, दुर्लभ जड़ी–बूटियाँ, कई प्रकार की तितलियाँ और पक्षी पर्यटकों को उनके साथ कुछ समय बिताने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यहाँ पर गांववालों के साथ उनकी झोपड़ियों में रह कर पर्यटक फुर्सत के कुछ अविस्मरणीय पल बिता सकते हैं।

कुम्बलंगी एकीकृत पर्यटन गाँव परियोजना गाँव के पर्यटन और समुद्री गतिविधियों के लिए बनाया गया है, जिसका उद्देश्य कुम्बलंगी को एक आदर्श मछली पकड़ने वाले गाँव और पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जाना है। पर्यटक यहाँ की सैर कर मनोरम दृश्यों का आनंद लेते हैं और साथ ही साथ नौका सवारी का भी

अविस्मरणीय अनुभव का लुफ्त उठाते हैं। पर्यटक इस द्वीप पर की जाने वाली मत्स्य पालन, नारियल की जटा की कताई और अन्य कई समुद्री गतिविधियों के आनंद के साथ कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं।

## 8. मध्य प्रदेश का प्राणपुर और आमला

मध्य प्रदेश के महेश्वर में बेतवा नदी किनारे बसे प्राणपुर का चंदेरी हथकरघा विश्वविख्यात है, जहाँ छोटी–छोटी पहाड़ियाँ, घने जंगल, तालाब, नाले और झरने सब को अपनी और आकर्षित करते हैं। पर्यटकों को हथकरघे पर अपना हुनर दिखाने का अवसर मिलता है। इसके अलावा वे यहाँ की हस्त शिल्प और दस्तकारी, जैसे बुनाई, कुम्हारी, धातु शिल्प का भी अनुभव ले सकते हैं। महेश्वर में ही स्थित आमला गाँव एक विरासत धरोहर है, जिसने मध्य भारतीय सभ्यता और संस्कृति की वास्तविकता को संजोये रखा है। यहाँ पर्यटकों को ग्रामीण जीवन, रीति– रिवाज़, हस्त शिल्प, कृषि और मंदिरों का भरपूर अनुभव प्राप्त हो सकता है। यहाँ का 'माच मेला', 'तेजाजी मेला' और 'नवरात्रि दुर्गा' उत्सव बहुत ही आकर्षण का केंद्र है।

## 9. तमिलनाडू का पिचवरम वायुशिफ (मैनग्रोव) जंगल और तीर्थामलै गाँव

पिचवरम का जंगल दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा और घना वायुशिफ जंगल है, जो अपने साहसिक पर्यटन के लिए मशहूर हो रहा है। यहाँ स्थित छोटी–छोटी नदियाँ, पोखर और समुद्र के किनारों पर बसे छोटे–छोटे गाँव, और उन गांवों में बांस के बने छोटे–छोटे लकड़ी के घरों में रहकर प्रकृति का रूमानी अनुभव लिया जा सकता है। ग्रामीणों के साथ उनके नौकाओं में बैठकर मछली का शिकार करना रोमांच से कम नहीं होता है। यहाँ का ''विदयलविझा उत्सव'' (ऊषाकाल उत्सव) बहुत ही मशहूर है। धर्मापुरी का तीर्थामलै गाँव शान्ति और सुकून का प्रतीक है। यहाँ के प्राचीन मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए जाने जाते हैं। मंदिरों और धर्मशालाओं का यह गाँव आत्मचिंतन और वैराग्य का अनुपम स्थान है।

## 10. आंध्रप्रदेश का पुत्तूर

यह गाँव कृषि, वायुशिफ (मैनग्रोव) जंगल और रेशम व्यापार के लिए प्रसिद्ध है। सुन्दर–सुन्दर रंग–बिरंगे मिट्टी के घर, साफ़–सुथरा ग्रामीण परिवेश और साधारण जीवन अनुभव योग्य है। पर्यटकों को यहाँ हस्त शिल्प, रेशम उत्पादन और रेशम की साड़ी बनाने में अपने हाथ को आजमाने का अवसर प्राप्त होता है।

## 11. ओडिसा का पिपली और रघुराजपुर गाँव

ओडिसा के पुरी जिले में स्थित यह गाँव अपने कलात्मक क्रियाओं के लिए विख्यात है, जो इनके कपड़ों की कारीगरी में झलकता है। कपड़े पर पक्षियों, पौराणिक पात्रों, प्रकृति और सजावटी रूपांकनों आदि की कलात्मक कटाई एवं सिलाई और अन्य प्रकार की घरेलु सजावट में यहाँ के ग्रामीणों की प्रवीणता है। भार्गवी नदी किनारे स्थित रघुराजपुर के रंग–बिरंगे मिट्टी के घर अत्यंत सुन्दर दिखते हैं। दीवारों पर की गयी भित्ति–चित्र बाहरी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यहाँ दस्तकार कपड़ों पर की गयी धार्मिक और जनजातीय 'पत्ताचित्र कला' के अलावा केलों के पत्तों और लकड़ी पर नक्काशी, कुम्हारी और लकड़ी के खिलौने के लिए सुप्रसिद्ध हैं।

## 12. छत्तीसगढ़ का कवर्धा और चित्रकोट

छत्तीसगढ़ का कवर्धा गाँव में आदिम जनजाति– बैगा और गोंड का निवास है। पर्यटक घने जंगलों में बसे इन टोलों (गाँव) के देहाती माहौल का आनंद लेते हैं। वे इन जनजाति के लोगों के बीच रहकर इनकी सभ्यता, संस्कृति, परंपरा, रीति–रिवाज़, पहनावा, मनोरंजन के साधन, मेला आदि का अनुभव करते हैं। जंगलों पर निर्भर रहने वाले इन आदिवासियों के साथ कुछ पल बिताना सचमुच रोमांचकारी होता है। बस्तर के चित्रकोट में जनजातियों के हस्त शिल्प और लोक कला तथा बांस के बन्दूक से शिकार करने का तरीका देखने और समझने लायक है।

## 13. सिक्किम का लाचेन

बर्फ़ से ढके पहाड़ों के बीच बसे यह छोटे सा गाँव अपने अलौकिक सुन्दरता के लिए जाना जाता है। पतली–पतली जल–धाराओं के किनारे लम्बे–लम्बे देवदार के वृक्षों के बीच बसे पत्थर और लकड़ी के घर गाँव को अनुपम छटा प्रदान करते हैं। भोले–भाले और दयालु स्वभाव वाले ग्रामीण पर्यटकों को भगवान स्वरुप मानते हैं और अपन परम्परा और वेशभूषा से आकर्षित करते हैं। यहाँ के हरे–भरे दुर्गम पहाड़ों पर चढ़ना और नए रास्तों को खोजना बहुत ही रोमांचकारी होता है।

## 14. पश्चिम बंगाल का बल्लभगढ़ डांगा

कोलकता से 200 किलोमीटर दूर स्थित सोनाझुरी जंगल का यह गाँव संथाल आदिवासियों का क्षेत्र कहलाता है। यहाँ पर बने आदिवासियों के रंग–बिरंगे मिट्टी के घर देखने योग्य हैं। यह गाँव अपनी कला और हस्तशिल्प जैसे– बाटिक छपाई, बढ़ईगिरी, चमड़े और कालीन के काम के लिए जाना जाता है। यहाँ के आदिवासियों का हाट–बाज़ार, नृत्य और संगीत बहुत ही रोचक और लुभावना होता है।

## 15. उत्तराखंड का कलप, किर्शु और मलारी

उत्तराखंड के ये तीन गाँव अपने सुन्दर परिदृश्य के लिए पर्यटकों में मशहूर होते जा रहे हैं। दुर्गम पहाड़ों के बीच स्थित इन गाँवों में कुछ दिन बिताने का आनंद नैसर्गिक होता है। यहाँ के निवासी साधारण गड़रिये होते

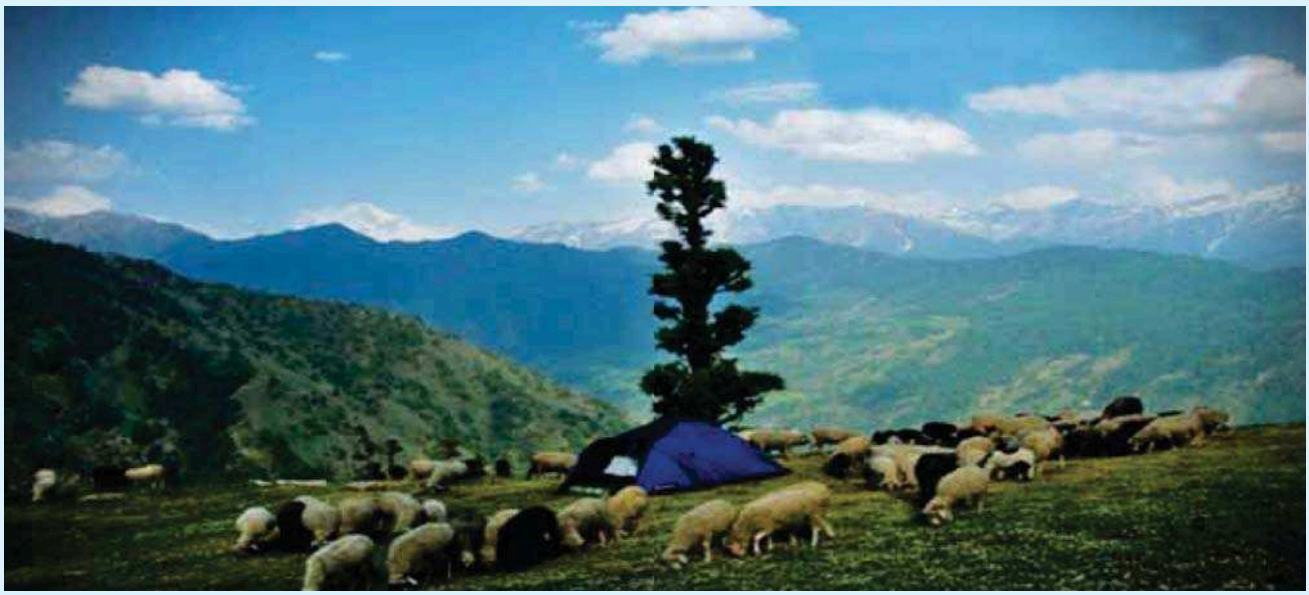

हैं जो पशुपालन करते हैं। स्वच्छ, सुकून और रोमांच की चाह वाले पर्यटक यहाँ कुछ समय बिता सकते हैं। यहाँ की काश्तकारी, रीति–रिवाज़ और परम्परा देखने योग्य है। यहाँ की संस्कृति अद्भुत है और पर्यटक 'छोलिया नृत्य' और मसकबीन का आनंद ले सकते हैं। गढ़वाल के कलप गाँव में सिर्फ पैदल या खच्चर द्वारा ही पहुँचा जा सकता है। पौड़ी जिले का किर्सू गाँव भी प्राकृतिक सौन्दर्य और सूर्योदय के लिए जाना जाता है। चमोली जिले का मलारी गाँव अपनी प्राकृतिक छटा और हिमालय दर्शन के लिए प्रसिद्ध है।

## 16. हरियाणा का म्हारा गाँव

हरियाणा में ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए फॉर्म हाउस टूरिज्म को विकसित करने की पहल की गई है। ''म्हारा गाँव'' नामक योजना के द्वारा पर्यटकों को हरियाणा की संस्कृति से जोड़ने की बेहतरीन कोशिश की जा रही है। सूरजकुंड में प्रत्येक वर्ष लगने वाला मेला बहुत संख्या में विदेशी पर्यटकों को ग्रामीण परिवेश की ओर आकर्षित कर रहा है। यहाँ सरकार द्वारा पर्यटकों को हरियाणा की संस्कृति से जोड़ने की बेहतरीन कोशिश की जा रही है। इसके द्वारा ग्रामीण आर्थिक विकास हो सकेगा जो गरीबी उन्मूलन का मुख्य स्रोत होगा।

पर्यटन विकास की संभावनाओं को ग्रामीण विकास के लिए एक रणनीति के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, इससे भारत के 7 लाख गाँव में रहने वाले 74% आबादी के लिए निश्चित रूप से उपयोगी होगा।

प्राचार्य
फूड क्राफ्ट इंस्टिट्यूट,
जबलपुर

# जय जवान-जय किसान

– भूपाल सिंह

लालबहादुर शास्त्री भारत के दूसरे प्रधानमन्त्री थे। वह 9 जून 1964 से 11 जनवरी 1966 को अपनी मृत्यु तक लगभग अठारह महीने भारत के प्रधान मन्त्री रहे। इस प्रमुख पद पर उनका कार्यकाल अद्वितीय रहा।

शास्त्री जी की सादगी का कोई कहां तक बखान करे, बताया जाता है कि एक बार उनके कुर्ते में छोटा छेद हो गया। उनके सचिव ने कहा कि कुर्ता सिलवाने के लिए दर्जी को बुलाया जाए। शास्त्री जी ने कि कुर्ता अभी बहुत दिन चलेगा, यह छेद तो ऊपर से बंडी पहनने से छुप जाता है।

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात शास्त्रीजी को उत्तर प्रदेश के संसदीय सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। गोविंद बल्लभ पंत के के मन्त्रिमण्डल में उन्हें पुलिस एवं परिवहन मन्त्रालय सौंपा गया। परिवहन मन्त्री के कार्यकाल में उन्होंने प्रथम बार महिला कण्डक्टर्स की नियुक्ति की थी। पुलिस मंत्री होने के बाद उन्होंने भीड़ को नियन्त्रण में रखने के लिये लाठी की जगह पानी की बौछार का प्रयोग प्रारम्भ कराया। 1951 में, जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में वह अखिल भारत काँग्रेस कमेटी के महासचिव नियुक्त किये गये। उन्होंने 1952, 1957 व 1962 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी को भारी बहुमत से जिताने के लिये बहुत परिश्रम किया।

जवाहरलाल नहेरू का उनके प्रधानमन्त्रीके कार्यकाल के दौरान 27, मई, 1964 को देहावसान हो जाने के बाद साफ सुथरी छवि के कारण शास्त्रीजी को 1964 में देश का प्रधानमन्त्री बनाया गया। उन्होंने 9 जून 1964 को भारत के प्रधान मन्त्री का पद भार ग्रहण किया।

2 अक्तूबर, 1904 को मुगल सराय (उत्तर प्रदेश) में मुंशी शारदा प्रसाद श्रीवास्तव के घर जन्मे, लाल बहादुर के परिवार में सबसे छोटा होने के कारण परिवार वाले उन्हें प्यार से नन्हें कहकर बुलाते थे। उनके पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे परंतु सब उन्हें मुंशीजी ही कहते थे। जब लाल बहादुर मात्र डेढ वर्ष के ही थे, पिता का निधन हो गया। उसकी माँ रामदुलारी अपने पिता हजारीलाल के घर मिर्ज़ापुर चली गयीं। कुछ समय बाद उसके नाना भी नहीं रहे। बिना पिता के बालक नन्हें की परवरिश करने में उसके मौसा रघुनाथ प्रसाद ने उसकी माँ का बहुत सहयोग किया। ननिहाल में रहते हुए उसने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद की शिक्षा हरिश्चन्द्र हाई स्कूल और काशी विद्यापीठ में हुई। काशी विद्यापीठ से संस्कृत भाषा में स्नातक स्तर तक की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् शास्त्री की उपाधि मिलने पर उन्होंने अपना जातिसूचक शब्द श्रीवास्तव हमेशा हमेशा के लिये हटा दिया और अपने नाम के आगे 'शास्त्री' लगा लिया। इसके पश्चात् शास्त्री शब्द लालबहादुर के नाम का पर्याय ही बन गया।

स्नातक स्तर तक की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वे भारत सेवक संघ से जुड़ गये और देश सेवा का व्रत लेते हुए यहीं से अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत की।

शास्त्री जी सच्चे गान्धीवादी थे जिन्होंने अपना सारा जीवन सादगी से बिताया और उसे गरीबों की सेवा में लगाया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों व आन्दोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही और उसके परिणामस्वरूप उन्हें कई बार जेलों में भी रहना पड़ा। स्वाधीनता संग्राम के जिन आन्दोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही उनमें 1921 का असहयोग आंदोलन, 1930 का दांडी मार्च तथा 1942 का का भारत छोड़ो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं।

शास्त्री जी के राजनैतिक मार्गदशर्कों में पुरुषोत्तमदास टंडन और पण्डित गोविंद बल्लभ पंत के अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे। सबसे पहले 1929 में इलाहाबाद आने के बाद उन्होंने टण्डनजी के साथ भारत सेवक संघ की इलाहाबाद इकाई के सचिव के रूप में काम करना शुरू किया। इलाहाबाद में रहते हुए ही नेहरूजी के साथ उनकी निकटता बढी। इसके बाद तो शास्त्री जी का कद निरन्तर बढता ही चला गया और एक के बाद एक सफलता की सीढियाँ चढते हुए वे नेहरू जी के मंत्रिमण्डल में गृहमन्त्री जैसे पद तक जा पहुँचे। इतना ही नहीं, नेहरू के निधन के पश्चात भारतवर्ष के प्रधानमन्त्री भी बने।

दूसरे विश्व युद्ध में इंग्लैण्ड को बुरी तरह उलझता देख जैसे ही नेताजी ने आजाद हिंद फौज को "दिल्ली चलो" का नारा दिया, गान्धी जी ने भी 8 अगस्त 1942 की रात में ही बम्बई से अँग्रेजों को "भारत छोड़ो" व भारतीयों को "करो या मरो" का आदेश जारी किया। उन्हें गिरफ्तार कर आगा पैलेस में रखा गया। 9 अगस्त 1942 के दिन शास्त्री जी ने इलाहाबाद पहुँचकर इस आन्दोलन के गान्धीवादी नारे को चतुराई पूर्वक "मरो नहीं, मारो!" में बदल दिया और अप्रत्याशित रूप से क्रान्ति की दावानल को पूरे देश में प्रचण्ड रूप दे दिया। पूरे ग्यारह दिन तक भूमिगत रहते हुए यह आन्दोलन चलाने के बाद 19 अगस्त 1942 को शास्त्री जी गिरफ्तार हो गये।

''मरो नहीं, मारो!'' का नारा लालबहादुर शास्त्री ने दिया जिसने क्रान्ति को पूरे देश में प्रचण्ड किया।

उनकी साफ सुथरी छवि के कारण ही उन्हें 1964 में देश का प्रधानमन्त्री बनाया गया। उन्होंने अपने प्रथम संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि उनकी शीर्ष प्राथमिकता खाद्यान्न मूल्यों को बढ़ने से रोकना है और वे ऐसा करने में सफल भी रहे। उनके क्रियाकलाप सैद्धान्तिक न होकर पूर्णतः व्यावहारिक और जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप थे। निष्पक्ष रूप से यदि देखा जाये तो शास्त्रीजी का शासन काल बेहद कठिन रहा। कहा जाता है कि एक ओर पूँजीपति देश पर हावी होना चाहते थे और दूसरी ओर दुश्मन देश हम पर आक्रमण करने की फिराक में थे। 1947 में हुए बटवारे के समय से ही भारत और पाकिस्तान के बीच कई मुद्दो पर तनातनी चल रही थी हालांकि जम्मू और कश्मीर का मुद्दा इसमे सबसे बड़ा था पर अन्य सीमा विवाद भी थे इनमे सबसे प्रमुख कच्छ का रण, जो कि एक बंजर इलाका है, के बटवारे पर था। 20 मार्च 1965 में पाकिस्तान के द्वारा जानबूझ कर कच्छ के रण में झडपें शुरू कर दी गयी। इससे तीन वर्ष पूर्व ही भारत चीन से युद्ध हार चुका था। पाकिस्तान ने कश्मीर सहित भारत का पंजाब जीतने/दबाने की सोच कर भारत पर आक्रमण कर दिया। 1965 में अचानक पाकिस्तान ने भारत पर सायं 7.30 बजे हवाई हमला कर दिया। परम्परानुसार राष्ट्रपति ने आपात बैठक बुला ली जिसमें तीनों रक्षा अंगों के प्रमुख व मन्त्रिमण्डल के सदस्य शामिल थे। संयोग से प्रधानमन्त्री उस बैठक में कुछ देर से पहुँचे। उनके आते ही विचार–विमर्श प्रारम्भ हुआ। तीनों प्रमुखों ने सारी वस्तुस्थिति समझाते हुए उनसे पूछाः "सर! क्या हुक्म है?' शास्त्रीजी ने एक वाक्य में तत्काल उत्तर दियाः "आप देश की रक्षा कीजिये और हमें बताइये कि हमें क्या करना है?''

शास्त्रीजी ने अप्रत्याशित रूप से हुए इस युद्ध में राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और पाकिस्तान को ऐसी करारी शिकस्त दी जिसकी कल्पना पाकिस्तान ने कभी सपने में भी नहीं की थी।

शास्त्रीजी ने इस युद्ध में राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और जय जवान–जय किसान का नारा दिया। इससे भारत की जनता का मनोबल बढ़ा और सारा देश एकजुट हो गया। इसकी कल्पना तो पाकिस्तान ने भी कभी सपने में नहीं की थी। इसे कश्मीर के दूसरे युद्ध के नाम से भी जाना जाता है। भारत और पाकिसतान के बीच जम्मू और कश्मीर राज्य पर अधिकार के लिये बँटवारे के समय से ही विवाद चल रहा है। 1948 में भारत–पाकिस्तान के बीच प्रथम युद्ध भी कश्मीर के लिये ही हुआ था। इस लड़ाई की शुरूआत पाकिस्तान ने अपने सैनिकों को घुसपैठियों के रूप मे भेज कर इस उम्मीद मे की थी कि कश्मीर की जनता भारत के खिलाफ विद्रोह कर देगी।

मुंबई में शास्त्रीजी की आदमकद प्रतिमा

इस अभियान का नाम पाकिस्तान ने युद्धभियान जिब्राल्टर रखा था। पांच महीने तक चलने वाले इस युद्ध मे दोनों पक्षों के हजारों लोग मारे गये। इस युद्ध का अंत संयुक्त राष्ट्र के द्वारा युद्ध विराम की घोषणा के साथ हुआ और ताशकंद मे दोनों पक्षों को समझौते के लिए बुलाया गया। उन्हें समझौता वार्ता के लिए रूस बुलवाया गया था जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। हमेशा उनके साथ जाने वाली उनकी पत्नी ललिता शास्त्री को बहला फुसलाकर इस बात के लिये मनाया गया कि वे शास्त्रीजी के साथ रूस न जायें और वे भी मान गयीं। अपनी इस भूल का श्रीमती ललिता शास्त्री को अंतिम समय तक पछतावा रहा।

आखिरकार रूस और अमरिका ने शास्त्री जी पर जोर डाला और जब समझौता वार्ता चली तो शास्त्री जी की एक ही जिद थी कि उन्हें बाकी सब शर्तें मंजूर हैं परन्तु जीती हुई जमीन पाकिस्तान को लौटाना हरगिज़ मंजूर नहीं। काफी जद्दोजहद के बाद शास्त्रीजी पर अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बनाकर ताशकन्द समझौते के दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करा लिये गये। उन्होंने यह कहते हुए हस्ताक्षर किये थे कि वे हस्ताक्षर जरूर कर रहे हैं पर यह जमीन कोई दूसरा प्रधान मंत्री ही लौटाएगा, वे नहीं। पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब ख़ान के साथ युद्धविराम के ताशकन्द समझौते पर हस्ताक्षर करनेके कुछ घण्टे बाद 11 जनवरी 1966 की रात में ही उनकी मृत्यु हो गयी। उनकी मृत्यु का कारण हार्ट अटैक बताया गया। यह आज तक रहस्य बना हुआ है कि क्या वाकई शास्त्रीजी की मौत हृदयाघात के कारण हुई थी? उनके परिवार सहित? आज भी अधिकतर लोगों का मत है कि शास्त्रीजी की मृत्यु हार्ट अटैक से नहीं हुई थी।

शास्त्री जी की अन्त्येष्टि पूरे राजकीय सम्मान के साथ यमुना किनारे की गयी और उस स्थल को विजय घाट नाम दिया गया।

शास्त्री जी को उनकी सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिये आज भी पूरा भारत श्रद्धापूर्वक याद करता है। उन्हें मरणोपरान्त वर्ष 1966 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

दिल्ली स्थित विजय घाट

ऐसे वीर योद्धा को शत शत प्रणाम!

अवर श्रेणी लिपिक,
पर्यटन मंत्रालय

दिल वालों का शहर

# दिल्ली की रौनक : चांदनी चौक

- ओम प्रकाश मीना

भारत में आजादी से पहले एक कहावत प्रसिद्ध थी, ''जिसने लाहौर नहीं देखा तो समझो जिंदगी में कुछ नहीं देखा''। आज हम यही बात दिल्ली के बारे में कह सकते हैं, ''जिसने दिल्ली में आकर चांदनी चौक नहीं देखा तो समझिए, जिंदगी में कुछ नहीं देखा।'' जी हां, दिल्ली की रौनक है चांदनी चौक। इसकी गिनती दिल्ली के बड़े बाज़ारों में की जाती है। विश्व के सबसे पुराने बाज़ारों में इसका एक महत्वपूर्ण स्थान है। दिल्ली आने वाले किसी भी व्यक्ति की यात्रा तब तक पूरी नहीं हो सकती जब तक वह चाँदनी चौक न जाए।

कहा जाता है कि मुग़ल बादशाह शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा ने स्वयं इसका डिजाइन बनाया था और 1648 में इसे शुरू कराया था। मुग़ल काल में यह प्रमुख व्यवसायिक केंद्र था। यहाँ तुर्की, चीन और हॉलैंड तक के व्यापारी व्यापार करने आते थे। यह बाज़ार आज एशिया का सबसे बड़ा थोक व्यापार का केन्द्र है। आज चाँदनी चौक भारत की राजधानी दिल्ली का एक आकर्षक पर्यटन स्थल है। यह बाज़ार जामा–मस्जिद से सटा हुआ है और थोक सामान की बिक्री के लिए इस बाज़ार में हमेशा रौनक लगी रहती है।

यहां खाने–पीने का आनंद लिया जा सकता है। यहाँ के मशहूर ''पराठे'', दही–भल्ले, चाट–पकौड़ी, जलेबी, फालूदा आइसक्रीम जो मन करे खाएं, और अपना शौक पूरा करें। यहाँ कपड़े के होलसेल के कई बाज़ार हैं।

चांदनी चौक में अनेक तरह का इलेक्ट्रॉनिक सामान, कैमरे, दवाएं आदि की सस्ते व वाजिब दामों में खरीददारी कर सकते हैं। यहीं निकट ही नई सड़क एवं चावड़ी बाज़ार भी है। आप यहां पर्यटन पूरा आनंद ले सकते हैं।

यमुना नदी के किनारे पर बसी दिल्ली को यदि भारत देश का दिल कहा जाए तो कोई गलती नहीं होगी। दिल्ली ने कई उतार चढ़ाव देखे हैं। दिल्ली को बसाने में मुगल शासकों का बड़ा योगदान रहा हैं। 15 वीं 17 वीं शताब्दी तक मुस्लिम शामकों के अधीन रही दिल्ली का आधुनिक स्वरुप अंग्रेज़ों की देन माना जाता है। भारत के स्वर्णिम इतिहास को समेटे महानगर दिल्ली हमेशा से ही देशी–विदेशी पर्यटकों को लुभाता रहा है।

तो आइए हम इस बाजार की सैर करने चलते हैं :

सबसे पहले है

## जैन मंदिर

लाल किले के सामने चांदनी चौंक में प्रवेश करते ही, दिल्ली का सबसे पुराना जैन मंदिर स्थित है। इसका निर्माण 1526 में हुआ था। इसकी इमारत लाल पत्थरों की बनी है। इसलिए यह लाल मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। सबसे प्रमुख मंदिर भगवान महावीर जी का है जो जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर थे। यहां जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की प्रतिमा भी स्थापित है। जैन धर्म के अनुयायियों के बीच यह स्थान बहुत लोकप्रिय है। यहां का शांत वातावरण लोगों को अपनी ओर खींचता है। शुरू में इस मंदिर का कोई शिखर नहीं था। बाद में स्वतंत्रता प्राप्ति उपरांत इस मंदिर का पुनरोद्धार कर शिखर बनाया गया है।

**पक्षी अस्पताल** जैन मंदिर के पीछे बने भवन में पक्षियों के इलाज की वह सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं, जो एक सामान्य अस्पताल में होनी चाहिए। दिल्ली के पहले एकमात्र धर्मार्थ पक्षी अस्पताल की स्थापना 1929 में लाला लच्छो मल गोटेवाला ने एक कमरे के मकान में की थी। अस्पताल के प्रबंधक सुनील जैन के मुताबिक पूरे साल हजारों पक्षी घायल होकर इस अस्पताल में आते हैं। लेकिन अगस्त के महीने में ही ज्यादातर मामले आते हैं। इसका कारण है पतंगबाजी और मांझा। घायल पक्षियों में ज्यादातर कबूतर होते हैं।

इसके अलावा दूसरे पक्षी और यहां तक कि घायल मोर भी इस अस्पताल में लाए जाते हैं। इन पक्षियों की मरहम पट्टी की जाती है और अस्पताल प्रशासन सबको जल्द से जल्द ठीक करने की कोशिश करता है। एकमात्र चेरिटेबल बर्ड हॉस्पिटल होने के नाते यहां पर डॉक्टरों की टीम हर तरह से पक्षियों की देखभाल तो कर रही है लेकिन अगर इसी तरह से मांझे और पतंग का ये खेल चलता रहा तो इन बेजुबानों की मौत का जिम्मेदार कौन होगा? अस्पताल प्रशासन ने भी सरकार से चाइनीज मांझे और पतंगबाजी पर रोक लगाने की मांग की है।

## गौरी शंकर मंदिर

गौरी शंकर मंदिर के बारे में कहा जाता है कि गौरी शंकर मंदिर का निर्माण एक मराठा सैनिक आपा गंगाधर, जो भगवान शिव के एक अनन्य भक्त थे, के द्वारा कराया गया था। गंगाधर एक बार लड़ाई में गंभीर रूप से घायल हो गए और जब जीवित रहने की संभावना नहीं थी। उन्होंने भगवान शिव से अपने जीवन दान की प्रार्थना की और प्रतिज्ञा की कि अपने प्राण बचते ही वह भगवान शिव का भव्य मंदिर का बनाएंगे। अत्यंत कठिन परिस्थितियों के बावजूद, आपा गंगाधर बच गये और बाद में उन्होंने इस खूबसूरत प्राचीन मंदिर का निर्माण कराया।

## लाजपत राय मार्किट

मंदिर के सामने है लाजपत राय मार्किट, यह मार्किट शुरू में रेडियो बाजार के रूप में बनी थी। उस समय रेडियो का काफी प्रचलन था। रेडियो का चलन कम होने से धीरे धीरे अब यहां बिजली के सामान के साथ–साथ रेडियो, टीवी टेलिफोन के पाट्र्स आदि का बहुत बड़ा और सस्ता बाजार बन गया है। अब इस मार्किट में कानून की किताबों के प्रकाशक और थोक में नमकीन के व्यापारी भी आ गए हैं। यहां भी आपको खान पान की अच्छी सुविधा मिलती है।



**पर्यटन के अभाव में कोई व्यक्ति पूर्ण शिक्षित नहीं कहा जा सकता।**
– **मांटेन** (पाश्चात्य जगत के प्रख्यात विचारक)

## भागीरथ पैलेस

इसके साथ ही सटा है, भागीरथ पैलेस जो मूल रूप से बेगम समरू की हवेली के रूप में बनाया गया था। आज यह अंग्रेजी और आयुर्वेदिक दवाओं का सबसे बड़ा बाजार है। इतना ही नहीं, यहां अन्य बाजारों से 25 से 30 प्रतिशत कम दाम में दवाएं मिल जाती हैं। इसके अलावा, बिजली और इलेक्ट्रॉनिक सामान के लिए एशिया के सबसे बड़े थोक बाजार के रूप में प्रसिद्ध है। भागीरथ पैलेस से आप अपने घर और कमरों को सजाने के लिए बहुत सी फैंसी सजावटी रोशनी ले जा सकते हैं। अपने बगीचे में रखने के लिए भी विविध प्रकार की रोशनियां और बुनियादी प्रकाश जुड़नार ले सकते हैं। यह सब आपको बहुत ही सस्ते दामों पर मिल जाएगा।

## कूंचा चौधरी

यह भी अपने आप में एक अलग ही बाजार है। बोलचाल की भाषा में फोटो बाजार के रूप में जाना जाता है। यहां आपको हर प्रकार के कैमरे और फोटोग्राफी से संबंधित सामान मिल जाता है। सस्ते कैमरों से लेकर बहुत महंगे vintge, DSLR और Polaroid कैमरे तक खरीद सकते हैं।

## गुरूद्वारा शीश गंज

आप गुरूद्वारा शीश गंज में दर्शन जरूर करें। यह दिल्ली के नौ ऐतिहासिक गुरुद्वारों में से एक है। नौवें सिख गुरु तेग बहादुर की शहादत पर बघेल सिंह ने 1783 में इस गरूद्वारे का निर्माण कराया था। इस स्थान पर नौवें सिख गुरु के इस्लाम कबूल करने से मना करने पर औरंगजेब के आदेश से 11 नवंबर 1675 को उन्हें मौत की सजा दी गई थी। उन्हीं की यादगार में यह गुरूद्वारा बनाया गया है। वर्तमान गुरुद्वारा 1930 में बनाया गया था। वह पेड़, जिसके नीचे गुरु जी को सजा दी गई थी आज भी यहां संरक्षित है। इसके अलावा गुरुद्वारा के साथ ही कोतवाली (पुलिस स्टेशन) है, जहां गुरु जी को कैद किया गया था कोतवाली और उसके के आसपास का रखरखाव दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति को सौंप दिया गया है।

इसके सामने ही फव्वहारा है, जिसका नाम बदल कर भाई मति दास चौक कर दिया गया है। इस स्थान पर भाई मति दास और उनके साथियों को मृत्युदंड दिया गया था। इनकी कुर्बानियों के लिए शीशगंज गुरद्वारे के सामने इनका शहीदी स्थल बनाया हुआ है। जहां हर वक्त अखंड ज्योति जलती है। लोग यहां माथा टेकने आते हैं। इनकी याद में सामने ही एक म्यूज़ियम बनाया गया है जिसे देखने प्रतिवर्ष हजारों पर्यटक आते हैं। आप भी इस म्यूज़ियम को जरूर देखें।

## गली परांठे वाली

यह संकरी गली परांठों के लिए मशहूर है। यहां आप अनेक प्रकार के परांठों का स्वाद ले सकते हैं।

## टाउन हाल

चांदनी चौक में दिल्ली का टाउन हॉल, दिल्ली की एक पुरानी और ऐतिहासिक इमारत है। ब्रिटिश राज के दौरान 1866 से दिल्ली टाउन कमिटी (जिसे आज हम एमसीडी के नाम से जानते हैं) का कार्यालय था। इस भवन का निर्माण 1860 में शुरू किया और 1863 में पूरा हुआ। यह शुरू में यहां लॉरेंस इंस्टीट्यूट और दिल्ली कॉलेज ऑफ हायर स्टडीज स्थापित किया गया था। बाद में इसमें दिल्ली के सरकारी दफ्तर खोलने के लिए टाउन कमिटी द्वारा 1866 में ₹ 135457 में खरीदा गया। इमारत में एक पुस्तकालय और एक यूरोपीय क्लब भी बनाया गया था।

टाउन हॉल के सामने महारानी विक्टोरिया की एक कांस्य प्रतिमा लगाई गयी थी। 1947 में स्वतंत्रता के बाद, उसे हटाकर आर्य समाज के नेता स्वामी श्रद्धानंद की मूर्ति लगाई गई है। इस स्थान पर आधिकारिक तौर पर एक क्लॉक टॉवर भी बनाया गया था। अब इसे घंटा घर के नाम से जाना जाता है। दिल्ली नगर निगम के कार्यालयों को अब मध्य दिल्ली में मिंटो रोड पर नई एमसीडी सिविक सेंटर में स्थानांतरित कर दिया गया है।

इसके समीप एक सुन्दर पार्क है, जिसे 'कंपनी बाग' के नाम से जाना जाता है। उसके साथ ही थोड़ा हटकर एक और बाग है ''बाग पर्दानशीं'', यह बाग केवल महिलाओं के लिए है और यहां पुरूषों का प्रवेश मना है।

## बल्लीमारां

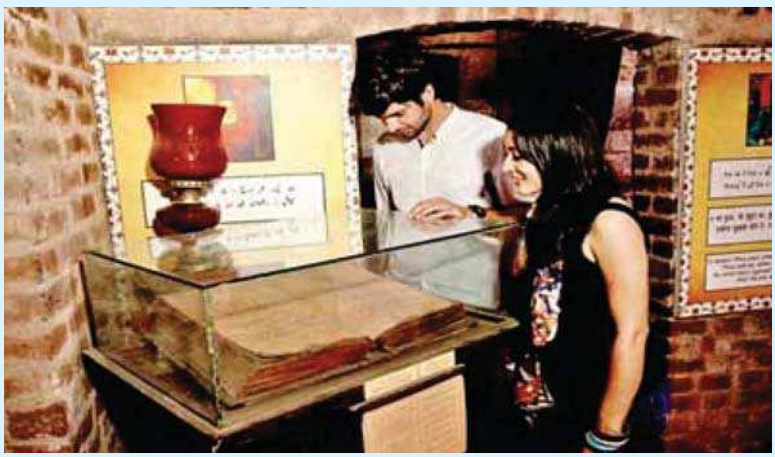

प्रसिद्ध कवि मिर्जा गालिब की हवेली (1796–1869) बल्लीमारान के दक्षिण कोने में, गली कासिम जान में है। हिंदुस्तानी साहित्य के यह महान कवि सन् 1865 से 1869 के दौरान यहां रहते थे और अपने जीवन के अंतिम दिन भी उन्होंने यहीं बिताए। इस हवेली की मरम्मत आदि करके इसे मिर्जा गालिब की जयंती पर 27 दिसंबर 2000 को जनता के लिए खोला गया था।

आप देखेंगे कि हवेली का अपनी मूल विरासत में बहाल कर दिया गया। अब इसकी देखभाल का जिम्मा एएसआई को दे दिया गया है। पर्यटकों को उन्नीसवीं सदी की भव्यता का अनुभव कर सकते हैं। मुगल लखौरी ईंटों की दीवारों पर इस्तेमाल किया गया है और फर्श से बलुआ पत्थर से बनाया गया है। लकड़ी का प्रवेश

द्वार आगंतुकों का स्वागत करता है और इसलिए आंगन में छज्जा है। हवेली में संग्रहालय देखना न भूलें। संग्रहालय में मिर्जा गालिब के जीवन में संबंधित वस्तुओं को रखा गया है। यह गालिब के अपने ही हाथ में लिखे उर्दू के मूल पत्रों के साथ.साथ अंग्रेजी में अनुवाद भी रखे गए हैं। गालिब की एक तस्वीर भी पाएंगे जिसके बारे में कहा जाता है कि वह उनकी अंतिम तस्वीर है।

उनके जीवन की घटनाओं का कालक्रम पा सकते हैं (उर्दू में केवल), किताबें और कवि के कुछ निजी सामान का भी चयन किया गया है। किताबें और उनकी अपन पसंद की नज्में भी पढ़ सकते हैं। संग्रहालय देखने के लिए आपके कम से कम एक घंटा चाहिए। यह हवेली सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक खुलती है। इसमें प्रवेश के लिए कोई टिकट नहीं है और न ही वहां के फोटो लेने पर कोई शुल्क लगता है।

बल्लीमारान बाजार में सड़क पर चश्में वालों की दुकाने हैं जहां आपको चश्मों के फ्रेम और धूप के सस्ते चश्मों की बड़ी वैरायटी मिल जाती है। यहां के दुकानदार हर तरह का चश्मा बनाते, बेचते हैं और आपकी आंखों की जांच भी करते हैं। इसके अलावा यहां आप देश–विदेश के जूते और चप्पलें भी खरीद सकते हैं।

## फतेह पुरी

फतेहपुरी मस्जिद चांदनी चौक के पश्चिमी छोर पर स्थित है। इसका निर्माण मुगल बादशाह शाहजहां की पत्नी फतेहपुरी बेगम ने 1650 में करवाया था। उन्हीं के नाम पर इसका नाम फतेहपुरी मस्जिद पड़ा। अंग्रेज़ों ने इस मस्जिद को 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बाद, नीलाम कर दिया था, जिसे राय लाला चुन्ना मल ने मात्र 19000/– रुपए में खरीद लिया था। काफी लम्बे समय तक वह इस मस्जिद की देखभाल करते रहे। बाद में 1877 में सरकार ने इसे अधिग्रहित कर चार गांवों के बदले में मुस्लिमों को वापस दे दिया। लाला चुन्ना मल के वंशज आज भी चांदनी चौक में चुन्नामल हवेली में रहते हैं।

लाल पत्थरों से बनी यह मस्जिद मुगल वास्तुकला का एक बेहतरीन नमूना है। मस्जिद के दोनों ओर लाल पत्थर से बने स्तंभों की कतारें हैं। इस मस्जिद में एक कुंड भी है जो सफेद संगमरमर से बना है।

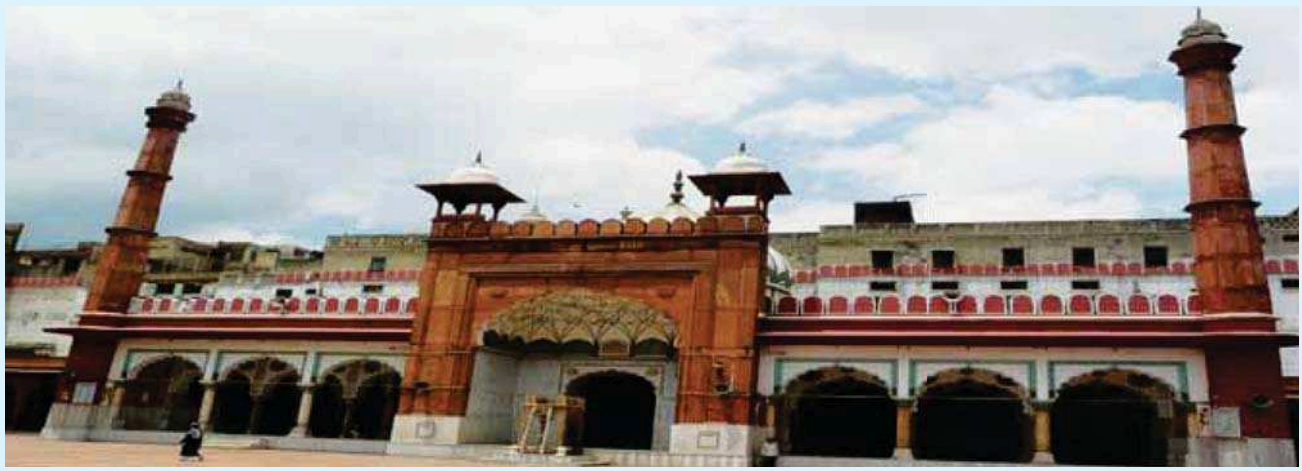

यह खोया और पनीर के लिए एक थोक व्यापार केंद्र है। लेकिन आप यहां रेस्तरानों में परांठे, छोले भटूरे, आलू पुरी, कुल्फी और भी कई तरह के व्यंजनों का लुत्फ ले सकते हैं। इतना ही नहीं, आपको पूजा–पाठ, हवन–प्रार्थना आदि की समस्त सामग्री के साथ साथ शादी की रस्मों के लिए आवश्यक वस्तुएं/सामान मिल जाएगा।

## खारी बावली

फतेहपुरी के साथ ही 17 वीं सदी में बनी खारी बावली, चांदनी चौक के पश्चिमी छोर पर स्थित है। यह सड़क पूरी तरह से सभी प्रकार मसालों, सूखे फल, मेवा, और जड़ी बूटियों के समर्पित है। आंवला, मखाना, अखरोट से लेकर कई प्रकार की लाल मिर्च तक यहां मिलेगी। आजकल यहां विदेशी मेवे भी मिल जाते हैं। वापस टाउन हॉल आकर आप चांदनी चौंक की दूसरी रौनक देखें।

## कटरा नील

यह सभी तरह के कपड़े के लिए एक थोक बाजार है, यहां दुकानों में आपको पुरूषों के परिधान के अलावा महिलाओं के लिए अनेक प्रकार के लहंगे, साड़ी, और सलवार सूट आदि सब कुछ मिल जाएगा। दिल्ली में सबसे पुराना रेमंड का शोरूम भी सबसे पहले यहीं खोला गया था जो आज भी मौजूद है।

## नई सड़क

नई सड़क विशेष रूप से किताबों और स्टेशनरी आइटमों के लिए प्रसिद्ध है। साधारण और प्रोफशनल कोर्स करने छात्रों के लिए पुस्तकों का स्वर्ग, हर कोर्स की ही नहीं, बल्कि देश की और कई यूनिवर्सिटियों की किताबें भी यहां मिल जाएंगी, नई भी और सेकंड हैंड भी। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अच्छी पाठ्य पुस्तकें, नए उपन्यास और पहले संस्करण हिंदी अंग्रेजी में फिक्शन और नॉन–फिक्शन ब्रांड, सभी की जरूरतों के हिसाब से और उस पर खुशी की बात है कि यह सब थोक मूल्यों में मिलेगा।

## चावड़ी बाजार

कागज उत्पादों में विशेषज्ञता में प्रसिद्ध है। चावड़ी बाजार में शादी के कार्ड का थोक बाजार है। सादे से लेकर सुपर फैंसी कार्ड, सभी अवसरों के लिए उपलब्ध हैं। यदि आप कार्ड प्रिंट कराना चाहते हैं तो वह सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। कार्ड के चयन, फ़ॉन्ट और शैली के बारे में प्रिंटर आपकी मदद को तैयार और उस पर ग्राहकों की लंबी लाइन है, फैसला आपके हाथ में। यदि आप सुबह के समय वहाँ जा रहे हैं तो आप बेडमी पूरी और नगौरी हलवा का खास तौर से स्वाद ले सकते हैं। आप कुछ फैंसी क्रॉकरी आदि भी खरीद सकते हैं। इससे वापस जामा मस्जिद की ओर चलें तो

## दरीबा कलां

दरीबा कलां एक 17 वीं सदी के बाजारों में से एक, दरीबा कलां की गलियों में एक से एक बड़े बड़े जौहरी भव्य चांदी के आभूषणों की बिक्री करते हैं। जो शायद दिल्ली के किसी भी बाजार में नहीं होती। यहां तक कि कुछ दुकानों में आपको चांदी के सोफ–सैट और कुर्सियां तक मिल जाते हैं और वह भी किसी अन्य बाजार में मिलने वाले सामान की तुलना में 25 प्रतिशत कम लागत पर।

नाक के कोके (नोज–पिन), कान के झुमके, गले के हार, पायल और चांदी के बर्तन और चांदी के ऐसे बर्तन भी जिन पर कुंदन लगे हों और मीनाकारी की गई है। इसके अलावा यहां इत्र और सुगंधित तेल का भी अच्छा बाजार है।

**किनारी बाजार** शादी की खरीदारी के लिए आदर्श स्थान है, किनारी बाजार की गलियां जरी बॉर्डर के कपड़ों, पारसी कपड़ों, रिबन लेस, डिजाइनर साड़ी और कुर्ता और लटकन के लिए भी मशहूर है। इतना ही नहीं है यहां छोटी दुकाने शादी के साज सामान के साथ अनेक तरह की वरमालाओं के लिए प्रसिद्ध है।

**कैसे आएं** : दिल्ली में लाल किले के सामने से ही चांदनी चौक शुरू हो जाता है। लाला किला सड़क मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा है। किंतु यह सारा क्षेत्र बहुत ही संकरा और भीड़ वाला है अतः अपने वाहन से आने का कष्ट न करें। लाल किले से ही आपको चांदनी चौक में जाने के लिए साइकिल रिक्शे मिल जाएंगे।

**दिल्ली मेट्रो** : यहां आने के लिए सबसे अच्छा है कि आप दिल्ली मेट्रो का उपयोग करें। राजीव चौक या फिर दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से यहां मेट्रो आती है और वह आपको चांदनी चौक के एकदम बीच में पहुंचाती है।

यहाँ की गलियाँ संकरी और सड़क छोटी हैं। इसलिए यहाँ निजी प्रकार का वाहन लेकर न आने की सलाह दी जाती है।

सहायक निदेशक (डी.ओ/आरटीआई)
पर्यटन मंत्रालय

## अगले अंक के कुछ प्रमुख आकर्षण

- गंतव्य प्रबंधन : मोदी मंत्र : डॉ. निमित चौधरी
- संगीत के रहस्यमय स्तम्भ : मोहन सिंह
- कामख्या के उमानन्द : सुधीर कुमार
- साक्षी गोपाल : अविनाश दाश
- मेरी पचमढ़ी यात्रा : अनिता सच्चर
- बैजनाथ : राजकुमार

**साथ में और भी . . . .**

**अंतर्राष्ट्रीय छोला–भठूरा दिवस पर**

## याद करें : छोले भठूरे

**–अनिता सच्चर**

2 अक्टूबर की बात होते ही किसी के भी मन में पहली बात यह आती है कि यह दिन है जब दो महान नेताओं गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री पैदा हुए थे। लेकिन लोगों को अभी तक पता ही नहीं है कि 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय छोले– भठूरे दिवस International Chola Bhathura Day के रूप में भी मनाया जाता है।

छोले भठूरा पंजाबी खाने का अभिन्न अंग है। इसे पूरे उत्तर भारत में आमतौर बड़े ही मज़े से सुबह के नाश्ते रूप में परोसा जाता है। आप कभी भी बाज़ार में खरीदारी करने जाए तो किसी न किसी दुकान से आती इनकी खुशबू आपको अपनी और खींच ही लेती है।

दिल्ली के रहने वाले शशांक अग्रवाल द्वारा यह अभियान शुरू किया गया था। शशांक को छोले भठूरे बहुत अच्छे लगते हैं बस यूं ही एक दिन मन में आया कि क्यों न इसे और अधिक लोकप्रिय बनाया जाए। उन्होंने 2012 में, अपने पसंदीदा खाने के व्यंजन का जश्न मनाने का फैसला किया। पहले आस पास के लोगों से इस पर चर्चा की। दिल्ली वालों के लिए छोले–भटूरे एक बड़ी ही साधारण सी चीज है, इसलिए कोई चर्चा के लिए तैयार नहीं हुआ। शशांक ने एक थीम तैयार की "दिल्ली अपने छोले–भठूरे लिए प्रसिद्ध है कोई भी कहीं से भी आए, छोले–भठूरे का स्वाद जरूर लेकर जाता है।" फिर अग्रवाल ने इस पर पहल करते हुए, इस शब्द का प्रसार करने के लिए सामाजिक मीडिया को चुना। उन्होंने दुनिया भर के खाने के प्रति उत्साही शौकीनों से संपर्क करने के लिए फेसबुक पेज और ब्लॉग शुरू किया। बस फिर क्या था दुनिया भर के कई लोग उनके इस अभियान में शामिल हो गए। अग्रवाल कहते हैं इसलिए मैं ने इस व्यंजन के लिए एक दिन समर्पित करने के बारे में सोचा। "मैंने कई ब्लॉग्स और ट्वीटर शुरू किए गए और खाने के शौकीनों से फेसबुक पर संपर्क किया गया। इसके अलावा, खाने

के शौकीन लोगों से अनुरोध किया गया कि वे अपने अपने व्यंजनों के बारे में बताएं और अपने आस पास किसी होटल या रेस्तरां में छोले भठूरे का पता लगा कर उसका स्वाद लें और बताएं कि उन्हें यह व्यंजन कैसा लगा? साथ ही यदि, छोले भठूरे नहीं मिल पाते हैं तो उन्हें घर पर ही तैयार कीजिए। इसके लिए छोले भठूरे बनाने की विधि और परोसने की तस्वीरें पोस्ट की गई। इसके बारे में एक लाख से भी अधिक लोगों के साथ छोले भठूरे की तस्वीरें साझा की गई। बस क्या था लंदन, वाशिंटन, लॉस एंजिल्स, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, नार्वे, और स्वीडन के खाने के शौकिनों के जवाब आने लगे। बहुत से लोगों ने बताया कि उनके यहां बड़े होटलों में इंडियन डिश के रूप में यह आसानी से मिल जाता है। तब जाकर हमें पता चला कि हमारे छोले– भठूरे तो पुरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं। तब पता चला कि यह व्यंजन कितना लोकप्रिय है।

भठूरे के साथ लस्सी का आनंद

बहुत से लोगों ने पूछा कि **भठूरे और पूरी में क्या फर्क है?** उन्हे बताया गया कि दोनों को बनाया बिलकुल एक ही तरीके से जाता है पर इनकी सामग्री में अंतर है, भटूरा मैदा से बनता है और पूरी आटे से, दूसरा फर्क है खमीर का। पूरी बनाते वक़्त खमीर उठाने की जरूरत नहीं पड़ती। एक 5 से 6 इंच का भटूरा आसानी से 250 कैलोरी का हो सकता है जबकि एक पूरी में 200 से कम कैलोरी हो सकती है। उन्हे बताया गया कि छोले भठूरे का मूल स्थान पंजाब प्रांत को माना जाता है। छोले और भठूरे एक साथ मिलकर उत्तर भारत का एक स्वादिष्ट खाना बनने के लिए दो व्यंजनों का एक संयोजन है।

''छोले को कई तरह के मसालों से तैयार किया जाता है और भठूरे को तली हुई है मैदा से बनी पूरी जैसा बनाया जाता है।इसका आनंद मसालेदार चटपटे चने या मटर के साथ ही आता है। हालांकि, छोले भठूरे की उत्पत्ति पंजाब से हुई लेकिन आज यह व्यंजन उत्तर भारत में ही नहीं पूरे भारत में बहुत पसंद किया जाता है। यह व्यंजन अचार और प्याज के साथ पेश की जाती है और यह भी कि लस्सी इस पकवान का सबसे अच्छा साथी माना जाता है। इसे बनाने की विधि कि छोले भठूरे को कैसे तैयार किया जाता है, भी लोगों को पोस्ट की गई। उन्हें बताया गया कि दिल्ली में किसी अनधिकृत पकवान की तरह छोले भठूरे हर स्थान पर मिल जाते हैं। आपके आस पास की गलियों बाजारो से लेकर बड़े बड़े होटलो तक में यह व्यंजन आराम से मिल जाता है।''

हालांकि, यह उत्तर भारत में कुछ ज्यादा ही लोकप्रिय है, लेकिन भारत में कहीं भी चले जाइए, कमोबेश छोले भठूरे उपलब्ध हो जाते हैं। दक्षिण भारत में, जहां लोग नाश्ते में इडली दोसा आदि का उपयोग करते हैं वहां भी अच्छे होटलों और रेस्तरानों में यह आसानी से मिल जाता है।

किसी को भी हैरानी हो सकती है कि गांधी जयंती, 02 अक्टूबर को ही अंतर्राष्ट्रीय छोला– भठूरा दिवस के रूप में क्यों चुना गया? इस पर उनका का कहना है कि "यह एक राष्ट्रीय अवकाश है।" भारत में ही नहीं अब तो विश्व भर में गांधी जयंती को अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है। यहां तक कि भारत के साथ–साथ कुछ और देशों में भी इस दिन सार्वजनिक अवकाश होने लगा है। वहां भी बहुत से लोग छुट्टी के दिन दोपहर या रात का खाना खाने के लिए बाहर जाते हैं। हमने सोचा कि यह एकदम सही दिन है।

पंजाब में तो सबसे अधिक इसे नाश्ते के रूप में ही इस्तेमाल किया जाता है छोले भठूरे वास्तव में भारत में चटपटे मसालेदार सफेद चने के साथ एक तली हुई रोटी या पूरी ही है जिसे मैदे से बनाया जाता है और लस्सी के साथ इसका कुछ अलग ही आनंद हो जाता है। छोले भठूरे के साथ प्याज, आम तौर पर गाजर के अचार और हरी चटनी के साथ परोसा जाता है। छोले भठूरे पंजाब में नहीं, इसके आस पास उत्तर पश्चिम भारत में लोकप्रिय

है। सुबह कहीं भी देख लीजिए छोले भठूरे के स्थानीय दुकानदारों के पास भीड़ लगी मिलती है। विश्वविद्यालय के छात्र ही नहीं, रिक्शा चालक, आटो चालक और आम घरों के भी लोग भी इस लोकप्रिय स्वादिष्ट और सस्ते भोजन की तलाश खड़े मिल जाएंगे।

अगर आपने कभी घर पर पहले छोले भठूरे बनाये हैं तो बाजार के छोले भठूरे में फर्क तो महसूस ही किया होगा। फिर भी हम आपको छोले भठूरे बनाने के बारे में बता रहे हैं।

**भटूरे की सामग्री** मैदा 500 ग्राम, सूजी 100 ग्राम, दही आधा कटोरी, नमक स्वादानुसार, चीनी आधा छोट, चम्मच, बेकिंग पाउडर एक छोटी चम्मच और तलने के लिए तेल।

## भटूरे की तैयारी

एक बरतन में मैदा, सूजी, चीनी, दही, नमक, बेकिंग पाउडर और लगभग 1 चम्मच रिफ़ाइंड ऑयल/तेल मिलाकर पहले अच्छे से मिलाएं और फिर आवश्यकतानुसार गुनगुने पानी से गूंथ लें वैसे ही जैसे कि हम आटा गूंथते हैं। अब लगभग 30 मिनट के लिए इसे एक बरतन में सूती कपड़े से ढककर रख दें ताकि भटूरे टेस्टी बनें।

## छोले की सामग्री

काबुली चना एक कटोरी या 150 ग्राम, खाने वाला सोडा आधा चम्मच, तेजपत्ता– 2, लौंग 4–5, इलायची– 2, दालचीनी– 1 टुकड़ा, काली मिर्च– 1–2 चम्मच, जीरा –1 चम्मच साबुत धनिया– 1 चम्मच, नमक– स्वादानुसार, तेल– 150 ग्राम कसूरी मेथी– 3 चम्मच टमाटर 3–4 मीडियम साइज, 3–4 हरी मिर्च मीडियम साइज, अदरक का पेस्ट, रिफाइन्ड तेल 2 चम्मच, आधा छोटी चम्मच जीरा, धनिया पाउडर एक छोटी चम्मच, लाल मिर्च पाउडर एक चौथाई छोटी चम्मच से कम गरम मसाला।

## छोले बनाने की विधि

चनों को रात भर पानी में भीगने रख दें। सवेरे चनों को पानी से निकालकर धोकर, कुकर में डालें। एक छोटा गिलास पानी, नमक और खाने का सोडा मिला दें. फिर इसे गैस पर उबालने के लिए रख दें। कूकर में छः से सात सीटी लगाएं ताकि चने अच्छी तरह से पक जाएं।

अब दूसरी तरफ टमाटर, हरी मिर्च, अदरक को मिक्सी से बारीक पीस लें। कढ़ाई में तेल डाल कर गरम करें, जीरा भुनने के बाद धनिया पाउडर डाल दें। टमाटर, अदरक, हरी मिर्च का पेस्ट और लाल मिर्च का पाउडर डालकर मसाले को तब तक भूने जब तक कि मसाले के ऊपर तेल न तैरने लगे। भुने मसाले में एक गिलास पानी और स्वादानुसार नमक डालें। उबले हुए चनों को इस मसाले की तरी में मिलाकर अच्छी तरह चमचे से चलाएं। अगर आपको छोले ज्यादा गाढ़े लग रहे हों तो जरूरत के मुताबिक पानी मिला सकते हैं। उबाल आने के बाद 5–6 मिनट तक पकने दें। उसके बाद उसमें गरम मसाला और बचा हुआ हरा धनिया मिलाएं और अलग रख दें।

## भटूरा बनाएं

अब गूँदे हुए आटे में से 3 इंच का गोला निकले और अब इस गोले का करीब 10% हिस्सा तेल में छुवाकर बेलन से बेले। अगर आप पहली बार मैदा को बेल रहे है तो आपको शायद थोडा सा अजीब लगेगा क्योंकि मैदा बार–बार वापस होता यानि सिकुड़ता हुआ नज़र आएगा। चिंता न करें और इसे बेल कर बड़ा कर लें।

आप इसे एकदम गोल रोटी का आकर भी दे सकते है या फिर इसे खींच कर पांच से छः इंच तक लंबा भी कर सकते हैं। (रेस्तरां में आमतौर पर प्रायः लंबे आकार के ही भठूरे बनाए जाते हैं)

इतनी देर में तेल गरम हो चूका होगा, अब इसे तेल में डाले। ध्यान रहे की तेल का गरम होना बहुत जरूरी है, नहीं तो भटूरा बहुत ही सख्त बनेगा।

भठूरे के कोनों को कलछी से हल्का हल्का दबाये। इससे भठूरे बीच में से फूलने लगेगा।

इसे तब तक तले जब तक कि यह दोनों ओर से हलके भूरे रंग का न हो जाए। जब दोनों तरफ से हलके भूरा रंग दिखने लगे तो इसे बहार निकाल लें। इसी तरह आप बाकी से बचे भठूरे भी तल सकते है।

**छोले– भठूरे खरीदते समय सावधान रहें :**

जहां तक हो सके सुबह के समय ही भठूरा खरीदें। इससे एक लाभ तो यह होता है कि दिन भर के काम के बाद यह हजम हो जाता है। दूसरे भठूरे बनाने वाले विक्रेता सुबह के समय भठूरे तलने के लिए कढाई में ताजा तेल इस्तेमाल करते है। लेकिन बाद में ज्यादातर दोपहर के समय के बाद वह तेल जल कर काला पड़ जाता है। मगर बनाने वाले उसी तेल का उपयोग करते रहते हैं। इससे कैंसर होने का खतरा होता है। खुले में बनाने वाले छोटे दुकानदारों को तो आप कुछ कह सकते हैं किंतु बड़े रेस्तरानों में जहां अंदर सामान तैयार होता है, आप कुछ नहीं बोल सकते।

खस्ता भटूरा अब परोसने के लिए बिलकुल तैयार है। इसे चटपटे छोले के साथ सर्व करें भटूरा हमेशा गरम–गरम ही सबसे अच्छा लगेगा है क्योंकि ये मैदा से बनता है इसीलिए यह ठंडा होने पर सख्त हो जाता है।

भटूरा हमेशा गरम–गरम ही अच्छा लगता है। इसे ताजा और गरम ही खाना चाहिए। कुछ लोग इसे रेफ्रीजिरेटर में 2–3 दिन तक रख लेते हैं और बाद में माइक्रोवेव में गरम करके खाते हैं। वैसे तो आप इसे गरम करने के लिए दोबारा से तल सकते है पर इससे भठूरे मे तेल भर जाएगा। लेकिन हम माइक्रोवेव में गरम करना ठीक नहीं समझते है क्योंकि इससे एसिडिटी हो सकती है।

**उच्च श्रेणी लिपिक**
पर्यटन मंत्रालय

**दरिद्रों में दरिद्र वह है जो अतिथि का सत्कार न करे।**
**अतिथि देव है।**

**– तिरूवल्लूर,**
दक्षिण भारत के महान संत

# संगीत से कीजिए, इलाज

– मोहन सिंह

वैदिक काल में संगीत और नृत्य से कई रोगों का उपचार किया जाता था। यह माना जाता है कि अधिकतर रोग मन के कारण ही होते हैं। योग, नृत्य और संगीत– तीनों विद्याओं– का विषय मन को ही माना जाता है। मन पर प्रभाव होने से तन पर उसका असर होने लगता है। इसलिए नृत्य से शारीरिक तथा संगीत से मानसिक रोगों का उपचार किया जाता था।

प्राचीन ग्रंथों में 'सामवेद' संगीत को समर्पित 'ग्रंथ' माना गया है। इसके अनुसार राग 'रंज' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है मस्तिष्क को आनन्दित करना। आनन्द होने पर ही मन की भावनाएं बाहर आती है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक वर्गीकृत (क्लासिफाइड) संगीत है। शास्त्रीय अर्थात शास्त्रोक्त यानि जैसा शास्त्र में बताया गया है। इस में हर राग के स्वर, लय, तान, ही नहीं समय भी निर्धारित किए गए है। इसलिए इसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। 16वीं शताब्दी के बाद लगभग सभी देशों की संस्कृतियों तथा उनके नृत्य एवं संगीत में परिर्वतन हुए है। परन्तु भारतीय शास्त्रीय संगीत में अभी तक कोई परिवर्तन नहीं हो पाया है।

राग को उसकी उत्पत्ति के स्थान या जाति के नाम से भी जाना जाता है, उदाहरणः जौनपुरी, मुल्तानी (स्थान के नाम पर), अहीर, गुर्जरी, माण्ड आदि (जनजाति के नाम पर) भैरव, दुर्गा, सरस्वती (हिन्दु देवी देवताओं के नाम पर) मल्हार (व्यक्ति के नाम पर) आदि।

''संगीत रत्नाकर'' 'में सारंगदेव लिखते है कि राग एक सुन्दर स्वर लहरी होती है। इस स्वर लहरी का ही पूरा नाम शास्त्रीय संगीत है। मनुष्य को आनन्द के लिए ही नही शारीरिक व्याधियों का दमन करने के लिए भी ''संगीत–श्रवण'' करना चाहिए। उनका कहना है कि संगीत दो प्रकार का ही होता है एक ''शास्त्रोक्त'' अर्थात शास्त्रीय संगीत तथा दूसरा ''लोकोक्त'' अर्थात आम जनों द्वारा एक स्थानपर सामुहिक गायन.वादन। लोक संगीत में भी कहीं न कहीं शास्त्रीय संगीत की झलक मिलती है, इसी प्रकार शास्त्रीय संगीत के कई राग भी लोक संगीत से लिए गए है। वह आगे लिखते हैं, जो मनुष्य लय और तान के अनुसार गा नहीं सकता वह केवल अट्टहास कर सकता है या फिर विलाप। इसलिए ऐसे स्वरों को संगीत की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। यह 'अपसंगीत' बन जाता है। 'अपसंगीत' मनुष्य को स्वार्थी बनाता है और उसमें छल कपट की भावनाएं उत्पन्न करता है और उसमें छल कपट की भावनाएं उत्पन्न करता है। अतः मनुष्य को 'अपसंगीत' से दूर रहना चाहिए।' सारंग देव आगे लिखते हैं जिसने संगीत की साधना नहीं की, गुरूओं के चरण नहीं पखारे, गुरूओं की सेवा नहीं की, वह संगीतकार कैसे हो सकता है?''

भारत के महान फिल्म संगीतकारों में से एक, स्वर्गीय श्री नौशाद ने इस विषय पर रोशनी डालते हुए एक बार इन पक्तियों के लेखक से बातचीत करते हुए कहा था,

''यू तो 'अपसंगीत' की कोई परिभाषा मुझे पढ़ने को नही मिल पाई है, हो सकता है कि यह संगीत के अपमिश्रण यानि जिसे हम मिलावटी भी कह सकते है, संगीत से हो। फिर भी मैं समझता हूं कि मंचीय प्रकार के, कानफोडू बाजों की धुनों पर जबरदस्ती खींचे गए अशास्त्रीय स्वरों को 'अपसंगीत' की श्रेणी में रखा जा सकता है। शास्त्रीय संगीत को आधार बनाकर रचे गए फिल्मी गीतों को भी लोग बरसों तक याद रखते हैं, जबकि आज के गीतों को लोग फिल्म खत्म होने के बाद या हॉल से बाहर निकलते ही भूल जाते हैं।''

इसी विषय पर सुप्रसिद्ध राम कथा वाचक श्री राम किकर जी कहते है, ''शब्द कभी मरते नहीं, वे हवा में ही तैरते रहते है। यह सही है कि 'अपसंगीत' का हमारे जीवनपर प्रभाव पड़ता है और यह मनुष्य को स्वार्थी और छली बना देता है। लेकिन हम लोग यह कहकर टाल देते हैं कि आजकल कौन स्वार्थी नहीं है। पति, पत्नी हो या संतान सभी अपने स्वार्थ के लिए काम करते है। यहां तक कि कई कर्मचारी भी अपना स्वार्थ देखकर ही दफ्तर में अपनी कलम खोलते है। मगर आधुनिकता का ढोंग करते हुए हम इस वास्तविकता से मुंह मोड़ लेते है। जबकि असल में हमारी जिन्दगी में यह 'अपसंगीत' का ही प्रभाव है।''

कहा जाता है कि ब्रह्मा जी ने भविष्य में आने वाले कलियुग के लोगों के लिए 'नाट्यवेद' नामक पांचवें वेद की रचना की थी, जिसे बाद में उन्होंने उसे भरतमुनि को सौंप दिया था। भरतमुनि ने 'नाट्यवेद' के आधार पर ही 'नाट्यशास्त्र' लिखा। मान्यता है कि भारत के सभी शास्त्रीय नृत्य इसी नाट्यशास्त्र' पर आधारित है और इसमें नृत्य के साथ–साथ संगीत का भी ज्ञान दिया गया है।

भगवान शिव का एक नाम नटराज भी है। पुराणों कथाओं के अनुसार भगवान शिव अपने मन को एकाग्र करने के लिए नृत्य करते थे। तांडव को नृत्य की पराकाष्ठा माना जाता है। भारतीय देवी देवताओं के चित्रों व मूर्तियों में भी देखा जा सकता है कि सभी के हाथ में एक वाद्य होता है जैसे श्रीकृष्ण के हाथ में बांसुरी, सरस्वती के हाथ में वीणा आदि।

माना जाता है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत ईश्वर को समर्पित है। शायद इसीलि, अधिकतर बंदिशें 'ईश वन्दना' पर ही रची गई हैं। दसवीं शताब्दी तक शास्त्री; संगीत केवल देवालयों (मंदिर) में भगवान की मूर्तियों के सामने ही गाया– बजाया जाता था। कालांतर में यह राजाओं के सामने गाया जाने लगा। संभवतः इसके पीछे यही सोच रही होगी कि राजा भी भगवान का ही रूप होता है। इसी प्रकार प्राचीन और मध्यकाल के ज्यादर कवियों की रचनाएं छंद और लय के अनुसार किसी न किसी राग पर ही आधारित होती थी। दक्षिण भारत के कर्नाटक संगीत में तो आज भी संतों की कृतियां ही गाई– बजाई जाती है। वहां आज भी विशेष अवसरों पर मंदिरों में नृत्य और संगीत के आयोजन किए जाते हैं। सिख पंथ की पवित्र पुस्तक 'गुरू ग्रंथ साहिब' में संचित गुरबाणी को 32 रागों और 28 रागिनियों में पिरोया गया है। इसीलिए इसका कोई भी पद सुनने से दिल दिमाग को एक राहत मिलती है।

संगीत चिकित्सा के प्रणेता स्व. बालामुरली कृष्णा

प्रातःकाल के रागों में भैरव, नट भैरव, अहीर भैरव, गूजरी तोड़ी या मियां की तोड़ी को सुनते है तो पहले चरणमें हमारे अन्दर की भावनाए बाहर आती है, दूसरे चरण में यह मन को एकाग्र करते हैं। संध्याकाल में ध्यान लगाने के लिए राग देश, यमन, बिहाग, मारू बिहाग, पूरिया या धनाश्री सुनने चाहिए। ऐसा भी हो सकता है कि कभी पूरा राग सुनने का समय नही होता, ऐसे में वाद्यवृंद सुनना चाहिए।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है वाद्यवृंद अनेक वाद्यों पर संगीत की रचना होती है। सारंगदेव के अनुसार कुछ वाद्यों जैसे ढोल, नगाड़ा या तुरही जैसे वाद्यों को बंद सभागार या कमरे में नहीं सुनना चाहिए। इनकी गमक से आपके हृदय और मस्तिष्क पर दबाव पड़ता है। ऐसे वाद्यों को केवल खुले में ही सुनना चाहिए।

1980 के दशक में स्वीत्जरलैंड की एक दुग्ध उत्पादक फर्म के मवेशियों के दूध में कमी आने लगी। अच्छे से अच्छा पौष्टिक आहार देने पर भी उनके दूध में वृद्धि के बजाय कमी आती गई। तब उन्होंने प्रयोग के तौर मवेशी बाड़े में हल्का हल्का लयबद्ध संगीत चलाना शुरू किया। इसके आश्यर्चजनक परिणाम देखने को मिले। मवेशियों की भूख बढ़ी और एक माह में ही उनके दूध में भी वृद्धि होने लगी। कुछ समय बाद उनका दूध उत्पादन पहले से सवाया हो गया।

अभी कुछ समय पहले 'बायोलॉजी लैटर्स जनरल' में प्रकाशित एक शोध रिपोर्ट में बताया गया था कि बंदर भी संगीत की विभिन्न किस्मों में भेद कर सकते हैं और उन पर भी संगीत का प्रभाव पड़ता है। शोधकर्ताओं ने 50 बंदरों के समूह पर एक मास तक प्रतिदिन दस मिनट तक शोर शराबे वाला तेज संगीत सुनाया और देखा कि बंदरों में बेचैनी के लक्षण पाए गए। उनकी भूख भी कम हो गई। साथ ही उनकी शरारतों में तेजी आने लगी। उसके बाद कुछ दिन तक दिन में केवल दस मिनट के लिए उन्हें बहुत तेज और भय उत्पन्न करने वाल संगीत सुनाया गया तो देख गया कि बंदरों की गतिविधियों में उठापटक और आपस में लड़ने और एक दूसरे को काटने की प्रवृति बढ़ गई। उनमें कुछ बंदर बीमार भी रहने लगे।

फिर कुछ दिन बाद उन्हें 'पियानो' का हल्का संगीत सुनाया गया तो उनकी शरारतों में कमी आने लगी। इसके कुछ दिन बाद उन्होंने जलतरंग, सारंगी और संतूर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत सुनाया। इससे उनकी शरारत भरी गतिविधियों में परिवर्तन आने लगा। धीरे–धीरे उनकी गतिविधियां सामान्य हो गई, उनकी भूख भी बढ़ गई और वे बीमार भी नहीं पड़े। कुल मिलाकर उनमें पाए गए सभी लक्षण सुकुन और राहत देने वाले थे। अध्ययन दल के प्रमुख विज्ञानी चार्ल्स स्नोडाउन का कहना है कि संगीत से सुनने वालों के व्यवहार में प्रभाव उत्पन्न होता है। शान्त और लयबद्ध संगीत सुनने से मन को शान्ति मिलती है, भूख बढ़ती है और बेचैनी कम होती है। जबकि शोरगुल भरा संगीत सुनने से मनुष्य के स्वभाव में कुपरिवर्तन होता है।

उस्ताद अल्लाह रक्खा के शागिर्द मिया मुस्तफा हुसैन कहते है कि मनुष्य का जीवन मूलतः एक, दो, तीन या चार तालों पर आधारित है यही मूलभूत लय है और पूरी सृष्टि का आधार है।

आज महानगरों की भागदौड़ भरी जिन्दगी में रक्त चाप, उच्च रक्त चाप, अवसाद (Depression) और हृदय रोग आम बीमारियां बढ़ती जा रही हैं। संगीत दिल को सुकुन तो देता ही है, इसमें ऐसी बीमारियों को दूर करने की अचूक ताकत भी है।

'मोहन वीणा' वादिका अनुपमा कुमारी इस बात को मानती है कि जिस तरह दवाओं की मात्रा कम या अधिक की जाती है, उसी प्रकार सुरों की लयबद्धता या उतार चढाव साधारण या गम्भीर बीमारियों में राहत देती है।

राग दरबारी सिरदर्द और तनाव को दूर करता है। यह रक्तचाप (Blood Pressure) और अवसाद (Depression) जैसी बीमारियों से निजात दिलाने में भी सहायक है।

राग दीपक एसिडिटी को दूर करता है।

राग भैरव का गायन अथवा श्रवण नेत्रविकार दूर करने में सहायक होता है।

**सावधानः**

आजकल म्यूजिक थेरेपी (संगीत चिकित्सा) का बड़ा नाम चल रहा है। जिम में मोटी फीस लेकर प्रायः 30 से 60 मिनट तक के ट्रेनिंग सेशन चलाए जाते है, जहां तेज संगीत की धुनों पर लोग वर्क आउट (कसरत) करने को कहा जाता है। यह कोई संगीत चिकित्सा नहीं है। एक अध्ययन के अनुसार इस प्रकार तेज संगीत सुनते हुए कसरत करने से, हो सकता है आपको तात्कालिक लाभ मिले परंतु बाद में इससे आपके चलने–फिरने की शक्ति के साथ–साथ सुनने कि शक्ति प्रभावित हो सकती है क्योंकि एक सीमा के बाद इस प्रकार का संगीत आपकी श्रवण शक्ति को क्षीण कर देता है। तेज संगीत आपके तंत्रिका प्रणाली (नर्वस सिस्टम) और हृदय पर अलग–अलग प्रभव डालता है। जब आप तेज संगीत के साथ तेज चलने और फिर दौड़ने के लिए ट्रेंडमिल पर वर्क आउट करते है तो आपका रक्तचाप तेज हो जाता है साथ ही हृदय की गति (धड़कनें) भी आवश्यकता से अधिक तेज हो जाती है। इससे थकान तो होती ही है कालांतर में हृदयघात (हार्टफेल)का भी खतरा हो सकता है। जबकि शास्त्रीय संगीत सुनते समय कसरत नहीं की जाती बल्कि आराम से जमीन पर बैठकर सुना जाता है।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति के डाक्टर भी इस बात को स्वीकार करते है कि इस प्रकार तेज संगीत सुनने के नुकसान ज्यादा है, इस तरह आपको ऊंचा सुनने की आदत पड़ सकती है या फिर बहरापन होने के आसार बढ़ सकते हैं। यद्यपि इस प्रकार का संगीत सुनने का नुकसान तुरंत महसूस नहीं होता लेकिन इसका प्रभाव धीरे–धीरे भविष्य में पड़ता है। इसलिए कान में लगातार मोबाइल या टेप आदि से भी संगीत नहीं सुनना चाहिए।

यदि आप संगीत साधना करते है तो सोने पे सुहागा है। सुनने में भी कोई हानि नहीं है। यदि हम शास्त्रीय संगीत के गायकों/गायिकाओं को देखें तो कुछ लोग शरीर से भारी होने के बाद भी बीमारियों से कोसों दूर होते है और अधिकतर दीर्घायु होते है (कम से कम 80 वर्ष।)

**कभी इन्हें भी आजमा कर देखें:**

(1) आपको किसी कारण वश अनावश्यक हरारत महसूस होती है। किसी काम में मन नही लग रहा है तो एक स्थान पर बैठ जाए (किसी बंद कमरे में बैठें तो उचित होगा ताकि किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न न हो) विलम्बित अथवा मध्यगत में आपकी पसंद का कोई भी वाद्य बजने दें। पहले तीन सांस अन्दर लें और आंखों को बंद कर लीजिए कम से कम दस मिनट तक सुने। आंखें खोलने से पहले तीन सांस बाहर निकालें, तब ही आंखें खोले। आप स्वयं को तरोताजा महसूस करेंगे।

(2) किसी कारणवश नींद नहीं आ रही है, आप तनाव से चिन्ताग्रस्त है तो ऐसे में बिस्तर पर बैठ कर या फिर लेटे–लेटे ही ''ओउम'' शब्द का दीर्घस्वर में, जैसे 'ओ..ओ..ओ..म.. उच्चारण करें। आपको कुछ ही देर में नींद आ जाएगी। यह आपके तनाव की मात्रा पर निर्भर करता है कि सात बार के उच्चारण से ही आपको नींद आ जाती है या अधिक बार उच्चारण करने से।

(3) परीक्षा के दिनों में, विशेषकर बोर्ड की परीक्षा के समय बच्चों पर मानसिक दबाव रहता है। छात्रों को परीक्षा के दिनों में परीक्षा का भय दूर करने के लिए कुछ अंतराल पर संगीत सुनने की सलाह दी जाती है। यह भी देखा गया है कि टी.वी. देखने या उस पर संगीत सुनने से ध्यान बंटता है, परन्तु यदि म्यूजिक सिस्टम या रेडियो पर हल्का संगीत सुना जाए तो ध्यान नहीं बंटता है बल्कि और पढ़ने की इच्छा होती है। यह भी देखा गया है कि पढ़ते समय वाद्य संगीत सुना जाए तो दिमाग को एक राहत तो मिलती ही

है, इससे आपकी स्मरणशक्ति में भी वृद्धि होती है और जो कुछ पढ़ते है याद होता चला जाता है। वाद्य संगीत में भी सितार, संतूर, सारंगी या इसराज सुनने की सलाह दी जाती है।

यही स्थिति ताल के साथ भी है जो दिल की धड़कनों को कम या तेज करने में सक्षम है। अलग–अलग ताल शरीर में अलग–अलग फ्रीक्वेंसी पैदा करते है। यदि चिकित्सकों और संगीतकारों की मदद से संगीत थेरेपी पर अनुसंधान किए जाए तो उसे परिणाम चौकाने वाले हो सकते हैं। विदेशों में पश्चिमी संगीत को लेकर इस दिशा में अनुसंधान हो रहे है। परन्तु भारत में अभी अनुसंधकर्ताओं का ध्यान इस ओर नहीं गया है। कुछ समय पूर्व स्वर्गीय डॉ. एम. वाला मुरली कृष्ण ने इस ओर ध्यान आकर्षित किया और एक संगीत संस्थान की स्थापना की है। वैदिक दर्शन के अनुसार हमारे शरीर के भीतर अपार शक्ति छिपी हुई है। जो किसी भी रोग से लड़ने में सक्षम है। बस आवश्यकता है उन छिपी हुई शक्तियों को सक्रिय करने की।

कंसल्टेंट
पर्यटन मंत्रालय
पत्रिका के प्रबंध–संपादक

यदि देश प्रेम सीखना है तो मछली से सीखो जो स्वदेश (पानी) के
लिए तड़प–तड़प कर अपनी जान दे देती है।

**–नेताजी सुभाष चन्द्र बोस**

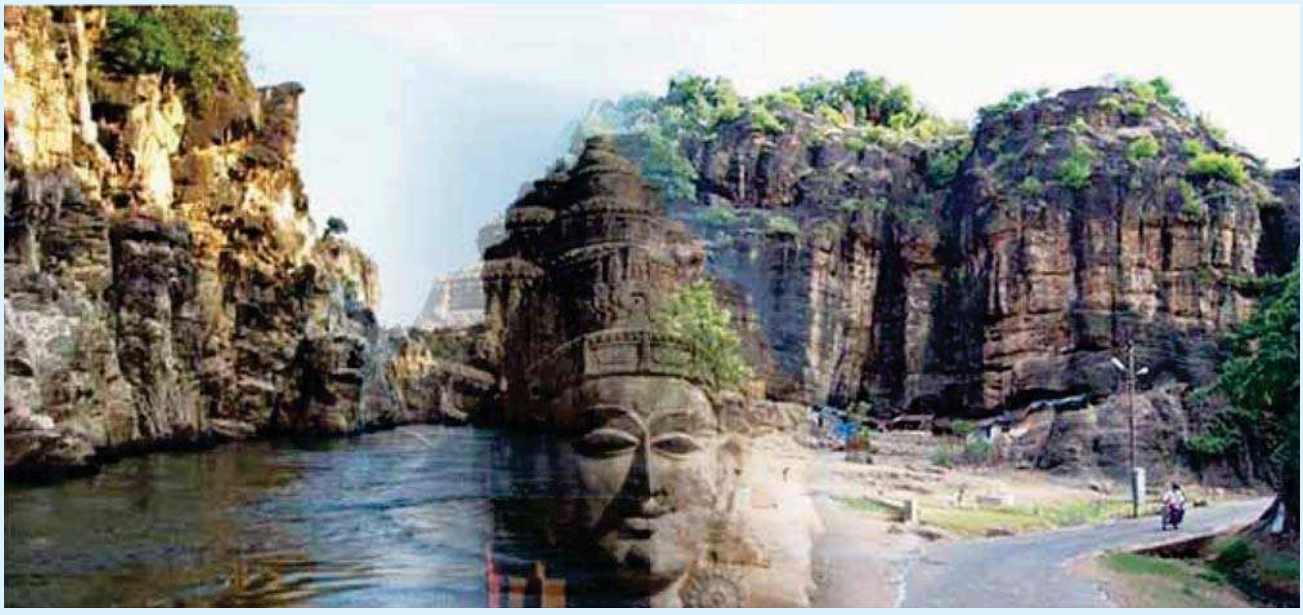

पचमढ़ी

दिल्ली के निकट पर्यटनस्थल

# मुक्तेश्वर

-विनीत सोनी

नैनीताल से चालीस कि.मी. की दूरी पर स्थित अत्यंत रमणीक, मनोहारी एवं प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर मुक्तेश्वर। मुक्तेश्वर जैसा की नाम से ही विदित है, प्रसिद्ध है सदियों पुराने भगवान शिव के प्राचीन मंदिर "मुक्तेश्वर धाम" के लिए और इसी से इस शहर का नाम पड़ा। नैनीताल जहाँ एक और वर्ष भर पर्यटकों से भरा रहता है वहीं मुक्तेश्वर में शांति एवं सुकून का एहसास बना रहता है।

समुद्र तल से 2280 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह स्थल जहाँ एक ओर घिरा हुआ है बर्फ से आच्छादित पर्वत श्रेणियों से वही दूसरी ओर हैं दूर दूर तक फैली हुई वादियां। यहाँ से आप भारतीय हिमालय की कुछ सबसे ऊँची एवं पवित्र पर्वत चोटियों का अदभुत दृश्य देख सकते हैं।

हिमाच्छादित त्रिशूल, नंदा देवी, नंदकोट, ओम पर्वत एवं पंचाचूली शिखरों के यहाँ भव्य दर्शन होते हैं तथा साथ ही होता है एक अदभुत आध्यात्मिक अनुभव। सैकड़ों कि.मी. में फैली हुई यह चित्रमाला एक अलौकिक परिदृश्य प्रस्तुत करती है तथा मन को अनुभव कराती है एक विचित्र सी शांति एवं संपूर्णता। घण्टों तक इस अनुपम दृश्य को देखने के उपरांत आँखों को कहीं और टिकाना अत्यंत कठिन जान पड़ता है, जी हां यह है मुक्तेश्वर।

मुक्तेश्वर उत्तराखण्ड के नैनीताल जिले में कुमाऊँ की पहाडियों में 2280 मीटर (7500 फीट) की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ से नंदा देवी, नीलकंठ त्रिशूल आदि हिमालय पर्वतों की चोटियाँ दिखती हैं। यहाँ एक पहाड़ी के ऊपर शिवजी का मन्दिर है जो की 2315 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यहीं मंदिर 'मुक्तेश्वर मंदिर' के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर तक पहुंचने के लिए लगभग 100 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। यहां भगवान शिव के साथ ब्रह्मा, विष्णु, पार्वती, हनुमान और नंदी जी भी विराजमान हैं। मंदिर के बाहर लंगूरों का जमावड़ा लगा रहता है।

मुक्तेश्वर मंदिर के साथ ही चट्टानों में चौली की जाली है। यहां भी पहाड़ की थोड़ी–सी चढ़ाई करके पहुंचा जा सकता है। यह एक पहाड़ की चोटी है जिसकी सबसे ऊपर वाली चट्टान पर एक गोल छेद है। इसे 'चौथी की जाली' भी कहते हैं। कहा जाता है कि अगर कोई निःसंतान स्त्री इस छेद में से निकल जाए तो उसे संतान की प्राप्ति होती है।

पहाड़ की चोटी से घाटी का सुंदर नजारा दिखता है। अगर मौसम साफ हो तो मुक्तेश्वर में हिमालय की पर्वत चोटियों के पीछे से उगते सूरज का सुंदर नजारा देखा जा सकता है और नीलकंठ, नंदादेवी और त्रिशूल आदि पर्वतश्रेणियां भी देखी जा सकती हैं।

यहां इंडियन वेटरनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट है जहां जानवरों पर रिसर्च की जाती है। ये इंस्टीट्यूट सन् 1893 में बनवाया गया था। यहां एक म्यूजियम और लाइब्रेरी भी है जहां जानवरों पर रिसर्च से संबंधित पुराने समय का समान और किताबें सुरक्षित रखी गई हैं।

वैसे जब इच्छा करे आप मुक्तेश्वर जा सकते हैं फिर भी यहां आने का उचित समय मार्च से जून और अक्टूबर से नवंबर तक है। अगर गर्मियों में यहां जाएं तो हल्के ऊनी कपड़े और सर्दियों में जाएं तो भारी ऊनी कपड़े साथ लाना न भूलें क्योंकि गर्मियों में यहां का अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 15 डिग्री सेल्सियस और सर्दियों में अधिकतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 0 डिग्री सेल्सियस तक रहता है। जनवरी में यहां बर्फबारी भी हो जाती है।

मुक्तेश्वर जाएं तो यहां मिलने वाली सूखी आलू की सब्जी और प्याज के पकौड़े जरूर खा कर देखें। प्याज के पकौड़े तो चटनी के साथ खाए जाते हैं, जबकि आलू की चटपटी सूखी सब्जी ऐसे ही बिना चपाती के परोसी जाती है।

कुमाऊं की पहाड़ियों में बसा मुक्तेश्वर उत्तराखंड का एक खूबसूरत हिल स्टेशन है जो दिल्ली से करीब 350 किलोमीटर की दूर है। दिल्ली से सड़क मार्ग द्वारा मुरादाबाद–हल्द्वानी–काठगोदाम–भीमताल होते हुए लगभग आठ घंटे की ड्राइव करके मुक्तेश्वर पहुंचा जा सकता है। रेलमार्ग से जाना चाहें तो दिल्ली से काठगोदाम तक सीधी रेल सेवा है। काठगोदाम से आगे मुक्तेश्वर तक बस या टैक्सी आसानी से मिल जाती हैं।

मुक्तेश्वर का एक अन्य आकर्षण है चौली की जाली। लोक कथाओं के अनुसार बहुत पहले कैलाश मानसरोवर यात्रा मैं जाने वाला श्रद्धालुओं का एक जत्था यहाँ आकर आगे का मार्ग न मिलने के कारन रुक गया तब उन्होंने महादेव से प्रार्थना की जिससे उन्हें आगे का मार्ग मिला। चौली की जाली का अर्थ है "चट्टान में छिद्र" एवं यहाँ से दूर दूर तक फैली हुई वादियों और चोटियों के विहंगम दर्शन होते हैं। एडवेंचर के शौक़ीन लोग यहाँ रॉक क्लाइम्बिंग एवं रैपलिंग में भी हाथ आजमा सकते हैं।

चौली की जाली का निकट का चित्र

इसी से लगा हुआ है मुक्तेश्वर धाम मंदिर जहाँ कुछ सीढियाँ चढ़के पंहुचा जा सकता है। यह एक अत्यंत प्राचीन मंदिर है तथा यहाँ का वातावरण अत्यंत पवित्र एवं आध्यात्मिक है। मंदिर में ही यहाँ के पुजारी स्वामी जी का आश्रम है जो की बंगाल से हैं और कई वर्ष पहले आकर इस स्थान पर बस गए थे। यह स्थान ध्यान लगाने के लिए अत्यंत उत्तम है एवं महादेव का प्राचीन मंदिर चित्त को एक अद्भुत शांति एवं स्थिरता प्रदान करता है।

वास्तव में यह एक दिव्य स्थान है जहाँ की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन करना संभव नही है। लोकप्रिय हिल स्टेशंस की भीड़ भाड़ से दूर यह एक शांत एवं मनोरम स्थल है जहाँ से वापस आना सहज ही मुश्किल है। हिमालय के दूर दूर तक फैले ये शिखर प्रत्यक्ष ईश्वर की ही अभिव्यक्ति हैं एवं प्रकृति की विराटता का एहसास कराते हैं जिनके आगे जीवन का अस्तित्व गौण प्रतीत होता है एवं हमें अपने समान ही ऊंचा उठने के लिए प्रेरित करते हैं।

चूंकि मुक्तेश्वर एक छोटा–सा हिल स्टेशन है इसलिए यहां रहने और खाने के ढेर सारे विकल्प तो नहीं मिलेंगे पर रहने–खाने की कोई परेशानी भी नहीं होती है। मुक्तेश्वर के आस–पास देखने के लिए ढेर सारी जगह हैं। यहां से अल्मोड़ा, बिन्सर और नैनीताल पास ही हैं। अगर चाहें तो मुक्तेश्वर जाते हुए या मुक्तेश्वर से वापिस आते हुए भीमताल पर बोटिंग का आनंद लिया जा सकता है।

| | |
|---|---|
| **कैसे पहुंचे।** | पंतनगर सबसे समीप हवाईअड्डा है जो यहाँ से लगभग 100 किमी की दूर है यहाँ से आप टैक्सी या बस से पहुंच सकते हैं। दिल्ली से काठगोदाम ट्रेन से जो यहाँ से 70 किमी है। यहाँ से आप टैक्सी या बस से पहुंच सकते हैं। |
| **कहाँ ठहरें।** | पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस एवं कुमाऊँ मंडल विकास निगम का गेस्ट हाउस हिमालय का सबसे अच्छा व्यू प्रदान करते हैं। बजट होटल भी उपलब्ध हैं। |
| **मुख्य सीजन।** | नवम्बर – मई तापमान – सर्दियों में 0 –15, गर्मियों में 8 –23 |

सम्पर्क – vineet_uietk@yahoo-co-in

आस्था का पर्यटन

# 'परमार्थ की भूमि नैमिषारण्य'

**–डॉ. राजा राम**

नैमिष अथवा नैमिषारण्य भारत वर्ष के प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है। यह भारत वर्ष के राज्य उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 80 किमी. दूर स्थित जनपद सीतापुर में प्रसिद्ध गोमती नदी के तट पर है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार अट्ठासी हजार ऋषियों की तपोस्थली होने के कारण नैमिष तपोभूमि के नाम से विख्यात है। आदिकाल में देवताओं की यज्ञस्थली होने के कारण यज्ञ भूमि के नाम से भी इसे जाना जाता है। पुराणों में इसे धर्मारण्य कहकर सम्बोधित किया गया है।

**गंगायां योजने यज्ञे, काश्यांत चैवार्ध योजने।**
**कुरूक्षेत्रे क्रोशमेकं नैमिषे तु पदे–पदे।।**

वराह पुराण के अनुसार यहां भगवान द्वारा निमिष मात्र में दानवों का संहार होने से यह स्थान नैमिषारण्य कहलाया। वायु तथा कूर्मपुराण के अनुसार भगवान के मनोमय चक्र की नेमि (हाल) यहीं गिरी थी अतः एवं यह क्षेत्र नैमिषारण्य कहलाया। कूर्मपुराण, शिवपुराण, आदिपुराण तथा देवी भागवत में भी नैमिषरण्य का उल्लेख उसके सिद्ध स्थान के रूप में मिलता है–

**उक्तमनोमय चक्र स, सृष्ट्वा तमुवाचह।**
**क्षिप्तमेतन्मया चक्रमनुव्रजत चिरम।।**
**यत्रास्य नेमि शीर्येते स देश पुरूषार्षभा (कूर्मपुराण 41–7)**

शिवपुराण में नैमिषारण्य को तपस्या के लिए पवित्र क्षेत्र कहा गया है–

**यत्रास्यव शीर्यते नेमिः सःदेशस्तपसःशुभः। (शिवपुराण)**

नैमिषारण्य की पवित्रता का वर्णन देवी भागवत् में भी मिलता है–

**नेमिः सशीर्यते यत्र सः देश पावन स्मृत 8 (देवी भागवत 1–2–29)**

आदि पुराण के अनुसार भगवान विष्णु का मनोमय चक्र इसी वन में गिरने के कारण यह वन क्षेत्र नैमिषारण्य कहलाया–

**धूर्णन्मनोमयं चक्र शीर्यन्तेमऽस्मिेन रण्यके।**
**अतःपूतः विष्णु वन नैमिषंचेति विश्रुतम।। (आदिपुराण 1–21)**

नैमिषारण्य का प्राचीनतम उल्लेख वाल्मीकि रामायाण के युद्धकाण्ड की पुष्पिका में प्राप्त होता है। पुष्पिका में उल्लेख है कि लव और कुश ने गोमती नदी के किनारे राम के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर सात दिनों में वाल्मींकि रचित काव्य का गायन किया था।

महर्षि शौणक के मन में दीर्घकाल तक ज्ञान सत्र करने की इच्छा थी। उनकी आराधना से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने उन्हें एक मनोमय चक्र दिया और कहा इसे चलाते हुए चले जाओ जहां इस चक्र की नेमि (बाहरी परिधि) गिर जाय उसी स्थान को पवित्र समझकर वहीं आश्रम बनाकर ज्ञान सत्र करो–

**उक्त मनोमय चक्र स सृष्टवा तमवाचह**
**क्षिप्तमेतन्मय चक्र मनुव्रजत चिरम्**
**यत्रास्य नेमि शीर्येत स देश पुरूषर्षभाः (कूर्मपुराण 41–7)**

महर्षि शौणक के साथ अट्ठासी हजार ऋषि भी थे। वे सभी उस चक्र को चलाते हुए भारतवर्ष में घूमने लगे। गोमती नदी के किनारे एक तपोवन में चक्र की नेमि गिर गयी और वही चक्र उस भूमि में प्रवेश कर गया, वह स्थान चक्र तीर्थ कहलाया। यह 51 (इक्यावन) पितृस्थानों में से एक माना जाता है। यहां शौणक जी को इसी तीर्थ में सूत जी ने अट्ठारह पुराणों की कथा सुनाई। द्वापर में श्री बलराम जी यहां पधारे थे और भूल से उनके द्वारा रोमहर्षण सूत की मृत्यु हो गयी। बलराम ने उनके पुत्र उग्रश्रवा को वरदान दिया कि वे पुराणों के वक्ता हों और बलराम जी ने ऋषियों को सताने वाले राक्षस बल्वल का वध किया तथा सम्पूर्ण भारत वर्ष की यात्रा करके पुनः नैमिषारण्य आये और यज्ञ किया।

सृष्टि के आदिपुरूष मनु और सतरूपा ने इसी स्थान पर भगवान नारायण को पुत्र रूप में प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की थी। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस में नैमिषारण्य का उल्लेख सिद्धियों की भूमि के रूप में मिलता है–

**तीरथ वर नैमिष विख्याता। अति पुनीत साधक सिधिदाता**
**बसहिं जहां मुनि सिद्धि समाजा। तहं हियं हरषि चलेऊ मनु राजा। (1–142 रा.च.मा.)**

**प्रमुख दर्शनीय स्थलः**

चक्रतीर्थ

नैमिषारण्य रेलवे स्टेशन से लगभग एक मील दूर चक्रतीर्थ है। यहां एक सरोवर है जिसका मध्य भाग गोलाकार है इसका व्यास 120 फीट है। उसमें बराबर जल निकलता रहता है। उसके मध्य घेरे के बाहर स्नान करने का घेरा है। यही नैमिषारण्य का मुख्य तीर्थ है। इसके किनारे अनेक मन्दिर है। मुख्य मन्दिर भूतनाथ महादेव का है। चक्रतीर्थ की बड़ी महिमा है। एक बार अट्ठासी हजार ऋषि–मुनियों ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की जगत कल्याण के लिए तपस्या हेतु विश्व में सौम्य एवं शांत भूमि का निर्देश करें। उस समय ब्रह्मा जी ने अपने मन से एक चक्र उत्पन्न करके ऋषियों से कहा कि इस चक्र के पीछे चलकर उसका अनुसरण करो जिस क्षेत्र पर इस चक्र की नेमि (मध्य भाग) स्वतः गिर जाय सो समझ लेना पृथ्वी का मध्यभाग वही है तथा विश्व की सबसे दिव्य भूमि वही है।

सम्पूर्ण भूमण्डल की परिक्रमा के पश्चात चक्र देव इस अरण्य में पधारे इसलिए यह क्षेत्र नैमिषारण्य कहलाया। अष्टकोणीय यज्ञकुण्ड के स्थान पर ठहरकर ब्रह्ममनोमय चक्र देव ने कहा कि, 'मुनिवरों' यह स्थान परम पुनीत है जहां कुछ दूरी पर गोमती बह रही है यह स्थान सभी आपदाओं से मुक्त है तथा पितरों को मुक्ति देने वाला है। यहां पर किए गये तप, यज्ञ, श्राद्ध और अनुष्ठान आदि पुण्यों का फल कई गुना अधिक हो जाता है।' इतना कहकर चक्रदेव अष्टकोणीय यज्ञकुण्ड में प्रवेशकर छः पाताल तोड़ते हुए ज्योंही सातवें पाताल में प्रवेश किया त्योंही पृथ्वी से भयंकर जलधारा निकलने लगी। भयभीत होकर सभी ऋषि–मुनि पुनः ब्रह्मा जी के पास गये। ब्रह्मा ने ऋषियों से आदि शाक्ति ललिता देवी की प्रार्थना करने को कहा तदोपरान्त आदि शक्ति मां ललितादेवी ने चक्रदेव को साठे छः पाताल पर रोक दिया।

**महाभारत के अनुसार–**

**नैमिषे चक्र तीर्थेषु स्नात्वाभरत सप्तम।**
**सर्वव्याधि विनिर्मुक्तो ब्रह्मलोक स गच्छति।।**

इस पवित्र तीर्थ में स्नान करने से मुनष्यों की समस्त कामनाएं पूर्ण होती है। यहां पर स्नान करने से सम्पूर्ण शारीरिक व्याधियों का नाश होता है। सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या अर्थात सोमवती अमावस्या को यहां स्नान किया जाये तो उसे गोमेध का फल यज्ञ प्राप्तम होता है।

**संयुक्ता सोमवारेण अमावस्या भवेद्यदि।**
**चक्रतीर्थे नरः स्नात्वा सिद्धिं विन्दयति तत्क्षवात्।।**

**ललिता देवी मन्दिर–**

यह यहां का प्रधान मन्दिर है। पुराणों के अनुसार दक्ष प्रजापति के यज्ञकुण्ड में देवी सती ने जब अपने प्राण त्याग दिए तथा उनके शरीर को लेकर भगवान शिव सम्पूर्ण भूमण्डल में भटक रहे थे उसी समय भगवान विष्णु ने अपने चक्र से देवी के समस्त अंगो को काट दिया वे अंग इक्यावन (51) स्थानों पर गिरे जो देवी के शक्ति पीठ

के रूप में विख्यात हुए। नैमिषारण्य में सती का हृदय स्थल गिरा था। इसलिए यह स्थान इक्यावन शक्ति पीठों में से प्रमुख है। मां ललिता के दर्शन करने से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

## मिश्रित तीर्थ

सतयुग में एक बार देवता गण दैत्यों को पराजित कर, दधीचि ऋषि के आश्रम आए उन्होंने सपत्नीक आतिथ्य सत्कार किया। देवताओं ने लोकहित में अपने दिव्यास्त्रों की सुरक्षा का भार महर्षि को प्रदान किया। समय बीतता गया, देवताओं ने अपने दिव्यास्त्रों की सुध न ली। इससे चिन्तित होकर महर्षि ने शास्त्रास्त्र के सार तत्व का घोल बनाकर पान कर लिया और निश्चिन्त होकर तप करने लगे, दीर्घकाल के बाद शत्रुओं से भयभीत होकर देवगण अपने शस्त्रों को लेने आए तब महर्षि ने बताया कि सुरक्षा की दृष्टि से उन्होंने शस्त्रास्त्रों के सारतत्व को मंत्र शक्ति से पानकर लिया है अब यह शक्तियां मेरी अस्थियों में समाहित हैं। देवों ने महर्षि से प्रार्थना की कि शस्त्रों के अभाव में वे सभी दैत्यों से परास्त हो जायेंगे। दयालु ऋषि ने देवकार्य के लिए अपने प्राण त्यागने का निश्चय किया किन्तु शरीर त्यागने से पहले उन्होंने सभी तीर्थों के पवित्र स्नान से शरीर पवित्र करने की प्रबल कामना व्यक्त की। देवों ने समयाभाव का विचार करते हुए लोक कल्याणार्थ भूमण्डल के समस्त तीर्थों का नैमिष में आवाहन किया तथा उन तीर्थों के मिश्रित जल से मुनि के शरीर को स्नान कराकर तथा गायों से उनकी त्वचा चटवाकर अस्थि ग्रहण कर वज्र बनवाया तत्पश्चात अपने प्रबल शत्रु वृत्रासुर का संहार किया।

वह स्थान जहां महर्षि दधीचि के शरीर को तीर्थों के मिश्रित जल से स्नान कराया गया। वह जल कुण्ड मिश्रित तीर्थ कहलाया। इसी कुण्ड के पास महर्षि दधीचि की प्रसिद्ध समाधि है जहां उन्होंने योगक्रिया से प्राणों का विसर्जन किया था। जनकल्याण के लिए भगवान शिव से मां पार्वती ने कलियुग में तीर्थयात्रा के सम्बन्ध में पूछा तो भगवान शिव ने कहा, 'जो प्राणी कलियुग में नैमिष की चौरासी कोसीय यात्रा करेगा उसे तीनों लोकों की तीर्थयात्रा का अक्षय फल मिलेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि महर्षि दधीचि के शरीर त्याग से पूर्व की इच्छा को पूर्ण

करने के लिए तीनों लोकों के समस्त तीर्थ नैमिष की तपोभूमि में उनके समक्ष विराजमान हुए। अतः चौरासी कोसीय परिक्रमा से प्राणी को तीनों लोकों के समस्त तीर्थों का मनोवांछित लाभ मिलता है।

आज भी यह मान्यता है कि जो प्राणी भूमण्डल के सभी तीर्थों की यात्रा करने में सक्षम नहीं हैं वे नैमिषारण्य की चौरासी कोसीय परिक्रमा कर दान धर्म करेगें उन्हें समस्तं तीर्थों का फल प्राप्त होगा। प्रत्यक्ष रूप से समस्त तीर्थ अट्ठासी हजार ऋषि तथा तैतीस करोड़ देवता इसी भूमि में वास करते है। वामन पुराण के अनुसार–

**"पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानि सर्वाणि नैमिषे।"**

यह परिक्रमा फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की अमावस्या को चक्रतीर्थ में स्नान कर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को सिद्ध विनायक की पूजा–अर्चना कर आरम्भ होती है और यह यात्रा पन्द्रह दिनों तक चलती है। चौरासी कोसीय परिक्रमा करने से सम्पूर्ण तीर्थों का फल प्राप्त होता है और मनुष्य चौरासी लाख योनियों के भवबंधन से मुक्ति प्राप्त करता है। चौरासी कोसीय परिक्रमा में कुल ग्यारह पड़ाव है।

**पंचप्रयाग**– यह पक्का सरोवर है इसके किनारे अक्षयवट नामक वृक्ष है।

**व्यास शुकदेव स्थान**– एक मन्दिर में भीतर शुकदेव जी तथा बाहर व्यास जी की गद्दी है तथा पास में मनु, शतरूपा के चबूतरे हैं यहीं पर सृष्टि के आदि पुरूष मनु और उनकी पत्नी शतरूपा ने भगवान नारायण को पुत्र रूप में प्राप्त करने के लिए 23 हजार वर्षों तक घोर तपस्या कर भगवान को प्रसन्न किया था।

**अश्वमेध टीला**– टीले पर एक मन्दिर में भगवान श्रीकृष्ण और पाण्डवों की मूर्तियां हैं।

**पाण्डव किला**– वनवास काल में पाण्डव यहां आये थे और अपने अन्तिम दिनों में अर्थात अज्ञातवास के समय उन्होंने यहां कुछ समय निवास किया था। यहां श्रीकृष्ण तथा पाण्डवों की मूर्तियां हैं।

**सूतजी का स्थान**– एक टीले पर मन्दिर में सूतजी की गद्दी है तथा राधा–कृष्ण और बलराम जी की मूर्तिया हैं। व्यास जी से पुराणों की शिक्षा प्राप्त कर सूत जी ने इसी स्थान पर बैठकर शौणकादि 88 हजार ऋषियों को लोक शिक्षार्थ पुराणों की विस्तृत व्याख्या की।

**नारदनंद आश्रम**– यहां स्वामी नारदनंद जी का आश्रम तथा एक ब्रह्मचर्याश्रम भी है जहां आज भी ब्रह्मचारी प्राचीन पद्धति से शिक्षा गृहण करते हैं। आश्रम में साधक लोग साधना की दृष्टि से रहते है। धारणा है कि कलियुग में समस्त तीर्थ नैमिष में विद्यमान हैं।

**श्री सिद्धि विनायक मन्दिर**– मनुष्य की इस संसार रूपी यात्रा में विघ्नों का आना और उन विघ्नों पर विजय प्राप्त कर अपने उद्देश्य को प्राप्त करना मनुष्य की सच्ची सफलता है। सभी सांसारिक एवं आध्यात्मिक कार्यो में विघ्नों को दूर रखने के लिए आदि देव भगवान शिव ने अपने पुत्र गजानन को विघ्नों का स्वामी बनाकर धर्मारण्य में महात्माओं की रक्षा का भार सौंपा। इसलिए किसी भी आध्यात्मिक सांसारिक कार्य को करने से पहले श्री सिद्धि विनायक जी पूजा का अत्यंत महत्व है।

**व्यासगद्दी**– व्यासगद्दी नैमिषारण्य का एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। इसी स्थान पर पाराशर मुनि की उत्पत्ति शक्ति पत्नी अदृश्यन्ती से हुयी थी, जो व्यास जी के पिता थे। कलियुग में मनुष्य अल्पायु तथा अल्पमेधावान होने के कारण सम्पूर्ण वेद को धारण करने में असमर्थ है। इन बातों का ज्ञान व्यास जी को बहुत पहले हो चुका था अतः उन्होंने वेदों को चार भागों में विभाजित कर पुनः इसे छः (6) शास्त्रों व 18 पुराणों में विभाजित कर लोक के लिए सुलभ बना दिया जिससे सभी वेदों के अर्थ को सुगमता पूर्वक समझा जा सके।

## आदि गंगा गोमती

गोमती नदी को 'गोमती' अथवा 'आदि गंगा' के नामों से भी जाना जाता है। यह नैमिषारण्य की भौगोलिक स्थिति की परिचायक है। पुराणों में एकादशी के दिन गोमती नदी में स्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है। स्कन्दपुराण के अनुसार यदि कलियुग में गोमती में एक दिन भी स्नान कर लिया जाय तो सभी तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त होता है।

**रामधाम मंदिर**– यहां पर त्रेतायुग में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम के विद्याकाल से लेकर राज्य शासन के बाद तक पांच बार यहां आने का उल्लेख पुराणों से प्राप्त होता है इसी कारण इस स्नान को रामधाम के नाम से जाना जाता है।

**हनुमान गढ़ी**– यह एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। यहां पर लंका की ओर मुख किए हुए हनुमान जी की विशाल प्रतिमा है।

**रुद्रावर्त तीर्थ**– गोमती नदी के तट पर एक प्राचीन शिव मंदिर के ध्वन्षावशेष आज भी देखे जा सकते है; इसकी सिद्धता देखते ही बनती है। मंदिर के समीप तट पर वेलपत्रो एवं फलों का ऊँ नमः शिवाय के पंचाक्षरी मंत्र के उच्चारण के साथ जल में अर्पित करने से वह बिना प्लावन किये जल में समाहित हो जाती है तथा उन्ही फलों में प्रसाद के रूप में कुछ फल बाहर आ जाते हैं।

**हत्याहरण तीर्थ**– बृत्त्रासुर वध के कारण देवराज इन्द्र ब्रह्महत्या के दोष से अत्यन्त दुखी थे तत्पश्चात वह नैमिषारण्य आये और इसी स्थान पर पैर के अंगूठे के सहारे खड़े होकर दोनो बाहें ऊपर उठाकर सूर्याभिमुख होकर कठिन तप कर भगवान शिव को प्रसन्न किया। भगवान शिव ने जब वर मांगने को कहा तब इन्द्र ने ब्रह्महत्या के पाप शन्ति का उपाय पूँछा "भगवान शिव ने एक सरोवर की ओर इंगित करते हुए कहा इसमें स्नान करने से तुम ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त हो जाओगे। भगवान शिव की आज्ञा पाकर देवराज इन्द्र ने उस सरोवर में स्नान किया और ब्रह्महत्या के दोष से मुक्त हो गये तथा इसी स्थान पर इन्द्रेश्वर महादेव की स्थापना की। त्रेतायुग में रावण का संहार करने के उपरान्त भगवान राम ने इस सरोवर में स्नान कर तथा अश्वमेध यज्ञ कर ब्रह्महत्या के दोष से मुक्त हुए। आज भी लोग गौहत्या के दोष से मुक्ति पाने के लिए यहां स्नान करने आते है।

**अश्वमेध यज्ञशाला एवं लक्ष्मीनारायण मंदिर**– पौराणिक गाथाओं के अनुसार नैमिषारण्य में गोमती के तट पर सहस्र अश्वमेध, बाजपेय, अग्निष्टोरम, विश्वजित गोमेधादि आदि यज्ञों का सांगोपांग आयोजन किया जाता था। यज्ञों की यह परम्परा आज भी नैमिषारण्य में देखी जा सकती है। पद्मपुराण के अनुसार–

**तस्तु गोमती तीरे नैमिषे जनसंसदि**
**इयाज बाजिमेधेन राघवा; परिवीरहा**

**श्रीः**

**श्रीमते रामानुजाय नमः**

पद्मपुराण में कहा गया है कि गोमती नदी के किनारे जनसंसद तथा अश्वमेध यज्ञ का आयोजन मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम ने किया

बाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड में श्री राम द्वारा सम्पादित किए हुए अश्वमेध यज्ञों का वर्णन मिलता है–

**यज्ञवाउश्च सुमहान गोमत्या नैमिषवने। अनुभूव महायज्ञं नैमिषे रघुनन्दन।।**

**(नैमिषारण्य क्षेत्र में वट वृक्ष की छाया में रघुनन्दन राम ने महायज्ञ का आयोजन किया)**

**देवदेवेश्वर महादेव मंदिर**– ब्रह्महत्या के दोष से मुक्त होने के लिए देवराज इन्द्र ने जिस स्थान पर तपस्या की थी वह स्थल आज देव देवेश्वर महादेव मंदिर के नाम से विख्यात है। समस्त देवों के देव भगवान महादेव अपने भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण करते है। इस मंदिर के समीप ही नागेश्वर महादेव मंदिर तथा रामेश्वर महादेव का मंदिर है। रामेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण भगवान राम ने किया था। रामेश्वेर महादेव मंदिर के पास गोमती नदी का प्रसिद्ध राजघाट है, जहां भक्तजन स्नान दान करते हैं।

सार रूप में नैमिषारण्य तीर्थ सभी तीर्थो का फल प्रदान करता है। नैमिषारण्य तीर्थ मनुष्य के समस्त पापों एवं व्याधियों का समूल नाश करता है तथा यहां पर किए गये पिण्ड श्राद्ध से पितरों को अक्षय तृप्ति होती है। यहां चौरासी कोस में की गयी परिक्रमा मनुष्य को चौरासी लाख योनियों से मुक्ति प्रदान करती है। त्रेतायुग में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम ने यहां पर अश्वमेध यज्ञ किया। इस पावन पुनीत यज्ञमय धरती पर प्रवेश करने मात्र से ही मनुष्य को एक आध्यात्मिक शान्ति और ज्ञान की प्राप्ति होती है। इस अरण्य वन क्षेत्र में ब्रह्ममुहूर्त से ही मंत्रोच्चारण ही ध्वनियां गुजायमान होने लगती हैं। जिसका मन और मस्तिक पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

यहां सोमवती अमावस्या, नवरात्रि तथा फाल्गुन माह की अमावस्या से पूर्णिमा तक विषेश आकर्षण रहता है!

**कैसे पहुंचे :–**

जनपद सीतापुर स्थित नैमिषारण्य पहुंचने के लिए उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के कैसरबाग बस अड्डा से उत्तर प्रदेश परिवहन निगम द्वारा संचालित बसों, टैक्सी तथा वैन एवं रेलमार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है। यहां सोमवती अमावस्या, नवरात्रि तथा फाल्गुन माह की अमावस्या से पूर्णिमा तक विशेष आकर्षण रहता है।

सहायक हिन्दी प्रोफेसर,
रामेश्वर दयाल, राम किशोर मिश्र, महाविद्यालय,
कोरौना, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

विचारणीय

# पर्यटन क्रांति ..... मंथन जरूरी है।

**–संदीपन संकृत्यायन**

समय बदल चुका है। परिवेश, सोच, परिधान, खान–पान ..... कितने नाम गिनाउॅ मैं, आजादी के बाद आज का भारत, 21 वीं सदी का भारत हर स्तर पर बदलाव देखने को मिला है। 40 और 50 के दशक में प्राथमिकता के आधर पर देश के अग्रणी नेताओं ने कई तरह के नारे दिए। ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूॅगा'', ''जय जवान जय किसान''। प्राथमिकता के आधर पर देखें, तो ये नारे राष्ट्रहित में जरूरी थे। इन नारों से नई उर्जा एवं उमंग का संचार हुआ और हमारे देश वासियों ने हूंकार भर कर राष्ट्र की उन सभी प्राथमिकताओं को पूरा किया।

आज का भारत 21 वीं सदी का भारत। आज हमें फिर से एक ऐसे ही उर्जावान नारे की जरूरत है, पर्यटन के क्षेत्र में। मैं ऐसा इसलिए नहीं कह रहा हूॅ कि मैं आतिथ्य सत्कार से जुड़ी भूमिका निभाता हूॅ एवं और मैं अन्य प्राथमिकता को नजर अंदाज कर रहा हूॅ। मैं ऐसा इसलिए भी नहीं कह रहा हूॅ कि इस क्षेत्रा में कोई कदम नहीं उठाए गए हैं। मुझे भली भांति याद है ''Incredible India'' का नारा। हर कोई अपने अपने स्तर पर अथक प्रयास में लगा है कि पर्यटन के क्षेत्र में भी भारत देश अग्रणी बने, परंतु अपने दिल की गहराईयों से हम सभी समझते हैं कि भारत पर्यटन की उॅचाई अभी भी अन्य देशों के पर्यटन के समक्ष काफी कमजोर है।

भारत की विविधता, अनेकता और परिपूर्णता इसे एक ऐसा गुलदस्ता बनाते हैं जो कि हर प्रकार के रंग बिरंगे पुष्पों से सुशोभित है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा भूखण्ड होगा जहॉ कि इतनी भौगोलिक समाजिक विविधता देखने को मिले। आज का हिन्दुस्तान मात्र सपेरों और जादूगरों का हिन्दुस्तान नहीं है। आधुनिक हरे भरे ग्राम क्षेत्र, हिमखण्डों से सुशोभित, मरूभूमि की तन्हाईयॉ, सागर के लहरों की अठखेलियॉ, जंगलों की प्राकृतिक परिवेश .... क्या नहीं है यहॉ। सब कुछ होते हुए भी कोई कमी खल रही है। अब जरूरी हो गया कि उस कमी को पहचाना जाए और मंथन किया जाए आखिर पर्यटन के क्षेत्र में छोटे–छोटे देश भी हमसे इतने आगे क्यों है?

1. **आतंकवाद व आंतरिक सुरक्षा का मामला** – आज देशी व विदेशी पर्यटक अलगाववाद, आतंकवाद के कारण कशमीर, छत्तीसगढ़ व अन्य स्थलों का भ्रमण नहीं कर रहे है ... मंथन जरूरी है

2. **''अतिथी देवः भवः'' की नासमझता** – कहीं ऐसा तो नहीं कि इस भौतिकवादी युग में हमें एक पर्यटक, पर्यटक की तरह प्रतीत न होकर, सिर्फ पैसे छापने की मशीन ही प्रतीत होता है। होटलों के दलाल, टैक्सी वालों की मनमानी, दुकानदारों की पर्यटकों के लिए बढ़े हुए दाम इत्यादि ऐसे बहुत से उदाहरण है जिसें हम सभी ने अपने ऑखों से देखा है। कभी आक्रोश भी रहा होगा ऑखों में, तो कभी लाचारी भी ... मंथन जरूरी है

3. **स्वच्छ भारत अभियान, सफलता व असफलता के द्वंद में**– अपने देश को हम स्वच्छ रखते है कि नहीं? अगर साफ रखते हैं तो क्या हम सफाई के अंतराष्ट्रीय स्तर के आस–पास पहूॅच गये हैं। देश की सफाई की शुरूआत अपने घर से शुरू तो होती है पर सड़क पर आते ही खत्म भी हो जाती है। हमें जितना सफाई पसंद अपने घरों से है, उतना स्वच्छता प्रेम देश के प्रति शायद नहीं है। घर का कचड़ा तो निकाल दिया पर निकाल कर उसे देश सड़क पर फेंक दिया। भारत वर्ष का पर्यटन विकास के आड़े देश की गंदगी तो नहीं? ... मंथन जरूरी है

4. **पर्यटकों की स्थानीय सुविधा व सुरक्षा**– जब किसी दूसरो देश से एक पर्यटक भारत आता है, तो उसे यहॉ क्या मिलना चाहिए और उसे दरअसल क्या मिलता है। वे तो एक सुखद एहसास एवं सवर्णिम याद के लिए यहॉ आते हैं। और एक एक देशवासी जब प्रयासरत है कि पर्यटक को वही मिले जिसकी कामना लेकर वो भारत आया है, मगर फिर भी यह देख सुन का अफसोस होता है कि पर्यटक दुखी है। पर्यटक के साथ बलात्कार हो गया। पर्यटक छीना झपटी के शिकार बन गए। सुविधा के नाम पर क्या हम उस पर्यटक की ऑकांक्षाओं को पूरा करने में समर्थ है। जिस सुविधा को वो भारत के आधुनिक हवाई अडडों पर और शहरों में इस्तेमाल कर रहा है। यहां उल्लेख करना चाहता हूं कि कुछ शहरों में होटल अग्रिम बुकिंग कराने पर पर्यटको को हवाई अड्डे या रेलवे स्टेशन से मुफ्त पिक एंड ड्राप सुविधा देते हैं। साथ ही कुछ शुल्क पर शहर का भ्रमण कराने के लिए अपनी गाड़ियां उपलब्ध कराते हैं। इससे पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है और वे दलालों से बचते हैं। क्या हम उसी स्तर की सुविधा छोटे होटलों या ग्रामीण इलाकों में भी दे पाने में सक्षम हैं। शायद सक्षम तो हैं पर सुविधा प्रदान नहीं कर पा रहे है, क्यों? ... मंथन जरूरी है

**शांति स्तूप वैशाली**

5. **पर्यटन क्षेत्राों का सीमितीकरण**– वैसी कौन सी वजह हो सकती है कि आज एक पर्यटक भारत के चंद शहरों को ही पर्यटन स्थल मानता है। कहीं हमने ही तो नहीं घोड़ागाड़ी के घोड़े की तरह अपनी देखने की क्षमता को सीमित कर लिया है। भारत में पर्यटन स्थलों को सोचने भर से हमारे दिमाग में गोवा, कश्मीर, हिमाचल, दक्षिण भारत के कुछ शहर ही आते हैं। आखिर क्यों, हमें यह भी तय करना होगा कि जो वैसे इलाके हैं जिसमें पर्यटन की अपार क्षमताएं हैं मगर उपेक्षित है, वहॉ की मूलभूत संरचना/सुविधाओं को सुधारा जाए। उदाहरण के तौर पर यदि कच्छ का रण में पर्यटकों को लुभाया जा सकता है, तो बिहार स्थित मोकामा के टाल क्षेत्र (जो कि अपने आप में सैकड़ों मील का अदभुद नजारा है) पर्यटकों का जमावड़ा क्यों नहीं लग सकता। बुद्ध सर्किट एवं जैन सर्किट जो कुछ भी विकास हुआ है, बिहार के मिथिलांचल स्थित रामायण सर्किट का विकास क्यों भेद भाव का शिकार रहा है। गोवा को समुद्री तट है तो गंगा का दियारा क्यूॅ नहीं। हम चार कर सकते हैं तो चौबिस क्यों नहीं। मंथन जरूरी है

6. **पर्यटन क्षेत्रों का राजनितीकरण**– इस विषय पर जितना कम बोला जाए उतना ही उचित होगा। मछली भी कॉटे में तभी ही पफंसती है जब वो मुॅह खोलती है। मैं फिर भी यह बोलने का जोखिम जरूर उठाउॅगा कि विकास सही मायनों के विकास तभी है जब वह चहुमूखी हो। हर कदम, हर क्षेत्र, हर शहर, हर गॉव, हर पहाड़ एवं पहाड़ी, हर नदी, हर तालाब पर पर्यटन की संभावनाएं हैं। हम ऑखों को तो

खोले। हम राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार के द्वंद से बाहर निकले। हम इस पार्टी और उस पार्टी के दायरे की दिवार तो तोड़े। राष्ट्रगान की इन पंक्तियों में वो पुकार है

**पंजाब सिंधु गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंगा**
**बिंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंगा**

जहाँ कि विविधता में ही एकता छिपी है, क्या वहॉ पर्यटन की चहुमूखी विकास संभव है। **मंथन जारी है**

7. मैं अपने विचार व लेखनी को नकारात्मक उर्जा से बचाना चाहता हूँ। यों तो मैंने अभी तक केवल उन मुद्दों का जिक्र किया जो कि पर्यटन हित में नहीं है। अजगर स्वरूपी चुनौती है। फिर भी मुझे विश्वास है कि अब वह युग आ चुका है कि आज फिर से वैसा कोई नारा उठाया जाए, जो कि पर्यटन की रगों में फिर से जोश का संचार कर दे। जब छोटे–छोटे, सूदूर पूर्व के देश, यूरोप के देश या अमीरात के देशों में पर्यटकों का हूजूम उमड़ सकता है तो भारत तो उनके लिए एक सम्पूर्णता है। भारत में उन्हें सूदूर पूर्व के सागर, यूरोप की बर्फिली वादी और अमीरात के मरूस्थल, एक सिंगल पैकेज में ही मिल जाएगा। ''भारत – एक सम्पूर्ण एहसास''। मंथन जरूरी है

**दिघा** : पर्यटन की दृष्टि से कम ज्ञात स्थान

मैंने जितने भी चुनौतियों के विषयों में लिखा है, ऐसा नहीं है कि उन विषयों पर काम नहीं हुआ है। हर सरकार, हर विभाग, हर भारतवासी का योगदान रहा है सुधार की दिशा में। शायद और सुधार की आवश्यकता है। सुधार करे, अविष्कार हो जाएगा, अविष्कार करें, चमत्कार हो जाएगा। हम भी पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणी हो सकते हैं। अभी भले ही यह दूर की कौड़ी लगे, मगर यह चमत्कार असम्भव नहीं है। जरूरत अब मंथन की नहीं, जरूरत है जागने की और सकारात्मक कदम बढ़ाने की।

व्याख्याता होटल प्रबंधन संस्थान,
हाजीपूर, वैशाली (बिहार)

# राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 (यथा संशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा–3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः–

1. **संक्षिप्त नामएविस्तार और प्रारम्भ––**

क) इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है।

ख) इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

ग) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. **परिभाषाएं**–– इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न होः–

क) 'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है;

ख) 'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थातः–

i) केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

ii) केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

iii) केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई

**कार्यालय;**

ग) 'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

घ) 'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

ङ) 'हिन्दी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है;

च) 'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

छ) क्षेत्र 'ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण *और दीव तथा दादरा और नगर हवेलीसंघ* राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

ज) 'क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

झ) 'हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है।

**3. राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि–**

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से–

   क) क्षेत्र ''ख'' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगाः परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे;

   ख) क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

3. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

4. उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क'या 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं। परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्याएहिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर अवधारित करे।

**4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि–**

क) केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

ख) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय–समय पर अवधारित करे;

ग) क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

घ) क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर अवधारित करेय

ङ) क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर अवधारित करे;

**परन्तु जहां ऐसे पत्रादि––**

(i) क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

(ii) क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा; परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

**5. हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर–**

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे।

**6. हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग–**

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

**7. आवेदनएअभ्यावेदन आदि–**

1) कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।

2) जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।

3) यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

**8. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना**

1) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

2) केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

3) यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

4) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा, जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।

**9. हिन्दी में प्रवीणता– यदि किसी कर्मचारी ने–**

क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

ग) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

**10. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान–**

1) क) यदि किसी कर्मचारी ने–

(i) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

(ii) केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीक्षा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

(iii) केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

ख) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया हैय तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

2) यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

3) केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

4) केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

**11. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि–**

1) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

3) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

**12. अनुपालन का उत्तरदायित्व –**

1) केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह––

(i) यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और

(ii) इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2) केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय–समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

विशेष लेख

# हिंदी के बढते कदम – आज

–मंजिता

किसी भी राष्ट्र की पहचान उसके भाषा और संस्कृति से होती है और पूरे विश्व में प्रत्येक देश की अपनी भाषा एवं संस्कृति है जिसकी छांव में लोग पले–बढ़े होते हैं।

हमारे देश की मूल भाषा हिंदी है लेकिन भारत में अंग्रेजों की गुलामी के बाद हमारे देश की भाषा पर अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य हुआ, भारत देश तो आजाद हो गया परंतु भारत पर अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य अभी भी कायम है।

भारत की मूल भाषा 'हिंदी' है और यदि आप भारत के किसी भी कोने में चले जाएंगे अगर आपको हिंदी आती है तो आपका काम आसान हो जाता है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो पूरे भारत को एकता के सूत्र में जोड़ती है क्योंकि भारत की मूल भाषा है संस्कृत और उससे निकली है हमारी हिंदी।

भारत में कई भाषाएं बोली जाती है, विविध भाषी इस देश के लिए कहा गया है।

''कोस कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वाणी'' अर्थात हमारे देश भारत में हर एक कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और चार कोस पर वाणी भी बदल जाती है।

अब यह कहावत देश में बेमानी होने लगी है। पानी का जिक्र तो हम नहीं कर रहे हैं, पर वाणी अर्थात भाषा बदलते हुए भी यदि आप हिंदी जानते हैं तो देश में आपके सामने कोई समस्या नहीं होती है।

दक्षिण भारत के सूदूर के किसी गांव में शायद आपको हिंदी बोलने समझने वाले न मिलें, परंतु वहां भी कोई न कोई आपकी बात समझने वाला जरूर मिल जाएगा। कुछ लोगों को आश्चर्य हो सकता है कि भारत के सुदूर पूर्व में पोर्ट ब्लेयर से ले कर हैवलॉक द्वीप और निकोबार तक में भी आपको हिंदी बोलने वाले लोग मिल जाएंगे। इतना ही नहीं, कार निकोबार में अंग्रेजी बोलने पर आपको कठिनाई हो सकती है। पूर्वोत्तर भारत तो किसी न किसी रूप में हिंदी से जुड़ा है। गुवाहाटी से अरूणाचल के तवांग तक चले जाईए, हिंदी बोलने पर आपको किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है। इधर मिजोरम की ओर आ जाइए सड़क किनारे की चाय की दुकान से स्टार होटलों तक में कोई मुश्किल नहीं।

अब तो दक्षिण के एक ऐसे राज्य में जहां हिंदी का विरोध होता था, हिंदी समझने और बोलने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। कोयम्बतूर से लगभग 20 किलो मीटर दूर एक कस्बा है सुलुर। बाजार में एक महिला कुछ लंबा सा तल रही थी, आसपास अच्छी महक थी। सोचा कि जरूर कुछ स्वादिष्ट है। मैंने अपनी तमिल दिखाने के लिए उससे पूछा ''इत्तु एन्ना'' (यह क्या है)। महिला ने मेरी ओर गौर से देखा और उत्तर दिया, ''केले का पकौड़ा'' (पूरे कच्चे केले का पकौड़ा) ''दस रूपए का एक'' मैं हैरान। पर मन में बड़ी खुशी हुई। सही अर्थों में कहा जाए तो अगर हम अपने मूल भाषा हिंदी का प्रचार प्रसार करे तो निश्चित ही विविधता वाले भारत को अपनी हिंदी भाषा के माध्यम से एकता में जोड़ा जा सकता है।

किंतु सभी भाषाओं में सबसे अधिक बोली जानी वाली हिंदी ही है।

मंजिता
प्रथम वर्ष, होटल प्रबंध संस्थान,
हैदराबाद

संस्मरण

# ''इश्क–ए–दिल्ली''

–सपना भाटिया

शनिवार को बैठे–बैठे बोर हो रहे थे, तो सोचा कुछ नया किया जाए। बहुत देर तक समझ नहीं आया कि क्या किया जाए। फिर अचानक ध्यान आया कि क्यों न पुराना किला देखने जाया जाए। बस इतना दिमाग में आते ही आनन–फानन में जाने की तैयारी कर ली, बच्चे भी घूमने के नाम पर खुश हो गए, गाड़ी उठाई और पहुँच गए पुराना किला। वहां जाकर चिड़ियाघर की पार्किंग में गाड़ी लगायी और टिकट लिया, सिर्फ पांच रुपए का टिक्ट और हम पुराने किले के अन्दर। वहां जाते ही पता चला कि अभी थोड़ी देर के बाद यहां साउंड एंड लाइट शो होने वाला है, तो सोचा आए हैं, तो शो भी देख ही लिया जाए। सिर्फ अस्सी रुपये की टिकट ली और बैठ गए शो देखने।

जब शो शुरू हुआ, 'इश्क–ए–दिल्ली '...तो आंखें खुली रह गईं। क्या शानदार ढंग से दिल्ली की कहानी बयान की गई थी। शुरू से लेकर अब तक दिल्ली के बसने और उजड़ने की कहानी थी। जैसे–जैसे कहानी आगे बढ़ती गई, ऐसा लगा मानो हमारे सामने वो पूरी कहानी जीवंत हो उठी हो। आओ देखें, 'हमारी दिल्ली कितनी सुन्दर थी, कितनी सुन्दर है और कितनी सुन्दर रहेगी!'

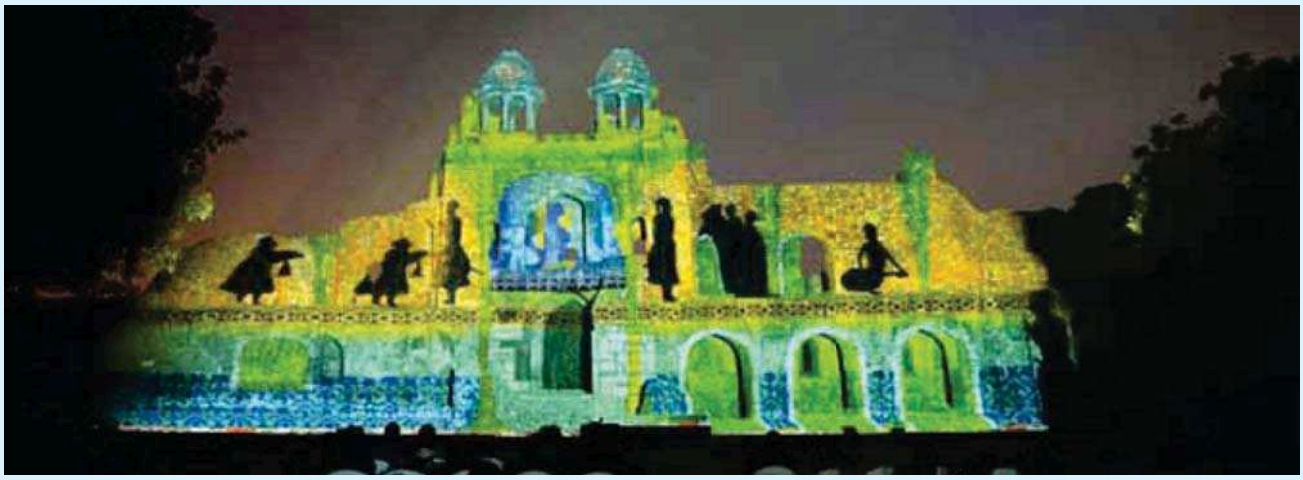

इश्क–ए–दिल्ली एक विशाल मल्टीमीडिया प्रदर्शन और भारत की प्रथम स्थायी प्रोजेक्शन आर्ट स्थापना है, जिसमें लगभग एक घंटे की अवधि में दिल्ली के इतिहास, प्रेम, बहादुरी, निष्ठा, मुगल साम्राज्य, साहित्य, शायरी, युद्ध, जीत, हार को तकनीकी नवीनता, क्रिस्टी प्रोजेक्टरों, बेमिसाल स्पेशल इफैक्ट्स के जरिए ठीक उसी प्रकार प्रस्तुत किया गया है, जैसे यू एस के ''लाइट ऑफ लिबर्टी'', ''पिरामिड ऑफ गिज़ा'', इजिप्ट के ''एडफु प्रदर्शन'' में दिखाया जाता है। रेखा भारद्वाज और कैलाश खेर जैसे सुप्रसिद्ध गायकों ने इसमें अपनी गायकी की छटा बिखेरी है।

प्रतिदिन हिंदी और अंग्रेजी में होने वाले इस प्रदर्शन की प्रस्तुति एवं निष्पादन का श्रेय जाता है, भारत पर्यटन विकास निगम को, जो भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के सौजन्य से अनवरत् दिल्ली के इस अतुल्य सफ़र को जीवंत करता आ रहा है।

**भारत पर्यटन विकास निगम लि.,**
नई दिल्ली

# 350 वॉ प्रकाश पर्व–बिहार पर्यटन

**–मुर्तजा कमाल**

गुरू पर्व सिख समुदाय के दसवें धर्म–गुरू (सतगुरू) गोविंद सिंह जी के जन्म उत्सव के रूप में मनाया जाता है। धर्म–गुरू (सत गुरू) गोविंद सिंह जी का जन्म पौष शुदि सप्तमी संवत 1723 तदनुसार (22 दिसंबर, 1666) में बिहार के पटना शहर में गुरू तेग बहादुर और माता गुजरी के घर हुआ था। बचपन में इन्हें सभी प्यार से ''बाला प्रीतम'' कह कर पुकारते थे लेकिन इनके मामा इन्हें गोविंद की कृपा से प्राप्त मानकर गोविंद नाम से पुकारते थे। गोविंद जी का पूरा बचपन बिहार में बीता। जब 1675 में पिता तेगबहादुर जी ने दिल्ली में हिंदू धर्म की रक्षा के लिए, अपनी जान की कुरबानी दे दी तो उसके बाद मात्र नौ वर्ष की उम्र में गोविंद सिंह जी ने गुरू की गद्दी धारण की। गुरू गोविंद सिंह जब पैदा हुए थे उस वक्त उनके पिता तेग बहादुर बंगाल में थे। उन्होंने अपने बेटे का नाम गोविंद राय रखा था। उसके बाद सन् 1699 को बौसाखी वाले दिन गुरूजी पंज प्यारों से अमृत छक कर गोविंद सिंह जी बन गए। उनके दरबार में 52 कवियों तथा लेखकों की उपस्थिति रहती थी, इसी लिए उन्हें ''संत सिपाही'' भी कहा जाता था।

गुरू पर्व के अवसर पर गुरूद्वारों में भव्य कार्यक्रम सहित गुरू ग्रंथ साहिब का पाठ किया जाता है। सामूहिक भोज (लंगर) का वितरण श्रृद्धालुओं के बीच किया जाता है। गुरूद्वारों में धार्मिक अनुष्ठानों का सिलसिला शुरू होकर देर रात तक चलता रहता है, वहां इसके तहत गुरूवाणी का पाठ, शब्द कीर्तन किया जाता है। खालसा पंथ के लिए यह विशेष महत्व रखता है क्योंकि गुरू गोविंद सिंह जी को सिख धर्म का सबसे वीर योद्धा और गुरू माना जाता है। इसी दिन गुरू जी ने निर्बलों को अमृतपान करवा कर शस्त्रधारी कर उनमें वीर रस भरा। उन्होंने ही खालसा पंथ में ''सिंह'' उपनाम लगाने की शुरूआत की।

इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि उन्होंने ही मुगल शासकों के अत्याचार से मुक्ति पाने के लिए सिख समुदाय के लोगों की मदद की थी और मुगलों, उनके सहयोगियों के साथ लगभग 14 युद्ध लड़े थे। गुरू गोविंद सिंह जी की यह इच्छा थी कि उनके मृत्यु के बाद भी उनके सहयोगियों में से एक नांदेड़ में ही रहें तथा गुरू के लंगर को निरंतर चलाए तथा बंद न होने दें। गुरू की इच्छा के अनुसार यहां सालभर लंगर चलता है। महाराष्ट्र के नांदेड़ शहर में स्थित ''हजूर साहिब सचखंड गुरूद्वारा'' में सिखों के दसवें तथा अंतिम गुरू गोविंद सिंह जी ने अपने प्रिय घोड़े दिलबाग के साथ अंतिम सांस ली थी।

हिन्दी कलेंडर के हिसाब से गुरू गोविंद सिंह की जयंती इस साल 5 जनवरी, 2017 को मनाई गई जिसे बिहार में 22 दिसंम्बर, 2016 से 05 जनवरी, 2017 तक 350 वॉ प्रकाश पर्व के रूप में बहुत धूम धाम से मनाया गया।

350 वें प्रकाश पर्व के आयोजन में पर्यटन विभाग, राज्य के ऐतिहासिक स्थलों की ब्रांडिंग में जुट गया था। इस गुरूपर्व में श्रृद्धालुओं की सुविधा के लिए विभिन्न स्थलों के लिए निःशुल्क बस सर्विस की सुविधा पर्यटन विभाग द्वारा की गई थी ताकि किसी भी श्रृधालु को गुरूद्वारा, पटना साहिब के दर्शन करने में परेशानी ना हो एवं सभी दर्शनिय स्थलों को बहुत सुन्दरता के साथ सजाया गया था। गुरू पर्व– प्रकाश पर्व के दौरान बिहार राज्य पथ परिवहन निगम की ओर से संचालित की जाने वाली लगभग 150 बसों पर पर्यटन व ऐतिहासिक स्थलों की ब्रांडिंग की गई एवं बिहार पर्यटन को प्रसिद्ध करने के लिए पूर जोर कोशिश की गई। पर्यटन को देश विदेश के लोगों के सामने लाने के उददेश्य से महत्वपूर्ण स्थलों के पोस्टर लगाए गए ताकि सभी पर्यटक बिहार में स्थित पर्यटन स्थलों की जानकारी ले सकें एवं वहॉ के दृश्यमय का लाभ उठा सकें। बिहार पथ परिवहन निगम की बर्सों, पटना जंक्शन एवं विभिन्न जगहों पर उकेरी हुई आकृर्तियॉ पर्यटकों के लिए आकर्षक का केन्द्र बनी हुई थी। सभी चौक चौराहों एवं सड़कों पर रौशनी की पूरी व्यवस्था थी और सफाई का घ्यान रखा गया था ताकि पर्यटकों के दिलों में बिहार की एक खुबसुरत छवि बने। देश विदेश से लगभग 5 लाख पर्यटक इस प्रकाश पर्व के अवसर पर बिहार आये थे जिनके ठहरने के लिए बिहार सरकार के द्वारा विभिन्न जगहों जैसे गांधी मैदान, बाई पास, कंगन घाट इत्यादि जगहों पर टेन्ट सिटी बनाया गया था, जिसे स्टार होटलों में दी जाने वाली सुविधओं के अनुरूप बनाया गया था। ठंड के कारण पर्यटकों के लिए गीजर आदि की भी व्यवस्था की गई थी। इस आयोजन में करोड़ों रूप्ये खर्च हुए जिसमें कुछ राशि भारत सरकार द्वारा भी दी गई थी। इस महान प्रकाश पर्व में विशिष्ट अतिथि के रूप में माननीय प्रधनमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी बिहार आये थे।

बिहार के लोगों ने भी हरसंभव सहायता देने की कोशिश की एवं अतिथियों के स्वागत में कोई कसर नहीं छोड़ी। इससे देसी और विदेशी तीर्थयात्रियों यानि पर्यटकों के दिलों में बिहार की बहुत अच्छी उभरी है। अतिथियों के आतिथ्य सत्कार में होटल प्रबंध संस्थान, हाजीपुर के छात्रों को लगाया गया था जिन्होंने पूरे जोश एवं खरोश के साथ लगे थे।

प्राचार्य के निजी सहायक

होटल प्रबंध संस्थान,
हाजीपूर, वैशाली; बिहार

# ई.वॉलेट–मेरा मोबाइल, मेरा बैंक, मेरा बटुआ

**–अश्वनी कुमार**

ई–विनिमय के क्षेत्र में कार्ड और नेट बैंकिंग के अलावा ई–बटु, का चलन बहुत तेजी से बढ़ा है। विमुद्रीकरण के फैसले के बाद ई–बटुए का इस्तेमाल कई गुना दर्ज किया गया है। उदाहरण के तौर पर अगर कुछ ई–बटुए का जिक्र करे तो PayTM, मोबिक्विक, ऐयरटल मनी, ओला मनी इत्यादि निजी कंपनियों के ई–बटुए जब चलन में आए तो वहीं भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) द्वारा लाया गया भीम ऐप भी एक किस्म का ई–बटुआ है। इसी क्रम में बैंकों ने यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI) अब शुरू किया है। इस ऐप को भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने अप्रैल 2016 में शुरू किया था। पे.टी.एम. भी एक भारतीय ई–वॉलेट सर्विस प्रदान करने वाली कंपनी है जिसका मुख्यालय नोएडा में स्थित है। इस क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण से अगर देखा जाए तो भीम और पे.टी.एम. बेहद कारगर ढंग से काम करते नजर आ रहे हैं। हालांकि तकनीकी दिक्कतों की चुनौतियां भी इसी क्रम में सामने आई है लेकिन वह सभी चुनौतियां स्वाभाविक है। उनको लेकर असुरक्षा का वह खतरा पैदा नहीं होता है जिसमें डाटा लीक होने की बात कही जा रही है कि विनिमय के क्षेत्र में सुरक्षा और आत्मनिर्भरता का सवाल इस आधार पर अवश्य अहम है कि हम तकनीकी रूप से कितने सुरक्षित एप अथवा इंटरफेस तैयार कर पा रहे हैं। हमारी इंटरनेट सुरक्षा की तकनीक बेहद मजबूत और अभेद हो इसको लेकर भी चिंता वाजिब है। मगर यह चिंता उतनी सार्थक एवं व्यवहारिक नजर नहीं आती कि किसी थर्ड पार्टी की मदद से अगर ई–विनिमय का काम हो रहा है तो वह हमारे लिए खतरा है। वैश्वीकरण के इस दौर में जब बाजार की अनिवार्यता और प्रतिस्पर्धा से जवाबदेही और गुणवत्ता की स्वीकार्यता बढ़ रही है। ऐसे में बाहरी बनाम स्वदेशी की बहस बाजार के मूल चरित्र के प्रतिकूल नजर आती है। बाजार में जब कोई निवेशक आएगा तो वह अपनी विश्वसनीयता की सुरक्षा के हर संभव उपाय खुद करेगा। यह चिंता करना उतना व्यवहारिक एवं उपयोगी प्रतीत नहीं होता है।

भारत अपना ''पेमेंट गेटवे'' इजाद करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया है। इससे पहले यह तकनीक अमेरिका, चीन और जापान के पास ही थी। हालांकि अभी इस क्षेत्र में चुनौती यह है कि कार्ड धारकों को भारी संख्या में जो वीजा और मास्टर कार्ड दिए गए हैं। जब तक हर खाताधारक को रुपए कार्ड नहीं उपलब्ध करा दिया जाता है तब तक इसको सौ फिसदी सफल नहीं माना जा सकता है।

कार्ड के माध्यम से जो ई–विनिमय प्रणाली विकसित हुई है। उसको लेकर स्वदेशी और सुरक्षा का सवाल अहम है। सभी सरकारी संगठनों सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और अन्य सरकारी प्राधिकरणों को सलाह दी गई है कि वे संबंधित पक्षों और अपने कर्मचारियों को इंटरनेट बैंकिंग, यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI) कार्ड के धारकों को आधार से संबंधित भुगतान प्रणाली से ही भुगतान करें। भुगतान करते वक्त अधिकारियों को कार्ड इंटरनेट बैंकिंग यूपीआई आधार से संबंध भुगतान प्रणाली आदि का विकल्प उपलब्ध कराना अनिवार्य होगा। डिजिटल भुगतान और नगद रहित लेन देन को बढ़ावा देने की योजना के तहत सरकार ने 31 मार्च, 2017 तक 10 लाख अतिरिक्त पी.ओ.एस. मशीनें लगाने का फैसला किया है। इस फैसले को अमलीजामा पहनाने की दिशा में कदम बढ़ाते हुए बैंकों ने 6 लाख पी.ओ.एस. मशीनों की खरीद के आदेश दिए हैं और शेष 4 लाख मशीनों की खरीद के लिए आदेश अगले कुछ दिनों में जारी किए जाएगें।

साधारणतया ऐसा देखा गया है कि जिस देश की भ्रष्टाचार सूचकांक में स्थिति बेहतर है उन देशों में नकदी लेनदेन 10% से भी कम है। डेनमार्क, फ़िनलैंड, स्वीडन, नॉर्वे, सिंगापुर, फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम इत्यादि ऐसे देश है जो ट्रांसपैरेंसी इंटरनेशनल सूचकांक में सबसे कम भ्रष्ट देशों में गिने जाते हैं क्योंकि इन देशों में नगदी में लेन–देन 10% से भी कम होता है। अगर इस तरह का कोई कानून बने जो आपके नगद रखने की क्षमता को ही नियंत्रित करें तो शायद लोगों की इस तरह की नगद में अदा करने की क्षमता कम होगी और फिर जो लोग ईमानदारी से धन कमाते हैं। उन्हें अपना सफेद पैसा काला करवाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इसी दिशा में 23 जून 2016 को भारतीय रिजर्व बैंक ने भारत में भुगतान एवं निपटान प्रणाली विज़न 2018 को प्रकाशित किया है।

निसंदेह किसी भी अर्थव्यवस्था में से कालेधन को पूर्ण रूप से खत्म करना लगभग नामुमकिन है लेकिन इसे कम जरूर किया जा सकता है। अर्थव्यवस्था में नकदी में लेनदेन कम करना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। एक पारदर्शी और उत्तरदाई शासन व्यवस्था ईमानदार नौकरशाही, जागरुक नागरिक, ठोस कानून व्यवस्था, नैतिक, सामाजिक तंत्र इत्यादि का निर्माण कर कालेधन के खिलाफ चली छिड़ी मुहिम को अपने अंजाम तक ले जाने की जरूरत है।



भारत में 2013 से 2016 के बीच तत्काल निपटान प्रणाली और राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक धन अंतरण का प्रयोग लगभग तीन गुना और मोबाइल बैंकिंग से लेनदेन लगभग सात गुना बढ़ा है। अभी तक आम आदमी इस ट्रांजेक्शन

पर लगने वाले 3% के प्रभार से बचना चाहता था, जो कार्ड धारक द्वारा खरीददार को देना होता था। नवम्बर, 2016 से ATM और PoS से लेनदेन में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी हुई है और पीओएस डेबिट कार्ड का प्रयोग काफी बढ़ा है। बैंक लेनदेन में तेजी लाने क्षमता को बेहतर करने तथा बैंक खाते के जरिए सरकारी कल्याणकारी सेवाओं एलपीजी उपभोक्ताओं के लिए सबसिडी, मनरेगा का भुगतान के बढ़ते बोझ से निपटने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए व्यापक रूप से गैर नकदी भुगतान अपना रहे हैं।

विभिन्न देशों में अर्थव्यवस्था का डिजिटलीकरण किया गया है कहीं यह सफल रहा है और कहीं कहीं ज्यादा सफल नहीं रहा है। अभी तक का सबसे सफल प्रयास स्वीडन में रहा है। भारत में यह कितना सफल रहेगा यह इस बात पर निर्भर होगा कि भारत की भारी–भरकम निरक्षर और अर्ध साक्षर आबादी में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में कितनी जागरूकता उत्पन्न की जाती है। जहां इंटरनेट की सुविधा न के बराबर है। साइबर सुरक्षा की समस्याओं से निपटने के लिए प्रभावी सरकारी नीतियों तथा लोगों को शिक्षित करने के लिए व्यापक पैमाने पर जागरुकता के अभियानों के साथ साथ इन सुविधाओं पर बैंकों द्वारा शुल्क न लगाए जाने से भारत को डिजिटल अर्थव्यवस्था में वैश्विक ताकत बनते हुए देखने की उम्मीद लगाई जा सकती है।

*स्त्रोत– योजना प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

**सहायक प्रवक्ता,**
**होटल प्रबंध संस्थान,**
**लखनऊ**

कैशलेस अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन,
ई–भुगतान अपनाएँ जन–जन।

कविता

# याद रखना

–उरूज ज़ैदी

ना मजहब की ना भगवान की।

जरुरत है तो सिर्फ एक इन्सान की।

गूंज रही चीखों व किलकारियों को जो सुन पाये।

टूटते हुए सपनो को जो चुन पाये।

याद रखना वह एक इन्सान कहलाये।

गिर गिर के संभलने का नाम है ज़िन्दगी।

ठोकरों से लेते रहो पैगाम तमाम ज़िन्दगी।

एक मित्र बिन कटती नही आसान ज़िन्दगी।

भटकते रहे लिए यही अरमान तमाम ज़िन्दगी।

हम इंसान करते रहे इंसानियत के वादे।

खडी करते रहे नफरतों दीवार तमाम ज़िन्दगी।

सोच बदलो तब ही कटेगी सफल यह है ज़िन्दगी।

अटल वादे करो सही राह पर चलो तब यह है ज़िन्दगी।

आखें बंद किए याद करो ईश्वर को हरदम।

याद रखना फिर कटेगी कैसी यह है ज़िन्दगी।

होटल प्रबंध संस्थान, हैदराबाद
(द्वितीय वर्ष) के छात्र
08790293823

कविता

# तकसीम

–राजीव कुमार पाहवा

कर गई तकसीम मुल्क को सियासी तदबीरें
लुट गई मिट गई नाजों की पली कितनी तकदीरें
था अजब जुनून नफरतों वहशत का
महजब था जिसका नाम
मानों था जमी का महजब
मानों था नदी का महजब
नहीं था इंसानियत का नाम
बन गया था हर इंसान हैवान
बैठा था लगाए पड़ोसी हर पड़ोसी की घात
जिंदगी की कीमत की नही थी कोई बात
गर बस में इनके होता तो
बांट देते तुझे भी ए फलक
न जानें कितना रोया होगा तू
देख अपनी बेटियों की भीगी पलक।

सेवानिवृत मुख्य अभियंता
केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण
नई दिल्ली

कविता

# तूफान

–पंकज कुमार सिंह

बर्फ की घाटी में है उठ रहा उफान
पड़ोस का, छित्त–विपिन में, अलगाव का तूफान।

अनय पर चल रहा ''बैरी'' पास
ब्रौसटैक्स की वीथि से गुजर,
जर्बे– मोमीन की भीड़ से
उपत्यका में करता सतत–प्रयास।

प्रसून की पंखुड़ियों के अलगाव सदृश
अदासित, स्व मुक्त करने का नाटक,
अदम्य के मिथ्या के–गलवाह से मदोन्मत्त
बैरी के वहशत का दुर्धर्ष रौरव उन्मेष।

हे सपूतों! करो भंजित निरावृत रिपु दुष्कामों को,
तोड़ हटाओ खालि, बोड़ो, बाबरी, मंदिर,
मजहब, प्रांत, जात पाँत जंजीरों को;
काट हटाओ अरि के चर्चित फूट–उसूलों को।

धरती का स्वर्ग है हो रहा निष्प्राण,
उठो, जागो, करो जन्नत का स्व–हाथों निर्माण।

व्याख्याता,
होटल प्रबंध संस्थान
गोवा

श्रृद्धांजलि

# डॉ. बालामुरली कृष्ण

22 नवम्बर, 2016 को कर्नाटक संगीत की जानीमानी हस्ति मंगलमपल्ली बालामुरली कृष्ण के देहांत का दुखद समाचार मिला। संगीत के सभी क्षेत्रों में आपकी बहुमुखी प्रतिभा, उनकी सम्मोहित करने वाली आवाज, रचनाओं के प्रतिपादन के उनके अनोखे तरीके ने संगीत युग में अलग स्थान दिलाने में मदद की है। उन्होंने हिन्दुस्तानी घराने में शीर्ष संगीतकारों के साथ–साथ काम किया है। और वे सबसे पहले जुगलबंदी किस्म के संगीत कार्यक्रम पेश करने के लिए जाने जाते हैं। इस तरह का पहला कार्यक्रम मुंबई में हुआ जिसमें उन्होंने पंडित भीमसेन जोशी के साथ जुगलबंदी की। उन्होंने अन्य लोगों के अलावा पंडित हरिप्रसाद और किशोरी अमोनकर के साथ भी जुगलबंदी कार्यक्रम पेश किये हैं। इन समारोहों ने उन्हें देश भर में लोकप्रिय बना दिया और संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय अखंडता का संदेश देने में मदद की है।

6 जुलाई 1930 को आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले के शंकरगुप्तम गांव के संगीतकारों के परिवार में जन्मे बाला एक कर्नाटक गायक, अनेक वाद्ययंत्रों के वादक और एक पार्श्वगायक हैं। एक कवि, संगीतकार के रूप में उनकी प्रशंसा की जाती है और कर्नाटक संगीत के ज्ञान के लिए उन्हें सम्मान दिया जाता है। उसके पिता एक प्रसिद्ध संगीतकार थे और बांसुरी, वायलिन और वीणा बजा सकते थे और उसकी माँ भी वीणा वादक थीं। जब वे बच्चे थे, तभी अपनी माँ का साया उठ गया। पिता ने ही उनका पालन पोषण करते हुए संगीत के प्रति उनकी लगन को देखकर उन्हें श्री पारुपल्ली रामकृष्ण पंतुलू के संरक्षण में भेज दिया। श्री पंतुलू संत त्यागराज की शिष्य परम्परा के वंशज थे। उनके मार्गदर्शन में युवा बालामुरलीकृष्ण ने कर्नाटक संगीत सीखा और आठ साल की उम्र में बालामुरलीकृष्ण ने विजयवाड़ा के त्यागराज आराधना महोत्सव में अपना पहला संपूर्ण संगीत कार्यक्रम पेश किया था। सुप्रसिद्ध हरिकथा वाचक सूर्यनारायण मूर्ति भागवतार ने बच्चे के भीतर संगीत की प्रतिभा देखी और छोटे मुरलीकृष्ण को "बाला" नाम दिया। यह "बाला" उनके नाम के साथ ही लगा रहा और वे बालामुरलीकृष्ण के नाम से जाने गए हैं।

बालामुरलीकृष्ण ने बहुत ही कम उम्र में अपना संगीत करियर शुरू किया। पंद्रह साल की उम्र तक वह सभी 72 रागों में महारत हासिल कर चुके थे और उन्हीं में उन्होंने कृतियों की रचना की। बालामुरलीकृष्ण जल्द ही एक गायक के रूप में काफी प्रसिद्ध हो गये। इस युवा संगीतकार के संगीत कार्यक्रमों की संख्या बढ़ने लगी और इसलिए उन्हें अपनी स्कूली पढ़ाई छोड़नी पड़ी। जनक राग मंजरी 1952 में प्रकाशित हुई थी और संगीता रिकॉर्डिंग कंपनी द्वारा 9 खंडों की श्रृंखला में इसे ''रागगंगा रावली'' के रूप में रिकार्ड किया गया। अब तक वह दुनिया भर में 25000 संगीत कार्यक्रम पेश कर चुके थे। कवि, संगीतकार और संगीत वैज्ञानिक बालामुरलीकृष्ण ने अपने संपूर्ण मूल में तीनों की रचनाओं के तत्व बहाल किये हैं। वह कर्नाटक संगीत के एक नए युग का प्रतिनिधित्व करते हैं। अपने पूर्ववर्ती दिग्गजों की आकाशगंगा की तरह उन्होंने अपने तरीके से संगीत की विरासत के संरक्षण में मदद की है। उन्हे श्री भद्राचल रामदास और श्री अन्नामाचार्य की संगीत रचनाओं को लोकप्रिय बनाने के लिए भी जाना जाता है।

मातृभाषा तेलुगू होते हुए भी उन्होंने न केवल तेलुगू, बल्कि कन्नड़, संस्कृत, तमिल, मलयालम, हिन्दी, बंगाली, पंजाबी सहित कई भाषाओं में गाया है। कई भाषाओं के उनके स्पष्ट उच्चारण से प्रेरित होकर उन्हें बंगाली में पूरे रवींद्र संगीत की रचनाओं को रिकार्ड करने का आमंत्रण दिया गया, ताकि इसे भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित रखा जा सके। उन्होंने फ्रेंच भाषा में भी गाया है।

**स्व. श्री भीमसेन जोशी के साथ जुगबंधी की प्रस्तुति**

हाल में संगीत चिकित्सा के प्रति उनकी रुचि तेजी से बढी थी और उन्होंने संगीत चिकित्सा में व्यापक अनुसंधान करने और कला व संस्कृति के विकास के लक्ष्य के साथ ''एमवीके ट्रस्ट'' की स्थापना की है। एक नृत्य और संगीत विद्यालय "विपांची" उनके ट्रस्ट का एक हिस्सा है और उसका संचालन प्रबंध न्यासी के. सरस्वती द्वारा किया जाता है।

बालामुरलीकृष्ण के संगीत कार्यक्रमों में मनोरंजन मूल्य के लिए लोकप्रिय मांग के साथ परिष्कृत सुर कौशल और शास्त्रीय संगीत के तालबद्ध पैटर्न का मेल देखा जाता है।

बालामुरली कृष्ण को अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, इटली, फ्रांस, रूस, श्रीलंका, मलेशिया, सिंगापुर, मध्य पूर्व सहित और अन्य कई देशों में संगीत कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया है।

डॉ. बालामुरलीकृष्ण ने विभिन्न भाषाओं में 400 से भी ज्यादा संगीत रचनाएं की हैं। उनकी रचनाओं में भक्ति संगीत से लेकर वर्णम, कीर्ति और थिलान तक हैं। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि सभी मूलभूत 72 रागों में की गई रचनाएं हैं। उनकी संगीत यात्रा की विशेषता उनकी गैर–परंपरागत, प्रयोग करने की भावना और असीम रचनात्मकता है।

बालामुरलीकृष्ण थिलान में संगती करने के क्षेत्र में भी अग्रणी माने जाते हैं।

भारत सरकार ने डॉ? एम बालामुरलीकृष्ण को पद्मश्री, पद्मभूषण और पद्म विभूषण जैसे राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया है। वे कर्नाटक संगीत के एकमात्र संगीतकार हैं, जिन्हें फ्रांस सरकार की ओर से चेविलियर्स ऑफ द आर्डर डेस आर्ट्स एट डेस लेटर्स मिला है।

**अतुल्य भारत की ओर से श्रृद्धांजलि अर्पित है।**

श्रृद्धांजलि

# जय ललिता

5 दिसम्बर 2016 को जयललिता के निधन का दुखद समाचार मिला।

भारतीय राजनीति में उनके समर्थक उन्हें अम्मा यानि मां और कभी–कभी पुरातची तलाईवी अर्थात 'क्रांतिकारी नेता' कहकर बुलाते हैं। जयललिता जयराम एक सुलझी हुई राजनीतिज्ञ थीं। व 1991 से 1996, 2001 में, 2002 से 2006 तक और 2011 से 2014 तक तमिलनाडु की मुख्यमंत्री रहीं। राजनीति में आने से पहले वो अभिनेत्री थीं और उन्होंने तमिल के अलावा तेलुगू, कन्नड और हिंदी तथा एक अँग्रेजी फिल्म में भी काम किया है।

फिल्मी करियर के बाद उन्होने एम.जी. रामचंद्रन के साथ 1982 में राजनीतिक करियर की शुरुआत की। उन्होंने 1984 से 1989 के दौरान तमिलनाडु से राज्यसभा के लिए राज्य का प्रतिनिधित्व भी किया। बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि राज्य सभा में उन्होंने कई बार अपने भाषण हिंदी में दिए और कई बार बहस के दौर हिंदी का खूब उपयोग किया। वह 24 जून 1991 को राज्य की सबसे कम उम्र की पहली निर्वाचित मुख्यमंत्री बनीं।

24 फ़रवरी 1948 को मैसूर राज्य के मांडया जिले के पांडवपुरा तालुक के मेलुरकोट गांव में एक ''अय्यर ब्राम्हण'' परिवार में जयललिता का जन्म हुआ था। उनके दादा तत्कालीन मैसूर राज्य में एक सर्जनथे। महज दो साल की उम्र में ही उनके पिता जयराम चल बसे थे। पिता की मृत्यु के पश्चात उनकी मां वेदवल्ली उन्हें लेकर अपने पिता के घर बंगलोर आ गईं। बाद में उनकी मां ने 'संध्या' के नाम से तमिल सिनेमा में काम करना शुरू कर दिया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा पहले बंगलौर और बाद में चेन्नई में हुई और सरकारी वजीफे से आगे पढ़ाई की। जब वे स्कूल में पढ़ ही रही थीं तभी उनकी मां ने उन्हें फिल्मों में काम करने के लिए राजी कर लिया। स्कूली शिक्षा के दौरान ही उन्होंने 1961 में 'एपिसल' नाम की एक अंग्रेजी फिल्म में काम किया। मात्र 15 वर्ष की आयु में वे कन्नड़ फिल्मों में मुख्य अभिनेत्री की भूमिकाएं करने लगी। कन्नड भाषा में उनकी पहली फिल्म ''चिन्नाडा गोम्बे'' थी जो 1964 में प्रदर्शित हुई। उसके बाद उन्होंने तमिल फिल्मों की ओर रुख किया।

हिन्दी सिनेमा में सबसे पहले किशोर कुमार और साधना के साथ 1962 में आई फिल्म मनमौजी में सहनायिका के रूप में काम किया। किन्तु फिल्म इज़्ज़त(1968) में उन दिनों के जाने माने अभिनेता धमेंद्र के साथ उन्हें देख कर बहुत से लोगों ने उनको आशा पारिख समझा था क्योंकि उस समय उनकी सूरत आशा पारिख से बहुत मिलती थी।

तमिल सिनेमा में उन्होंने जाने माने निर्देशक श्रीधर की फिल्म 'वेन्नीरादई' से अपना करियर शुरू किया और लगभग 300 फिल्मों में काम किया। तमिल के अलावा तेलुगु, कन्नड़, अँग्रेजी और हिन्दी फिल्मों में भी काम किया है।

वर्ष 1992 में उनकी सरकार ने बालिकाओं की रक्षा के लिए 'क्रैडल बेबी स्कीम' शुरू की ताकि अनाथ और बेसहारा बच्चियों को खुशहाल जीवन मिल सके। इसी वर्ष राज्य में ऐसे पुलिस थाने खोले गए जहां केवल महिलाएं ही तैनात होती थीं।

एक सर्वमान्य नेता के रूप में लोग स्वयं आदर में जयललिता को अम्मा कह कर पुकारते थे।

**अतुल्य भारत की ओर से श्रृद्धांजलि अर्पित है।**

रोचक

# रामराज्य में हंसना मना था

– देवदत्त पटनायक

15वीं सदी में संस्कृत में एक बहुत रोचक ग्रंथ लिखा गया। इसका नाम है आनंद रामायण। इसके लेखक के बारे में तो कहीं उल्लेख नहीं लेकिन लोग कहते हैं, यह मूल रूप से वाल्मीकि की रचना है। ऐसा भी माना जाता है कि इसे शोक रामायण से पैदा हुए शोक को कम करने के लिए ही लिखा गया क्योंकि शोक रामायण में सिर्फ राम के दुख और अकेलेपन का वर्णन मिलता है। आनंद रामायण में रामराज्य की महिमा पर काफी जोर दिया गया है।

इसमें एक कहानी है। एक बार राम ने किसी की हंसी सुनी जिसे सुनते ही उन्हें सीताहरण और रावण की हंसी की याद आ गई। उन्हें याद आया कि जैसे ही वह रावण का सिर बाण मार कर काटते, अट्टाहस करता हुआ रावण का दूसरा सिर उग जाता। उन्हें ऐसा जान पड़ता, जैसे रावण उनकी हंसी उड़ा रहा हो। राम इस बात को नहीं समझ पा रहे थे कि रावण तो इस बात से खुश होकर हंस रहा था कि उसका सिर उसके पापी शरीर से अलग हो रहा था। हालांकि इस हंसी ने राम को काफी विचलित कर दिया।

राम ने झुंझला कर अयोध्या में हंसने पर रोक लगा दी। जो हंसता उसे जेल भेज दिया जाता। इसके परिणाम बहुत बुरे हुए। लोगों ने त्योहार मानना, एक–दूसरे से मिलना, गाना– बजाना सब कुछ बंद कर दिया। उन्होंने खेलना और बाजार जाना भी बंद कर दिया। इतना ही नहीं, लोगों ने एक–दूसरे की तरफ इस डर से देखना तक बंद कर दिया कि कहीं हंसी न आ जाए।

चूंकि पूजा–पाठ और त्योहार सब बंद हो गया इसलिए भगवान भी नाराज होने लगे। उन्होंने ब्रह्मा से शिकायत की और ब्रह्मा बरगद के पेड़ का रूप धर कर अयोध्याा पहुंचे। जैसे ही एक पेड़ काटने वाला पेड़ के पास पहुंचा, ब्रह्मा ने हंसना शुरू कर दिया। पेड़ की हंसी सुन कर पेड़ काटने वाला भी हंसे बिना नहीं रह सका। उसकी हंसी सुन कर उसके परिवार वाले और दोस्त भी हंसने लगे। धीरे–धीरे यह संक्रामक हंसी राजदरबार तक पहुंच गई और राम खुद हंसने लगे। राम इससे बहुत झुंझलाए और उन्हें इसकी जांच के आदेश और हंसने वाले पेड़ को काटने के लिए कहा। हालांकि जो भी इस पेड़ के पास जाता उसे अहसास होता कि यह पेड़ तो पत्थर फेंकता है। जब राम को पत्थर फेंकने वाले इस पेड़ के बारे में पता चला तो उन्होंने खुद ही इस हंसने और पत्थर फेंकने वाले पेड़ को काटने का फैसला किया। राम के इस फैसले से डरे हुए ब्रह्मा ने गुरू वाल्मीकि से मदद मांगी। वाल्मीकि राम के पास गए और बोले, 'आनंद रामायण लिखने का मेरा उद्देश्य ही लोगों के चेहरे पर मुस्कान लाना और गुदगुदाना है। इसके जरिए वह लोगों की जिंदगी में खुशियां लाना चाहते हैं क्योंकि खुशी ही सौभाग्य की देवी लक्ष्मी को आकर्षित करती है। उन्होंने राम को हंसने पर लगाई गई रोक के आदेश को वापस लेने की प्रार्थना की। उन्होंने राम से कहा, आपको क्यों लगता है कि लोग आप पर हंस रहे हैं। आप भगवान होकर भी यह क्यों नहीं समझ पा रहे कि असल में हंसी ही है, जो लोगों को मुक्त करती है। लोगों को हसने की इजाजत देकर आप उन्हें मुक्त कर रहे हैं। आपको अपने देवत्व पर संशय क्यों है। महर्षि वाल्मीकि की इन बातों से भगवान राम संतुष्ट हुए और उन्होंने हंसने पर लगाई गई रोक को वापस ले लिया।

**सुप्रसिद्ध पौराणिक लेखक**
**(नवभारत टाइम्स से साभार)**

हासयमेंव जयते

# भाषा का आतंक 1

**प्रस्तुति – विमल डे**

हम भारतीय लोगों की प्रायः आदत होती है कि हम अपनी भाषा में विशेषकर हिंदी में नुक्स निकालने का प्रयास करते हैं। अपने सेवाकाल के दौरान मुझे अंग्रेजी में भी कुछ ऐसा देखने को मिला जो आपको बता रहा हूं इसे जब लोगों को बताता हूं तो कुछ इसे अंग्रेजी की हत्या तक देते है। आप भी पढ़िए और आनंद लीजिए कुछ उदाहरणों का।

1. प्रशासनिक विभाग, कर्नाटक सरकार, बैगलूरू : 1996

   **As my mother in law has expired and I am the only one responsible for it, please grant me 10 days leave.**

2. महाराष्ट्र में एक कर्मचारी का आवेदन : 2005

   **Since I have to go to my village to sell my land along with wife, please sanction me one week leave.**

3. झारखंड : 2000 (एक कर्मचारी, जिसे अपने 10 साल के बेटे का मुंडन कराना था, का आवेदन)

   **"As I want to cut my son's head in Gaya, please leave me for two day."**

4. आंध्र प्रदेश सरकार के एक कर्मचारी द्वारा 1996 में दिया गया आवेदन जिसे अपनी बेटी की शादी के लिए छुट्टियां चाहिए थीं,

   **"As I am marrying my daughter, please grant me a week's leave .."**

5. गुजरात सरकार, प्रशासनिक विभाग के एक कर्मचारी का आवेदन : 2007

   **"Since I have to go to the cremation ground at 10 o clock and perhaps, I may not return , please grant me half day casual leave**

6. जमशेदपुर के एक स्कूल में छात्र का आवेदन : 2006

   **"As I am studying this school, I am suffering from headache and the headache is paining my head. Please grant me one day leave.."**

7. कोलकाता में एक कर्मचारी द्वारा दिया गया आवेदन : 2014।

   **"My wife is suffering from sickness and as I am her only husband at home to look her, I may grant leave for three days**

8. 1999 में नौकरी के लिए आवेदन पत्र अग्रेषित कराने के लिए लिखा गया नोटः कोलकाता

   **"Dear Sir , with reference to the above employment circular number please refer to my bottom...**

9. भुबनेश्वर से एक और मजेदार पत्र पढिए

   **"I am well here and hope you are also in the same well.**

10. बिहार से एक और आवेदन पत्र : 2005।

    **"As I am suffering from fever, cannot enter in office please declare one day holiday for me."**

**सहायक प्रबंधक (सेवानिवृत्त),**
राष्ट्रीय बीज निगम, नई दिल्ली

## भाषा का आतंक 2

**प्रस्तुति – हेमंत मिश्रा**

*कोई भी भाषा हो, जब तक उसमें सही मात्राएं न लगाई जाएं वह पूर्ण नहीं हो पाती है। किसी गाव में एक स्त्री थी वह अपने पति को पत्र लिखती है पर अल्प शिक्षित होने के कारण उसे यह पता नहीं था कि पूर्णविराम कहां लगेगा। इसलिए उसने जहां मन किया पूर्णविराम लगा दिए। उसने एक बार अपने पति को कुछ इस प्रकार चिट्ठी लिखी। देखिए पूर्ण विराम का आतंक और बिना पूर्णविराम अथवा अर्धविराम के लिखी गई चिट्ठी का आनंद लीजिए*

**मेरे प्यारे जीवन साथी मेरा प्रणाम आपके चरणों में**

आपने अभी तक चिटठी नहीं लिखी मेरी सहेली को । नौकरी मिल गई है हमारी गाय को । बछड़ा दिया है दादा जी ने। शराब की लत लगा ली है मैने । तुमको बहुत खत लिखे पर तुम नहीं आए कुत्ते के बच्चे। भेडिया खा गया दो महीने का राशन। छुट्टी पर आते हुए ले आना एक खूबसूरत औरत। मेरी सहेली बन गई है और। इस समय टीवी पर गाना गा रही है हमारी बकरी। बेच दी गई है तुम्हारी मां। तुमको बहुत याद कर रही है एक पड़ोसन। हमें तंग कर रही है तुम्हारी चंदा। परणाम

एक पति–पत्नी में किसी बात पर कहा सुनी हो गई।

पति ने गुस्से में कहा, मैं क्या तुमसे डरता हूँ?

पत्नी 'तुम क्या बात करते हो... जब पहली बार मुझे देखने आये थे मां, भाई, बहन और चाची को साथ लेकर आए थे।'

पति 'वो तो.... वो तो...।'

पत्नी 'जब शादी करने आए तो 200 लोगों को साथ लाए थें। मुझको देखो। मैं तो किसी को साथ नहीं लाई, तुम्हारे घर में अकेली आई हूँ।'

वरिष्ठ अनुवादक
रक्षा लेखा नियंत्रक कार्यालय,
पटना

# जीवन में सफलता पाने के लिए विशेष बातें

**–स्वप्निल भरंबे**

सफलता परिश्रम और मेहनत से मिलती है। ऐसा नहीं है कि आपको इसका कोई सूत्र मिल जाए और आपको सफलता मिल जाए। अपने जीवन में सफलता पाने के लिए कुछ विशेष गुण अपनाना पड़ता है। जिसके अनुसार आपको सफलता मिल सकती है। सपलता पाने के लिए इन गुणों को अपनाना भी आवश्यक है जो इस प्रकार है:–

**वादा (Commitment):** वादे का मतलब एक बार जो अपने वादा कर दिया फिर उससे पीछे ना हटना, चाहे कितनी मुसीबतें आए लेकिन अपने वादे में कायम रहना, इसी को असल में वादा कहते है।

**नीति (Ethics):** वह नियम जिसके द्वारा किसी व्यक्ति के आचरण या किसी व्यवसाय की प्रतिबद्धता को प्रस्तुत किया जाये उसे नीति कहते है।

**मूल्य (Value):** वो नियम जिसके अनुसार हम सही–गलत, अच्छी या बुरी चीजों का विश्लेषण करते है उन्हें मूल्य कहते है।

**सूचनात्मकता (Informativity):** सफलता पाने के लिए व्यक्ति का दिमाग सूचनात्मक भी होना चाहिए क्योंकि कुछ नया सोचने के लिए उसके पास इतनी बुद्धि होनी चाहिए कि वह कुछ नया सोचे, नई संभावनाओं की खोज करें, जैसे नया बाजार नया उत्पाद इत्यादि। इसमें समय, पैसा, प्रयत्न और श्रम भी लगता है।

**लक्ष्य (Goal Setting):** लक्ष्य को निर्धारित करने के लिए आप लक्ष्य को छोटे छोटे भागों में विभाजित करे जिससे आपको लक्ष्य की प्राप्ति में आसानी हो और तैयारी भी आप अच्छे से कर सके। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जितने छोटे छोटे लक्ष्य होंगे उनको मन में उतनी ही आसानी होगी।

**स्वयं जागरूकता (Self Awareness):** हमें सबसे पहले अपनी ओर ध्यान को केंद्रित करना चाहिए जिससे हम अपने वर्तमान व्यवहार और अपने आंतरिक आदर्शों का मूल्यांकन कर सकते है। यदि हम स्वयं को जागरूक कर सकते है तो दूसरों को भी कर सकते है।

**होटल प्रबंध संस्थान,**
**हैदराबाद**
**प्रथम वर्ष के छात्र**

एक रिपोर्ट

# सेवा–मूर्ति बेटी : एन्ना वांग

–प्रस्तुति : राम बाबू

इस संसार में माँ और बच्चे का रिश्ता दुनियाँ के सभी रिश्तों से खास और पवित्र रिश्ता माना जाता है। आज इस दुनिया में लोग कितना भी पढ़ लिख गए हों पर बहुत से लोग आज भी ऐसे हैं, जिनकी भावनाएं अच्छी नहीं होती। यदि उनके घर बिटिया का जन्म हुआ तो वे खुश नहीं होते हैं। विश्व में आजकल एक अजीब प्रथा सी बनती जा रही है कि गर्भ में बच्ची होने का पता लगते ही लोग गर्भपात कराने से नहीं चूकते, जो बहुत की गलत धारणा है। दक्षिण एशिया में यह बात कुछ ज्यादा ही देखने में आ रही है। लोग यह नहीं जानते कि बड़े ही भाग्य से तुमने बिटिया को पाया जो आपके घर का अनमोल रत्न है।

**''माँ की कोख से जिस दिन एक नन्ही परी जन्म लेती है तो एक औरत खुद पर गर्व महसूस करती है क्योंकि उसे ऐसा आभास होता है कि उसने बेटी के रूप में खुद को फिर से जन्म दिया है।''**

**–अगाथा क्रिस्टी**

एक मां और बेटी के बीच मजबूत संबंध के बारे में हम सभी जानते हैं और यह बताने की जरूरत नहीं है कि यह परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है। हमारे देश में भी ''बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओ'' का आंदोलन चलाया जा रहा है। आज बेटियां मां–बाप का और पूरे परिवार का सम्बल/सहारा बन जाती हैं। बेटी किसी भी देश की हो किसी पंथ या धर्म की हो वह अपने माता–पिता की देखभाल भली भांति करती हैं। आज हम आपको एक ऐसी

बेटी के बारे में बताते हैं, जिसकी उम्र महज छह साल है और उसके माता–पिता नहीं हैं। वह अकेली ही अपनी दादी और परदादी की देखभाल करती है, यह है चीन की एक वेटी वांग एन्ना।

वांग एन्ना महज छह साल की बच्ची है जो लम्बी बीमारी से ग्रस्त अपनी 65 वर्ष की दादी और 92 वर्ष की बड़ी दादी यानि परदादी के साथ दक्षिण पश्चिमी चीन के झूंग्यी नगर से कुछ दूर पहाड़ी पर रहती है।

कुछ दिन पहले ही अचानक समाचारों की सुर्खियों में आई एन्ना की कथा वास्तव में ही दिल को छू लेने वाली है। उसकी दादी ने बताया कि जब एन्ना सिर्फ 5–6 महीने की थी तब उसके पिता को जेल में डाल दिया गया। उसकी मां कुछ समय तो उनके पास रही, फिर उसने दूसरा विवाह कर लिया। लेकिन उस व्यक्ति ने एन्ना को अपनाने से मना कर दिया और उसकी मां उसे उनके पास छोड़कर चली गई। दादी और परदादी दोनों ने मिलकर एन्ना को पाला है।

एन्ना की दादी बताती है, ''आज एन्ना ही हमारे घर की खुशी है, हमारी संरक्षक है और दूसरे शब्दों में हम दोनों के लिए मां ही की तरह सहारा बन गयी है। उसने हम दोनों की जिम्मेदारी संभाल ली है, वह घर में खाना बनाती है, घर की साफ–सफाई करती और हम दोनों की देखभाल करती है। हम दो वृद्ध महिलाओं की देखभाल करना कोई आसान काम नहीं है। एन्ना प्रतिदिन सुबह जल्दी उठती है। नियमित रूप से साफ–सफाई करती है और खाना बनाती है, एन्ना एक स्टूल पर खड़ी होकर खाना बनाती है। छोटी दादी भी उसकी मदद के लिए आ जाती है। फिर एन्ना दोनों दादियों को खाना खिलाती है और जब कभी उनका खाना खाने का मन नहीं होता है तो एन्ना उन्हें डांट कर खाना खिलाती है।'' दिन में तीन बार दोनों को दवाई लेनी होती है, जो एन्ना खुद निकाल कर देती है।

एन्ना की बड़ी दादी लम्बे समय से सेक्टिक अर्थराटिक्स से पीड़ित है जिससे उन्हें चलने फिरने से जोड़ो में दर्द होता है इसलिए वह ज्यादातर बिस्तर पर ही बैठी रहती है। उसकी दोनों दादियों का चलना फिरना कम ही होता है एन्ना ही रोजना की दिनचर्या में उन्हें नहलाने, खाना खिलाने और घर के आसपास घुमाने या लॉन में चक्कर लगाने में उनकी मदद करती है।

वांग परिवार का घर काफी बड़ा है जिसके सामने की ओर तीन कमरे तथा पीछे की ओर बड़ा सा बागीचा है जिसमें वह सब्जियां आदि उगाते हैं। एन्ना की बड़ी दादी ने बताया की एन्ना के परदादा सेना में थे, इसलिए उनकी परदादी के नाम पेंशन आती है। दादी एक सरकारी स्कूल में प्रधानाचार्या के पद से रिटायर हुई हैं उन्हें भी पेंशन मिलती है जिससे उनके घर का खर्च चलता है और उन तीनों का भरण–पोषण होता है। हमें ऐसी सेवा मूर्ति बेटियों पर गर्व होता है और गर्व होता है उस मेहनतकश बच्ची वांग एन्ना पर जिसने परिवार में कोई पुरूष या कामकाजी महिला के ना होने पर भी इस कमी को पूरा कर रही हैं।

–कनिष्ठ अनुवादक,
पर्यटन मंत्रालय

# सुखद यात्रा के मूलमंत्र

**–कु. गरिमा**

कभी अचानक ही दो तीन दिन की छुट्टियां आई और आपने कहीं घूमने का मन बना लिया, झट से सामान पैक किया और चल दिए। ऐसे में आपको बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। यात्रा का कार्यक्रम पहले तय करना चाहिए और शांत मन से तैयारी प्रारंभ करें। आपकी यात्रा को सुखद और यादगार बनाने के लिए कुछ बातें यहां प्रस्तुत की जा रही हैं। इन पर ध्यान दें और यात्रा का आनंद लें।

- पर्यटन विभाग से उस स्थान की सम्पूर्ण जानकारी, जहां पर आप जाना चाहते हैं, प्राप्त करने के पश्चात यात्रा का कार्यक्रम सुनिश्चित करना चाहिए।
- कार्यक्रम सुनिश्चित होते ही आरक्षण करवा लेना चाहिए ताकि निश्चित समय पर टिकट खरीदने और कभी कभी टिकट न मिलने की समस्या से बचा जा सके।
- यात्रा स्थल की सम्पूर्ण जानकारी जैसे– रोड मैप, होटल, धर्मशाला के पते व दर्शनीय स्थानों के नाम, पते अवश्य रख लेने चाहिए जिससे यात्रा सुविधाजनक और सुखमय हो एवं आप खुश मन से यात्रा का आनंद उठा सकें।
- सफर पर निकलने से पूर्व यात्रा के टिकट/आरक्षण टिकट, होटल आरक्षण की पर्ची अपने पहचान–पत्र तथा आवश्यक कागजों को भली प्रकार संभाल कर अपने हैंड बैग या सूटकेस में ऐसे स्थान पर जहां आवश्यकता पड़ने पर आसानी से निकाला जा सके रख लेना अत्यंत आवश्यक होता है।
- इसके अलावा खास तौर पर ध्यान रखें कि आपके घर से स्टेशन या एयरपोर्ट पहूंचने में कितना समय लगता है इसलिए तय समय से लगभग आधा घंटा अधिक मान कर घर से निकलें क्योंकि बड़े शहरों में ट्रैफिक जाम की स्थति बनी रहती है कहीं जाम मे फंस जाएं तो आपकी गाड़ी या जहाज छूट सकता है।
- रेल, बस या हवाई जहाज के प्रस्थान समय से आधा घंटा पूर्व ही स्टेशन पहुंच जाना चाहिए ताकि प्लेटफार्म आदि से संबंधित जानकारी आसानी से प्राप्त कर उस स्थान पर समय पर पहुंचा जा सके।
- प्रस्थान करने से पूर्व घर के सभी खिड़की, दरवाजे ध्यानपूर्वक बंद कर उन पर ताले लगा देना चाहिए व सभी परदे ठीक से खींच देने चाहिए। सुरक्षा की दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य है।
- गैस सिलेण्डर का रेग्युलेटर हटा देना चाहिए ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सके।
- सभी नल एवं बिजली के उपकरण ठीक प्रकार से बंद कर देने चाहिए।
- फ्रिज व टीवी के तार अवश्य निकाल देने चाहिए।
- अपने किसी विश्वसनीय पड़ोसी एवं रिश्तेदार अपने को जाने की सूचना व अपना सम्पर्क नम्बर अवश्य दें।
- दूध वाले, अखबार वाले एवं घरेलू नौकर को आवश्यक हिदायत अवश्य देना चाहिए कि आप कितने दिन के लिए जा रहे हैं।

- ❖ कोई भी ऐसी खाद्य सामग्री जो खराब हो सकती है, उसे घर में छोड़कर नहीं जाना चाहिए।
- ❖ अधिक दिनों तक यात्रा पर रहने का कार्यक्रम हो तो कपड़ों व किताबों की अलमारी में कीटनाशक अथवा फिनाइल की गोली रखकर जाना चाहिए।
- ❖ यात्रा के दौरान सुविधाजनक वस्त्रों का चयन करना चाहिए जिससे बैठने–उठने, चढ़ने–उतरने, चलने में असुविधा न हो।
- ❖ यात्रा करते समय ध्यान रखना चाहिए कि फालतू सामान नहीं रखें।
- ❖ अपने प्रत्येक सामान पर नाम, पते का लेबल अवश्य लगाना चाहिए, ताकि सामान खो जाने पर या दुर्घटना हो जाने पर सामान आसानी से ढूंढा जा सके।
- ❖ यात्रा के दौरान प्रयोग में आने वाले सामान को किसी छोटे बैग में अलग से रखना चाहिए जिससे समय पर वस्तु आराम से उपलब्ध हो सके।
- ❖ सूटकेस अथवा बैग इस प्रकार का लेना चाहिए जो सीट के नीचे आसानी से आ जाये, जिससे बार–बार सामान को ऊपर–नीचे रखने की असुविधा से बचा जा सके।
- ❖ यदि किसी पहाड़ी अथवा ठंडे प्रदेश की यात्रा पर जा रहे हैं तो आवश्यकतानुसार गर्म कपड़े, बरसाती व छाता अवश्य साथ ले जाना चाहिए।
- ❖ एक छोटे बैग में प्राथमिक चिकित्सा का कुछ सामान जैसे– रूई, पट्टियां, एंटीसेप्टिक क्रीम, बैंडेज, सरदर्द, पेटदर्द, कब्ज, दस्त की दवाएँ, विक्स, आयोडेक्स, मूव आदि भी रख लेना चाहिए जिससे किसी भी आपातकालीन स्थिति में इस्तेमाल किया जा सके।
- ❖ यात्रा के दौरान किसी भी अनजान, अपरिचित से कुछ भी खाद्य अथवा पेय पदार्थ लेकर या उसके द्वारा आफर करने पर ना खायें, क्योंकि कुछ लोग नशीला पदार्थ खिलाकर, सामान लेकर चम्पत हो जाते हैं। जिससे भारी समस्या का सामना करना पड़ता है और जान–माल का खतरा बढ़ जाता है।

**दरियादिली न दिखाएं**

इसी प्रकार किसी रेलवे स्टेशन अथवा बस अड्डे, जहां आप रूकते हैं, के आस पास किसी भिखारी या खाना मांगने वाले को न तो अपना बचा खाना दें और न ही खरीद कर खाने की वस्तु देने की दरियादिली दिखाएं, क्योंकि कई बार कुछ स्थानों पर यह देखने में आया है कि ऐसे भिखारी खाते ही गिर जाते हैं। उनके मुंह से झाग निकलने लगता है। तभी उसके साथी आकर आप पर उसे जहर देने का आरोप लगा कर पुलिस को बुलाने की धमकी देते हैं। आखिर में उसके इलाज के लिए आप से पांच से सात हजार रूपए की मांग करने लगते हैं। काफी देर आपको परेशान करने के बाद अंत में दो हजार दे कर आपको जाने को कहते हैं। इधर आपने दो हजार ढीले किए और उधर वह व्यक्ति उठ कर भाग जाता है। ऐसी स्थिति में कई बार पुलिस भी आपकी सहायता नहीं कर पाती है। अतः सफर में सावधान रहने की जरूरत है।

– श्री भीम सेन बस्सी
दिल्ली पुलिस के पूर्व आयुक्त –एक ब्लॉग में

- ❖ यदि रेल गाड़ी से सफर कर रहे हैं तो हर स्टेशन पर ट्रेन से उतरना नहीं चाहिए क्योंकि जल्दबाजी में चलती ट्रेन में चढ़न–उतरने से दुर्घटना होने की आशंका रहती है। इसके अलावाए ऐसा भी हो सकता है कि आप गाड़ी में चढ़ ही न पाएं। ऐसे में आप वहीं स्टेशन पर और आपका सामान या परिवार गाड़ी में चले जाए।
- ❖ यात्रा के दौरान किसी भी लावारिस वस्तु को न तो छुएँ, न ही उस तरफ से असावधान हों, इसकी सूचना तुरंत पुलिस अथवा गार्ड को दें।
- ❖ सफर में सहयात्री से बातचीत, हँसी–मजाक की बातें होना स्वाभाविक है किंतु निजी जीवन व व्यक्तिगत बातों से परहेज़ करना चाहिए।
- ❖ किसी पहाड़ी प्रदेश की यात्रा करते समय नदी अथवा झरने का पानी पीने से परहेज़ करना चाहिए। इस तरह का पानी पेट के लिए हानिकारक हो सकता है एवं सेहत के लिए खतरनाक हो सकता है।
- ❖ किसी अनजानी जगह, समुद्र, नदी, झील, नहर में बिना उसकी गहराई का ज्ञान प्राप्त किये तैरने अथवा नहाने से बचना चाहिए व किनारों के एकदम करीब खड़े होने से बचना चाहिए।
- ❖ प्रत्येक स्टेशन पर अमानती सामान–घर अवश्य होता है। आवश्यकता पड़ने पर अपना सामान वहीं जमा करा दें। इस प्रकार आप सामान से निश्चिंत होकर यात्रा का आनन्द उठा सकते हैं।

उपरोक्त कुछ मूलमंत्रों को अपना कर और यात्रा में संयम बरतकर तथा सहयात्रियों के सहयोग एवं अपने अच्छे व्यवहार से आप निश्चय ही सुखद, आनन्ददायक व ज्ञानवर्द्धक यात्रा का भरपूर मजा ले पायेंगे।

(स्त्रोत– भारत के मनोरम पर्यटन स्थल)।

कु. गरिमा, अवर श्रेणी लिपिक
होटल प्रबंध संस्थान,
लखनऊ

कम सामान–सफर आसान

भारत स्वच्छता मिशन है महाअभियान।
स्वच्छता मे दीजिए अपना योगदान।।

# श्री जगन्नाथ मंदिर

–राकेश कुमार

भारत के ओडिशा राज्य के तटवर्ती शहर पुरी में स्थित है श्री जगन्नाथ मन्दिर। जगन्नाथ शब्द का अर्थ जगत के स्वामी होता है। इनकी नगरी ही ''जगन्नाथपुरी'' या ''पुरी'' कहलाती है। इस मंदिर को चार धाम में से एक धाम माना जाता है। यह वैष्णव सम्प्रदाय का मंदिर है, जो भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण को समर्पित है।

## मंदिर का उद्‌गम

मंदिर के शिखर पर स्थित चक्र सुदर्शन चक्र का प्रतीक है और लाल ध्वज इस का प्रतीक है कि भगवान जगन्नाथ इस मंदिर के भीतर हैं।

गंग वंश के हाल ही में अन्वेषित ताम्र पत्रों से यह ज्ञात हुआ है, कि वर्तमान मंदिर के निर्माण कार्य को कलिंग राजा अनंतवर्मन चोड़गंग देव ने आरम्भ कराया था। मंदिर के जगमोहन और विमान भाग इनके शासन काल (1078–1148) में बने थे। फिर सन 1197 में जाकर उड़िया शासक अनंग भीम देव ने इस मंदिर को वर्तमान रूप दिया था।

मंदिर में जगन्नाथ अर्चना सन 1558 तक होती रही। इस वर्ष अफगान जनरल काला पहाड़ ने ओडिशा पर हमला किया और मूर्तियां तथा मंदिर के कई भाग ध्वंस कर दिए और पूजा बंद करा दी। राजा के आदेश के बिना ही भक्तों ने तीनों मूर्तियों को गुप्त रूप से चिलिका झील मे स्थित एक द्वीप मे रखवा दिया। बाद में, रामचंद्र देब के खुर्दा में स्वतंत्र राज्य स्थापित करने पर मंदिर और इसकी मूर्तियों की पुनर्स्थापना की गई।

## मंदिर से जुड़ी कथाएं

इस मंदिर के उद्‌गम से जुड़ी परंपरागत कथा के अनुसार, धर्मदेव नामक एक किसान को इंद्रनील या नीलमणि से निर्मित भगवान जगन्नाथ की मूल मूर्ति, एक अगरु वृक्ष के नीचे मिली थी। यह इतनी चकचौंध करने वाली थी, कि धर्मदेव ने इसे जमीन में छुपा दिया। एक दिन मालवा नरेश इंद्रद्‌युम्न को स्वप्न में यही मूति दिखाई दी थी। तब उसने कड़ी तपस्या की और तब भगवान विष्णु ने उसे बताया कि वह पुरी के समुद्र तट पर जाये और वहां उसे एक दारु (एक प्रकार की लकड़ी) का लठ्‌ठा मिलेगा। उसी लकड़ी से वह मूर्ति का निर्माण कराये। राजा ने ऐसा ही किया और उसे लकड़ी का लठ्‌ठा भी मिल गया। उसके बाद राजा ने देखा कि थोड़ी दूरी पर एक बूढ़ा बढ़ई बैठा हुआ मूर्तिया बना रहा था। राजा ने उसे पास बुलाया और उस लठ्‌ठे की लकड़ी से मूर्ति बनाने को कहा। परन्तु उस कारीगर ने यह शर्त रखी कि वे एक माह में मूर्ति तैयार कर देंगे, लेकिन तब तक वह एक कमरे में बंद रहेंगे और राजा या कोई भी व्यक्ति उस कमरे में प्रवेश नहीं करेगा। यदि किसी ने प्रवेश किया तो उसी दिन काम छोड़ कर चले जाएंगे। जब कई दिनों तक कमरे में से कोई आवाज नहीं आयी, तो उत्सुकता वश राजा ने कमरे के द्वार में झांका और खटखटाया, वह वृद्ध कारीगर ने द्वार खोला और बाहर आ कर राजा से कहा कि मूर्तियां अभी अपूर्ण हैं, उनके हाथ अभी नहीं बने थे। राजा के अफसोस करने पर, मूर्तिकार ने बताया, कि यह सब दैववश हुआ है और यह मूर्तियां ऐसे ही स्थापित होकर पूजी जायेंगीं और न जाने कहां चले गए। तब वही तीनों जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियां मंदिर में स्थापित की गयीं।

कुछ इतिहासकारों का विचार है कि उड़ीसा में सोमवंशी राज्य के काल में इस मंदिर के स्थान पर पूर्व में एक बौद्ध स्तूप होता था। उस स्तूप में गौतम बुद्ध का एक दांत रखा था। जिसे बाद में दसवीं शताब्दी के आसपास इसे श्रीलंका पहुंचा दिया गया। इस काल में बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने वैष्णव सम्प्रदाय को अपना लिया और जगन्नाथ अर्चना ने लोकप्रियता पाई।

महान सिख सम्राट महाराजा रणजीत सिंह ने इस मंदिर को प्रचुरमात्रा में स्वर्ण दान किया था। उन्होंने अपने अंतिम दिनों में यह वसीयत भी की थी कि विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा, जो विश्व में अब तक सबसे मूल्यवान और सबसे बड़ा हीरा है, इस मंदिर को दान कर दिया जाये। लेकिन यह सम्भव ना हो सका। क्योंकि उस समय तक, ब्रिटिश ने पंजाब पर अपना अधिकार करके, उनकी सभी शाही सम्पत्ति जब्त कर ली थी, अन्यथा कोहिनूर हीरा, भगवान जगन्नाथ के मुकुट की शान होता।

मंदिर का वृहत क्षेत्र 37,000 मीटर में फैला है और चारदीवारी से घिरा है। कलिंग शैली के मंदिर स्थापत्यकला और शिल्प के आश्चर्यजनक प्रयोग से परिपूर्ण, यह मंदिर, भारत के भव्यतम स्मारक स्थलों में से एक है।

मुख्य मंदिर वक्ररेखीय आकार का है, जिसके शिखर पर विष्णु का श्री सुदर्शन चक्र (आठ आरों का चक्र) मंडित है। इसे नीलचक्र भी कहते हैं। यह अष्टधातु से निर्मित है और अति पावन और पवित्र माना जाता है। मंदिर का मुख्य ढांचा एक 214 फुट (65मी) ऊंचे पाषाण चबूतरे पर बना है। इसके भीतर आंतरिक गर्भगृह में मुख्य देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं। यह भाग इसे घेरे हुए अन्य भागों की अपेक्षा अधिक वर्चस्व वाला है। इससे लगे घेरदार मंदिर की पिरामिडाकार छत और लगे हुए मण्डप, अट्टालिकारूपी मुख्य मंदिर के निकट होते हुए ऊंचे होते गये हैं।

मुख्य मढ़ी (भवन) एक 20 फुट (6.1मी) ऊंची दीवार से घिरा हुआ है तथा दूसरी दीवार मुख्य मंदिर को घेरती है। एक भव्य सोलह किनारों वाला एकाश्म स्तंभ, मुख्य द्वार के ठीक सामने स्थित है। इसका द्वार दो सिंहों द्वारा रक्षित हैं

भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा, इस मंदिर के मुख्य देव हैं। इनकी मूर्तियां, एक रत्न मण्डित पाषाण चबूतरे पर गर्भ गृह में स्थापित हैं। इतिहास अनुसार इन मूर्तियों की अर्चना मंदिर निर्माण से कहीं पहले से की जाती रही है।

यहां दैनिक पूजा–अर्चनाएं होती हैं। यहां कई वार्षिक त्यौहार भी आयोजित होते हैं, जिनमें हजारों लोग भाग लेते हैं। इनमें सर्वाधिक महत्व का त्यौहार है, रथ यात्रा, जो आषाढ शुक्ल पक्ष की द्वितीया को, तदनुसार लगभग जून या जुलाई माह में आयोजित होता है। इस उत्सव में तीनों मूर्तियों को अति भव्य और विशाल रथों में सुसज्जित कर, यात्रा पर निकालते हैं।

इस मंदिर का वार्षिक रथ यात्राा उत्सव प्रसिद्ध है। इसमें मंदिर के तीनों मुख्य देवता, भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भ्राता बलभद्र और भगिनी सुभद्रा तीनों, तीन अलग–अलग भव्य और सुसज्जित रथों में विराजमान होकर नगर की यात्रा को निकलते हैं। मध्य–काल से ही यह उत्सव अतीव हर्षोल्लस के साथ मनाया जाता है। इसके साथ ही यह उत्सव भारत के ढेरों वैष्णव कृष्ण मंदिरों में मनाया जाता है, एवं यात्रा निकाली जाती है। यह मंदिर वैष्णव परंपराओं और संत रामानंद से जुड़ा हुआ है। यह गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय के लिये खास महत्व रखता है। इस पंथ के संस्थापक श्री चैतन्य महाप्रभु भगवान की ओर आकर्षित हुए थे और कई वर्षों तक पुरी में रहे थे।

आधुनिक काल से ही यह मंदिर सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों और प्रकार्यों में काफी व्यस्त माना जाता है। जगन्नाथ मंदिर का एक बड़ा आकर्षण यहां की रसोई है। यह रसोई भारत की सबसे बड़ी रसोई के रूप में जानी जाती है। इस विशाल रसोई में भगवान को चढाने वाले महाप्रसाद को तैयार करने के लिए 500 रसोईए तथा उनके 300 सहयोगी काम करते है।

इस मंदिर में विदेशी मूल के पर्यटकों का प्रवेश वर्जित है। लेकिन उत्सवों के अवसर पर वे निकटवर्ती रघुनंदन पुस्तकालय की ऊंची छत से मंदिर के अहाते और अन्य आयोजनों के दृश्य का अवलोकन कर सकते हैं। इसके कई प्रमाण हैं कि यह प्रतिबंध, कई विदेशियों द्वारा मंदिर और निकटवर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ और श्रेणिगत हमलों के कारण लगाये गये हैं। बौद्ध एवं जैन लोग मंदिर में आ सकते हैं। मंदिर ने धीरे–धीरे, गैर–भारतीय मूल के लेकिन हिन्दू लोगों का प्रवेश क्षेत्र में स्वीकार करना आरम्भ किया है। एक बार बाली द्वीप के तीन हिन्दू लोगों को प्रवेश वर्जित कर दिया गया था, जबकि बाली की 90% जनसंख्या हिन्दू है। तब निवेदन करने पर भविष्य के लिए में स्वीकार्य हो गया।

**कैसे जाएं** : पुरी का निकटतम हवाई अड्डा भुबनेश्वर है जो वहो से लगभग 70 किलोमीटर की दूरी पर है। वहां से टैक्सियां मिल जाती है। पर्यटक बसें भी उपलब्ध रहती है जो पुरी जाने से पहले धौली, पीपली (हस्तशित्प बाजार), कोणार्क और चन्द्रभागा समुद्र तट पर रूकते हुए पुरी जाती हैं। भुबनेश्वर शहर से भी टैक्सियां और बसें मिलती हैं जो सीधे ही पुरी ले जाती हैं। भुबनेश्वर बस अड्डे से हर घंटे के अंतराल पर श्री जगन्नाथ ट्रस्ट की बसें भी मिलती है जिनका किराया भी बहुत कम होता है। भुबनेश्वर देश के लगभग ही हिस्से से रेलमार्ग से जुड़ा है। कुछ रेलगाड़ियां सीधे पुरी के लिए भी उपलब्ध है।

भगवान जगरनाथ की विशेषता है कि मंदिर के ऊपर स्थापित ध्वज सदैव हवा के विपरीत दिशा में लहराता है। एक और आश्चर्य पुरी में किसी भी स्थान से आप मंदिर के शीर्ष पर लगे सुदर्शन चक्र को देखेंगे तो वह आपको सदैव अपने सामने ही लगा दिखेगा।



सहायक
पर्यटन मंत्रालय

# शुभ कामनाएं

**अक्तूबर से दिसम्बर, 2016 के दौरान पर्यटन मंत्रालय से सेवानिवृत्त हुए अधिकारी एवं कर्मचारी**

| क्र.सं. | नाम | पद | माह |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री एम. गंगन | स्टाफ कार ड्राईवर | अक्तूबर, 2016 |
| 2. | श्री एस.वी. सिंह | सहायक महानिदेशक | दिसम्बर, 2016 |
| 3. | श्री बांके राम | डीपीए | दिसम्बर, 2016 |
| 4. | श्रीमती सरला देवी | सहायक | दिसम्बर, 2016 |
| 5. | श्रीमती स्वाति दत्ता | डीईओ | दिसम्बर, 2016 |

# पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा 03 अक्टूबर, 2016 को नई दिल्ली में उत्तर प्रदेश और बिहार सरकार के सहयोग से आयोजित पांचवें अंतरराष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन–2016 में।

उत्तर प्रदेश के सारनाथ में 04 अक्टूबर, 2016 को अंतरराष्ट्रीय बौ सम्मेलन–2016 के खुले सत्र के दौरान गणमान्य अतिथिगण।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा उत्तर प्रदेश के सारनाथ में 04 अक्टूबर, 2016 को अंतरराष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन–2016 के खुले अधिवेशन में। इस मौके पर उत्तर प्रदेश के पर्यटन मंत्री श्री ओम प्रकाश तथा केंद्रीय पर्यटन सचिव श्री विनोद जुत्शी भी उपस्थित हैं।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा 04 अक्टूबर, 2016 को नई दिल्ली में बीआईटीबी (भारत अंतरराष्ट्रीय पर्यटन बाजार) के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा, जम्मू एवं कश्मीर की मुख्यमंत्री सुश्री महबूबा मुफ्ती तथा अन्य गणमान्य लोग 04 अक्टूबर, 2016 को नई दिल्ली में बीआईटीबी (भारत अंतरराष्ट्रीय पर्यटन बाजार) के उद्घाटन समारोह में।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा 24 अक्तूबर, 2016 को नई दिल्ली में फिक्की द्वारा आयोजित 'भारत– जापान पर्यटन कार्यक्रम' के उद्घाटन समारोह में।

न्यूजीलैंड के प्रधान मंत्री जॉन की तथा पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा– 27 अक्तूबर, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित न्यूजीलैंड पर्यटन संवर्धन कार्यक्रम के अवसर पर।

07 नवम्बर, 2016 को ब्रिटेन के लंदन में आयोजित किए गए वर्ल्ड ट्रवेल मार्ट के अवसर पर पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा, सचिव श्री विनोद जुत्शी तथा मंत्रालय के अन्य अतिथि।

10 नवम्बर, 2016 को गुजरात के वाड नगर में तानारिरि उत्सव, 2016 में 640 वादकों ने एक साथ हारमोनियम वादन का कार्यक्रम प्रस्तुत कर विश्व रिकार्ड बनाया है। इस अवसर पर पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

14 नवम्बर, 2016 को प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित 36वें भारत अंतर्राष्ट्रीय मेला (2016) में पर्यटन मंत्रालय के अतुल्य भारत स्टैंड का पर्यटन सचिव श्री विनोद जुत्शी ने दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन किया।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा 13 दिसम्बर, 2016 को स्वदेश दर्शन योजना के तहत उत्तर प्रदेश के बागपत में छः पर्यटन परियोजनाओं का शिलान्यास करते हुए। इस अवसर पर डॉ. सत्यपाल सिंह संसद सदस्य भी उपस्थित हैं।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा डा. सत्यपाल सिंह, सांसद तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति। उत्तर प्रदेश के बागपत में 13.12.2016 को पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत छः पर्यटन परियोजनाओं के शिलान्यास समारोह में

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा नई दिल्ली में **'विश्व पर्यटन दिवस'** पर भारत पर्यटन द्वारा आयोजित एक समारोह में पर्यटन मंत्रालय के कार्यालय और संस्थानों की सर्वश्रेष्ठ रूप से देखरेख करने के लिए विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए।

## *छपते छपते ...*

**पर्यटन के क्षेत्र में भारत विश्व में 40वें स्थान पर**

विश्व आर्थिक फोरम के यात्रा एवं पर्यटन प्रतिस्पर्धी सूचकांक (टीटीसीआई)–2015 में भारत की रैंकिंग 65वें स्थान से बढ़कर 52वें स्थान पर हो गई थीं। भारत 12 स्थान और ऊपर आया है तथा अब 2017 में 40वें स्थान पर हैं। कुल मिलाकर भारत ने पिछले तीन वर्षों में अपनी रैंकिंग में 25 स्थान तक संचयी रूप से सुधार किया है जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

रिपोर्ट अगले अंक में . . .

विट्ठल मंदिर हम्पी

## अगले अंक के आकर्षण

पैराग्लाइडिंग बिलिंग हिमाचल प्रदेश

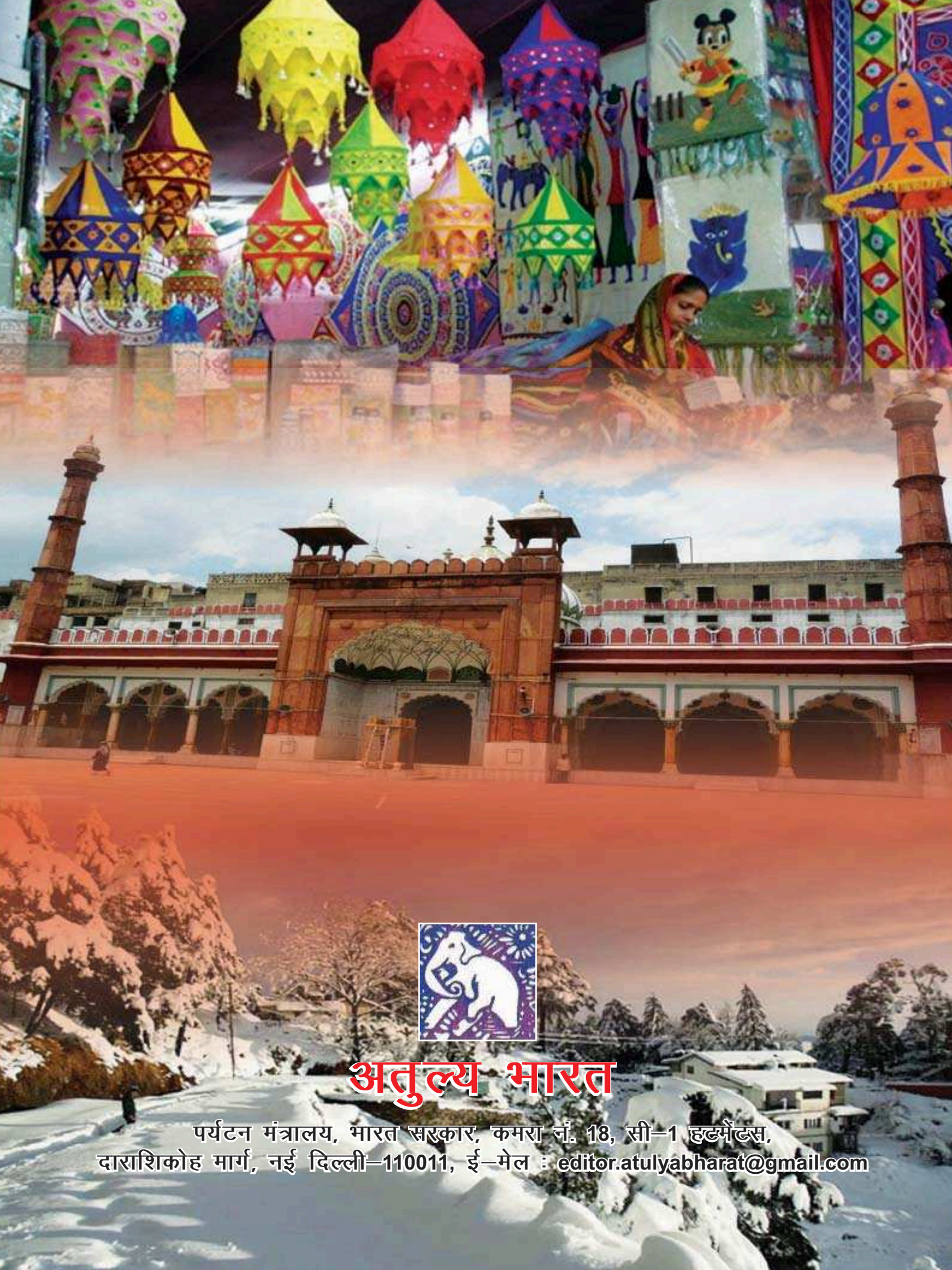

# अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं. 18, सी–1 हट्मेंट्स,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com